Kabit by Bhai Gurdaas

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बाणी भाई गुरदास भले की ॥

सोरठा: आदि पुरख आदेस एनम स्री सतिगुर चरन ॥ (१-१)
घट घट का परवेस इेक अनेक बिबेक ससि ॥ (१-२)
दोहरा: एनम स्री सतिगुर चरन आदि पुरख आदेसु ॥ (१-३)
इेक अनेक बिबेक ससि घट घट का परवेस ॥ (१-४)
छंद: घट घट का परवेस सेस पहि कहत न आवै ॥ (१-५)
नेत नेत कहि नेत बेदु बंदीजनु गावै ॥ (१-६)
आदि मधि अरु अतु हुते हुत है पुनि होनम ॥ (१-७)
आदि पुरख आदेस चरन स्रै सतिगुर एनम ॥१॥ (१-८)

सोरठा: अबिगति अलख अभेव अगम ओर अनंत गुर ॥ (२-१)
सतिगुर नानक देव पारब्रहम पूरन ब्रहम ॥ (२-२)
दोहरा: अगम अपार अनंत गुर अबिगत अलख अभेव ॥ (२-३)
पारब्रहम पूरन ब्रहम सतिगुर नानकदेव ॥ (२-४)
छंद: सतिगुर नानकदेव देव देवी सभ धिआवहि ॥ (२-५)
नाद बाद बिसमाद राग रागनि गुन गावहि ॥ (२-६)
सुन्न समाधि अगाधि साध संगति सपरंपर ॥ (२-७)
अबिगति अलख अभेव अगम अगमिति अपरंपर ॥२॥ (२-८)

सोरठा: जगमग जोति सरूप परम जोति मिल जोति महि ॥ (३-१)
अदभुत अतहि उनूप परम ततु ततहि मिलिए ॥ (३-२)
दोहरा: परम जोति मिलि जोति महि जगमग जोति सरूप ॥ (३-३)
परम तत ततहि मिलिए अदभुत अत ही अनूप ॥ (३-४)
छंद: अदभुत अति ही अनूप रूप पारस कै पारस ॥ (३-५)
गुर अंगद मिलि अंग संग मिलि संग उधारस ॥ (३-६)
अकल कला भरपूरि सूत्र गति एतिपोति महि ॥ (३-७)
जगमग जोति सरूप जोति मिलि जोति जोति महि ॥३॥ (३-८)

सोरठा: अंमृत दृसटि निवास अंमृत बचन अनहद सबद ॥ (४-१)
सतिगुर अमर प्रगास मिलि अंमृत अंमृत भइे ॥ (४-२)
दोहरा: अंमृत बचन अनहद सबद अंमृत दृसटि निवास ॥ (४-३)
मिलि अंमृत अंमृत भइे सतिगुर अमर प्रगास ॥ (४-४)
छंद: सतिगुर अमर प्रगास तास चरनाम्रत पावै ॥ (४-५)

काम नाम निहिकाम परमपद सहज समावै ॥ (४-६)
गुरमुखि संधि सुगंध साध संगति निज आसन ॥ (४-७)
अंमृत दृसटि निवास अंमृत मुख बचन प्रगासन ॥४॥ (४-८)

सोरठा: ब्रहमासन बिस्राम गुर भइे गुरमुखि संधि मिलि ॥ (५-१)
गुरमुखि रमता राम राम नाम गुरमुखि भइे ॥ (५-२)
देहरा: गुर भइे गुरसिख संध मिलि ब्रहमासन बिस्राम ॥ (५-३)
राम नाम गुरमुखि भइे गुरमुखि रमता राम ॥ (५-४)
छंद: गुरमुखि रमता राम नाम गुरमुखि प्रगटाइिए ॥ (५-५)
सबद सुरति गुरु गिआन धिआन गुर गुरू कहाइिए ॥ (५-६)
दीप जोति मिलि दीप जोति जगमग अंतरि उर ॥ (५-७)
गुरमुखि रमता राम संध गुरमुखि मिलि भइे गुर ॥५॥ (५-८)

सोरठा: आदि अंति बिसमाद फल द्रुम गुर सिख संध गति ॥ (६-१)
आदि परम परमादि अंत अनंत न जानिअै ॥ (६-२)
दोहरा: फल द्रुम गुरसिख संध गति आदि अंत बिसमादि ॥ (६-३)
अंत अनंत न जानीअै आद परम परमादि ॥ (६-४)
छंद: आदि परम परमादि नाद मिलि नाद सबद धुनि ॥ (६-५)
सलिलहि सलिल समाइि नाद सरता सागर सुनि ॥ (६-६)
नरपति सुत नृप होत जोति गुरमुखि गुन गुरजन ॥ (६-७)
राम नाम प्रसादि भइे गुरु ते गुर अरजन ॥६॥ (६-८)

सोरठा: पूरन ब्रहम बिबेक आपा आप प्रगास हुइि ॥ (७-१)
नाम दोइि प्रभ इेक गुर गोबिंद बखानीअै ॥ (७-२)
दोहरा: आपा आप प्रगास होइि पूरन ब्रहम बिबेक ॥ (७-३)
गुर गोबिंद बखानीअै नाम दोइि प्रभ इेक ॥ (७-४)
छंद: नाम दोइि प्रभ इेक टेक गुरमुखि ठहराई ॥ (७-५)
आदि भइे गुर नाम दुतीआ गोबिंद बडाई ॥ (७-६)
हरि गुर हरिगोबिंद रचन रचि थापि एथापन ॥ (७-७)
पूरन ब्रहम बिबेक प्रगट हुइि आपा आपन ॥७॥ (७-८)

सोरठा: बिसमादहि बिसमाद असचरजहि असचरज गति ॥ (८-१)
आदि पुरख परमादि अदभुत परमदभुत भइे ॥ (८-२)
दोहरा: असचरजहि असचरज गति बिसमादहि बिसमाद ॥ (८-३)
अदभुत परमदभुत भइे आदि पुरख परमादि ॥ (८-४)
छंद: आदि पुरख परमादि स्रादरस गंध अगोचर ॥ (८-५)
दृसटि दरस असपरस सुरति मति सबद मनोचर ॥ (८-६)
लोग बेद गति गिआन लखे नहीं अलख अभेवा ॥ (८-७)
नेत नेत करि नमो नमो नम ससि गुरदेवा ॥८॥ (८-८)

कबित (९-१)

दरसन देखत ही सुधि की न सुधि रही (९-२)
बुधि की न बुधि रही मति मै न मति है । (९-३)
सुरति मै न सुरति अउ धिआन मै न धिआनु रहिए (९-४)
गिआन मै न गिआन रहिए गति मै न गति है । (९-५)
धीरजु को धीरजु गरब को गरबु गइिए (९-६)
रति मै न रति रही पति रति पति मै ॥ (९-७)
अद्भुत परमद्भुत बिसमै बिसम (९-८)
अस्चरजै असचरज अति अति मै ॥९॥ (९-९)

दसम सथान के समानि कउन भउन कहए (१०-१)
गुरमुखि पावै सु तउ अनत न पावई । (१०-२)
उनमनी जोति पटंतर दीजै कउन जोति (१०-३)
दइिआ कै दिखावै जाही ताही बनि आवई । (१०-४)
अनहद् नाद् समसरि नाद् बाद् कएन (१०-५)
स्रीगुर सुनावे जाहि सोई लिव लावई । (१०-६)
निझर अपार धार तुलि न अंमृत रस (१०-७)
अपिए पीआवै जाहि ताही मै समावई ॥१०॥ (१०-८)

गुर सिख संधि मिले बीस इिकईस इसि (११-१)
इित ते उलंघि उत जाइि ठहरावई । (११-२)
चरम दृसटि मूद् पेखै दिब दृसटि कै (११-३)
जगमग जोति एुनमनी सुध पावई । (११-४)
सुरति संकोचत ही बजर कपाट खोलि (११-५)
नाद् बाद् परै अनहत लिव लावई । (११-६)
बचन बिसरजत अनरस रहित हुइि (११-७)
निझर अपार धार अपिइ पीआवई ॥११॥ (११-८)

जउ लउ अनरस बस तउ लउ नही प्रेम रसु (१२-१)
जउ लउ अनरस आपा आपु नही देखीऐ । (१२-२)
जउ लउ आन गिआन तउ लउ नही अधिआतम गिआन (१२-३)
जउ लउ नाद् बाद् न अनाहद् बिसेखीऐ । (१२-४)
जउ लउ अह्मबुधि सुधि होइि न अंतरि गति (१२-५)
जउ लउ न लखावै तउ लउ अलख न लेखीऐ । (१२-६)
सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (१२-७)
इेक ही अनेकमेक इेक इेक भेखीऐ ॥१२॥ (१२-८)

नाना मिसटान पान बहु बिंजनादि स्वाद (१३-१)
सीचत सरब रस रसना कहाई है । (१३-२)
दृसटि दरस अरु सबद् सुरति लिव (१३-३)
गिआन धिआन सिमरन अमित बडाई है । (१३-४)
सकल सुरति असपरस अउ राग नाद (१३-५)

बुधि बल बचन बिबेक टेक पाई है । (१३-६)
गुरमति सतिनाम सिमरत सफल हुइ (१३-७)
बोलत मधुर धुनि सुन्न सुखदाई है ॥१३॥ (१३-८)

प्रेमरस बसि हुइ पतंग संगम न जानै (१४-१)
बिरह बिछोह मीन हुइ न मरि जाने है । (१४-२)
दरस धिआन जोति मै न हुइ जोती सरूप (१४-३)
चरन बिमुख होइ प्रान ठहराने है । (१४-४)
मिलि बिछरत गति प्रेम न बिरह जानी (१४-५)
मीन अउ पतंग मोहि देखत लजाने है । (१४-६)
मानस जनम ध्रिगु धंनि है तृगद जोनि (१४-७)
कपट सनेह देह नरक न माने है ॥१४॥ (१४-८)

गुरमुखि सुखफल स्वाद बिसमाद अति (१५-१)
अकथ कथा बिनोद कहत न आवई । (१५-२)
गुरमखि सुखफल गंध परमदभुत (१५-३)
सीतल कोमल परसत बनि आवई । (१५-४)
गुरमुखि सुखफल महिमा अगाधि बोध (१५-५)
गुर सिख संध मिलि अलख लखावई । (१५-६)
गुरमुखि सुखफल अंगि अंगि कोट सोभा (१५-७)
माइआ कै दिखावै सो तो अनत न धावई ॥१५॥ (१५-८)

उलटि पवन मन मीन की चपल गति (१६-१)
सतिगुर परचे परमपद पाइे है । (१६-२)
सूरसर सोखि पोखि सोमसर पूरन कै (१६-३)
बंधन दे मृतसर अपीआँ पिआइे है । (१६-४)
अजरहि जारि मारि अमरहि भ्राति छाडि (१६-५)
असथिर कंध ह्मस अनत न धाइे है । (१६-६)
आदै आद नादै नाद सललै सलिल मिलि (१६-७)
ब्रहमै ब्रहम मिलि सहज समाइे है ॥१६॥ (१६-८)

चिरंकाल मानस जनम निरमोल पाइे (१७-१)
सफल जनम गुर चरन सरन कै । (१७-२)
लोचन अमोल गुर दरस अमोल देखे (१७-३)
स्रवन अमोल गुर बचन धरन कै । (१७-४)
नासका अमोल चरनारबिंद बासना कै (१७-५)
रसना अमोल गुरमंत्र सिमरन कै ॥ (१७-६)
हसन अमोल गुरदेव सेव कै सफल (१७-७)
चरन अमोल परदछना करन कै ॥१७॥ (१७-८)

दरस धिआन दिबि दृसटि प्रगास भई (१८-१)

करुना कटाछ दिबि देह परवान है । (१८-२)
सबद सुरति लिव बजर कपाट खुले (१८-३)
प्रेम रस रसना कै अंमृत निधान है । (१८-४)
चरन कमल मकरंद बासना सुबास हसत (१८-५)
पूजा प्रनाम सफल सु गिआन है । (१८-६)
अंग अंग बिसम स्रबंग मै समाइि भइे (१८-७)
मन मनसा थकत ब्रहम धिआन है ॥१८॥ (१८-८)

गुरमुखि सुखफल अति असचरज मै (१९-१)
हेरत हिराने आन धिआन बिसराने है । (१९-२)
गुरमुखि सुखफल गंध रस बिसम हुइि (१९-३)
अनरस बासना बिलास न हिताने है । (१९-४)
गुरमुखि सुखफल अदभुत असथान (१९-५)
मृत मंडल असथल न लुभाने है । (१९-६)
गुरमुखि सुखफल संगति मिलाप देख (१९-७)
आन गिआन धिआन सभ निरस करि जाने है ॥१९॥ (१९-८)

गुरमुखि सुखफल दइिआ कै दिखावै जाहि (२०-१)
ताहि आन रूप रंग देखे नाही भावई । (२०-२)
गुरमुखि सुखफल मइिआ कै चखावै जाहि (२०-३)
ताहि अनरस नहीं रसना हितावही । (२०-४)
गुरमुखि सुखफल अगहु गहावै जाहि (२०-५)
सरब निधान परसन कउ न धावई । (२०-६)
गुरमुखि सुखफल अलख लखावै जाहि (२०-७)
अकथ कथा बिनोद वाही बनि आवई ॥२०॥ (२०-८)

सिध नाथ जोगी जोग धिआन मै न आन सके (२१-१)
बेद पाठ करि ब्रहमादिक न जाने है । (२१-२)
अधिातम गिआन कै न सिव सनकादि पाइे (२१-३)
जग भोग मै न इंद्रादिक पहिचाने है । (२१-४)
नउम सिमरन कै सेखादिक न संख जानी (२१-५)
ब्रहमचरज नारदादक हिराने है । (२१-६)
नाना अवतार कै अपार को न पार पाइिए (२१-७)
पूरन ब्रहम गुरसिख मन माने है ॥२१॥ (२१-८)

गुर उपदेस रिदै निवास जासु (२२-१)
धिआन गुर मुरति कै पूरन ब्रहम है । (२२-२)
गुरमुखि सबद सुरति उनमान गिआन (२२-३)
सहज सुभाइि सरबातम कै सम है ॥ (२२-४)
हउमै तिआगि तिआगी बिसमाद को बैरागी भइे (२२-५)
मन एिनमनलिव गंमिता अगंम है । (२२-६)

सूखम असथूल मूल इेक ही अनेक मेक (२२-७)
जीवन मुकति नमो नमो नमो नम है ॥२२ ॥ (२२-८)

दरसन जोति न जोती सरूप हुइि पतंग (२३-१)
सबद सुरति मृग जुगति न जानी है । (२३-२)
चरन कमल मकरंद न मधुप गति (२३-३)
बिरह बिएग हुइि न मीन मरिजानै है । (२३-४)
इेक इेक टेक न टरत है तृगद जोनि (२३-५)
चातुर चतर गुन होइि न हिरानै है । (२३-६)
पाहन कठोर सतिगुर सुख सागर मै (२३-७)
सुनि मम नाम जम नरक लजानै है ॥२३॥ (२३-८)

गुरमति सति करि चंचल अचल भइे (२४-१)
महा मल मूत्र धारी निरमल कीने है । (२४-२)
गुरमति सति करि जोनि कौ अजोनि भइे (२४-३)
काल सै अकाल कै अमर पद दीने है । (२४-४)
गुरमति सति करि हउमै खोइि होइि रेन (२४-५)
तृकुटी तृबेनी पारि आपा आप चीने है । (२४-६)
गुरमति सति करि बरन अबरन भइे (२४-७)
भै भ्रम निवारि डारि निरभै को लीने है ॥२४॥ (२४-८)

गुरमति सति करि अधम असाध साध (२५-१)
गुरमति सति करि जंत संत नाम है । (२५-२)
गुरमति सति करि अबिबेकी हुइि बिबेकी (२५-३)
गुरमति सति करि काम निहकाम है । (२५-४)
गुरमति सति करि अगिआनी ब्रहमगिआनी (२५-५)
गुरमति सति करि सहज बिस्राम है । (२५-६)
गुरमति सति करि जीवन मुकति भइे (२५-७)
गुरमति सति करि निहचल धाम है ॥२५॥ (२५-८)

गुरमति सति करि बैर निरबैर भइे (२६-१)
पूरन ब्रहम गुर सरब मै जाने है । (२६-२)
गुरमति सति करि भेद निरभेद भइे (२६-३)
दुबिधा बिधि निखेध खेद बिनासने है। (२६-४)
गुरमति सति करि बाइिस परमह्मस (२६-५)
गिआन अंस बंस निरगंध गंध ठाने है । (२६-६)
गुरमति सति करि करम भरम खोइे (२६-७)
आसा मैनिरास हुइि बिस्वास उर आने है॥२६॥ (२६-८)

गुरमति सति करि सिंबल सफल भइे (२७-१)
गुरमति सति करि बाँस मै सुगंध है । (२७-२)

गुरमति सति करि कंचन भइे मनूर (२७-३)
गुरमति सति करि परखत अंध है । (२७-४)
गुरमति सति करि कालकूट अंमृत हुइि (२७-५)
काल मै अकाल भइे असथिर कंध है । (२७-६)
गुरमति सति करि जीवनमुकत भइे (२७-७)
माइिआ मै उदास बास बंध निरबंध है ॥२७॥ (२७-८)

सबद सुरति लिव गुर सिख संध मिले (२८-१)
ससि घरि सूरि पूर निज घरि आइे है । (२८-२)
एलटि पवन मन मीन तृबैनी प्रसंग (२८-३)
तृकुटी उलंघि सुख सागर समाइे है । (२८-४)
तृगुन अतीत चतुरथ पद गंमिता कै (२८-५)
निझर अपार धार अमीअ चुआइै है । (२८-६)
चकई चकोर मोर चातृक अनंदमई (२८-७)
कदली कमल बिमल जल छाइे है ॥२८॥ (२८-८)

सबद सुरति लिव गुरसिख संध मिले (२९-१)
पंच परपंच मिटे पंच परधाने है । (२९-२)
भागै भै भरम भेद काल अउ करम खेद (२९-३)
लोग बेद उलंघि उदोत गुर गिआने है । (२९-४)
माइिआ अउ ब्रहम सम दसम दुआर पारि (२९-५)
अनहद रुनझुन बाजत नीसाने है । (२९-६)
उनमन मगन गगन जगमग जोति (२९-७)
निझर अपार धार परम निधाने है ॥२९॥ (२९-८)

गृह महि गृहसती हुइि पाइिए न सहज घरि (३०-१)
बनि बनवास न उदास डल पाइिए है । (३०-२)
पड़ि पड़ि पंडित न अकथ कथा बिचारी (३०-३)
सिधासन कै न निज आसन दिड़ाइिए है । (३०-४)
जोग धिआन धारन कै नाथन देखे न नाथ (३०-५)
जगि भोग पूजा कै न अगहु गहाइिए है । (३०-६)
देवी देव सेवकै न अह्मेव टेव टारी (३०-७)
अलख अभेव गुरदेव समझाइिए है ॥३०॥ (३०-८)

तृगुन अतीत चतुरथ गुन गंमिता कै (३१-१)
पंच तत उलंघि परम ततवासी है । (३१-२)
खट रस तिआगि प्रेम रस कउ प्रापति भइे (३१-३)
पूर सुरि सपत अनहद अभिआसी है । (३१-४)
असट सिधाँत भेद नाथन कै नाथ भइे (३१-५)
दसम सथल सुख सागर बिलासी है । (३१-६)
उनमन मगन गगन हुइि निझर झरै (३१-७)

सहज समाधि गुरु परचे उदासी है ॥३१॥ (३१-८)

दुबिधा निवारि अबरन हुइ बरन बिखै (३२-१)
पांच परपंच न दरस अदरस है । (३२-२)
परम पारस गुर परसि पारस भइे (३२-३)
कनिक अनिक धातु आपा अपरस है । (३२-४)
नवदुआर दुआर पारिब्रमासन सिंघासन मै (३२-५)
निझर झरनि रुचत न अनरस है । (३२-६)
गुर सिख संधि मिले बीस इिकईस ईस (३२-७)
अनहद गद गद अभर भरस है ॥३२॥ (३२-८)

चरन कमल भजि कमल प्रगास भइे (३३-१)
दरस दरस समदरस दिखाइे है । (३३-२)
सबद सुरति अनहद लिवलीन भइे (३३-३)
एनमन मगन गगन पुर छाइे है । (३३-४)
प्रेमरस बसि हुइ बिसम बिदेह भइे (३३-५)
अति असचरज मो हेरत हिराइे है । (३३-६)
गुरमुखि सुखफल महिमा अगाधि बोधि (३३-७)
अकथ कथा बिनोद कहत न आइे है ॥३३॥ (३३-८)

दुरमति मेटि गुरमति हिरदै प्रगासी (३४-१)
खोइे है अगिआन जाने ब्रहम गिआन है। (३४-२)
दरस धिआन आन धिआन बिसमरन कै (३४-३)
सबद सुरति मोनि ब्रत परवाने है । (३४-४)
प्रेमरस रसिक होिइ अनरस रहत हुइ (३४-५)
जोती मै जोति सरूप सोह्म सुरताने है । (३४-६)
गुर सिख संध मिले बीस इिकईस ईस (३४-७)
पूरन बिबेक टेक इेक हीये आने है ।३४॥ (३४-८)

रोम रोम कोटि ब्रहिमाँड को निवास जासु (३५-१)
मानस अउतार धार दरस दिखआइे है । (३५-२)
जाके एअंकार कै अकार है नाना प्रकार (३५-३)
स्रीमुख सबद गुर सिखनु सुनाइे है । (३५-४)
जग भोग नईबेद जगत भगत जाहि (३५-५)
असन बसन गुरसिखन लडाइे है । (३५-६)
निगम सेखादि कबत नेत नेत करि (३५-७)
पूरम ब्रहम गुरसिखनु लखाइे है ॥३५॥ (३५-८)

निरगुन सरगुन कै अलख अबिगत गति (३६-१)
पूरन ब्रहम गुर रूप प्रगटाइे है । (३६-२)
सरगुन स्री गुर दरस कै धिआन रूप (३६-३)

अकुल अकाल गुरसिखनु दिखाइे है । (३६-४)
निरगुन स्री गुर सबद अनहद धुनि (३६-५)
सबदबेधी गुर सिखनु सुनाइे है । (३६-६)
चरन कमल मकरंद निहकाम धाम (३६-७)
गुरुसिख मधुकर गति लपटाइे है ॥३६॥ (३६-८)

पूरन ब्रहम गुर बेल हुइि चंबेली गति (३७-१)
मूल साखा पत्र करि बिबिध बिथार है। (३७-२)
गुरसिख पुहप सुबास निज रूप तामै (३७-३)
प्रगट हुइि करत संसार को उधार है । (३७-४)
तिल मिलि बासना सुबास को निवास करि (३७-५)
आपा खोइि होइि है फुलेल महकार है । (३७-६)
गुरमुखि मारग मै पतित पुनीत रीति (३७-७)
संसारी हुइि निरंकारी परउपकार है ॥३७॥ (३७-८)

पूरन ब्रहम गुर बिरख बिथार धार (३८-१)
मुलखंद साखा पत्र अनिक प्रकार है । (३८-२)
मैता निज रूप गुरसिख फल को प्रगास (३८-३)
बासना सुबास अउ स्वाद उपकार है । (३८-४)
चरन कमल मकरंद रस रसिक हुइि (३८-५)
चाखे चरनांम्रत संसार को उधार है । (३८-६)
गुरमुखि मारग महातम अकथ कथा (३८-७)
नेत नेत नेत नमो नमो नमसकार है ॥३८॥ (३८-८)

बरन बरन बहु बरन गोबंस जैसे (३९-१)
इेको ही बदन दुहे दूध जग जानीअै । (३९-२)
अनिक प्रकार फल फूल कै बनासपति (३९-३)
इेकै रूप अगनि सरब मै समानीअै । (३९-४)
चतुर बरन पान चूना अउ सुपारी काथा (३९-५)
आपा खोइि मिलत अनूप रूप ठानीअै । (३९-६)
लोगन मै लोगाचार गुरमुखि इेकंकार (३९-७)
सबद सुरति उनमन उनमानीअै ॥३९॥ (३९-८)

सींचत सलिल बहु बरन बनासपती (४०-१)
चंदन सुबास इेकै चंदन बखानीइै । (४०-२)
परबत बिखै उतपत हुइि असट धातु (४०-३)
पारस परसि इेकै कंचन कै जानीअै । (४०-४)
निस अंधकार तारा मंडल चमतकार (४०-५)
दिन दिनकर जोति इेकै परवानीअै । (४०-६)
लोगन मै लोगाचार गुरमुखि इेकंकार (४०-७)
सबद सुरति उनमन उनमानीअै ॥४०॥ (४०-८)

जैसे कुलाबधू गुरजन मै घूघटि पट (४१-१)
सिहजा संजोग समै अंतरु न प्रीअ सै । (४१-२)
जैसे मनि अछत कुटंब ही सहित अहि (४१-३)
बंकत न सूधो बिल पैसत हुइ जीअ सै । (४१-४)
माता पिता अछत न बोलै सुत बनिता सै, (४१-५)
पाछे कै दै सरबसु मोह सुत त्रीअ सै । (४१-६)
लोगन मै लोगाचार गुरमुखि इेकंकार (४१-७)
सबद सुरति उनमन मन हीअ सै ॥४१॥ (४१-८)

जोग बिखै भोग अरु भोग बिखै जोग जति (४२-१)
गुरमुखि पंथ जोग भोग सै अतीत है । (४२-२)
गिआन बिखै धिआन अरु धिआन बिखै बेधे गिआन (४२-३)
गुरमति गति गिआन धिआन कै अजीत है । (४२-४)
प्रेम कै भगति अरु भगति कै प्रेम नेम (४२-५)
अलख भगति प्रेम गुरमुखि रीति है । (४२-६)
निरगुन सरगुन बिखै बिसम बिस्वास रिदै (४२-७)
बिसम बिस्वास पारि पूरन प्रतीति है ॥४२॥ (४२-८)

किंचत कटाछ दिबि देह दिबि दृसटि हुइ (४३-१)
दिबि जोति को धिआनु दिबि दृसटात कै । (४३-२)
सबद बिबेक टेक प्रगट हुइ गुरमति (४३-३)
अनहद गंमि उनमनी को मतात कै । (४३-४)
गिआन धिआन करनी कै उपजत प्रेम दसु (४३-५)
गुरमुखि सुख प्रेम नेम निज क्राति कै । (४३-६)
चरन कमल दल संपट मधुप गति, (४३-७)
सहज समाधि मध पान प्रान शांति कै ॥४३॥ (४३-८)

सूआ गहि नलिनी कउ उलटि गहावै आपु (४४-१)
हाथ सै छडाइे पर बीस आवई । (४४-२)
तैसे बारंबार टेरि टेरि कहे पटे पटे (४४-३)
आपने ही नाए सीखि आप ही पड़ाई (४४-४)
रघुबंसी राम नामु गाल जामनी सु भाख (४४-५)
संगति सुभाव गति बुधि प्रगटावई । (४४-६)
तैसे गुरचरन सरनि साध संग मिले (४४-७)
आपा आपु चीनि गुरमुखि सुख पावई ॥४४॥ (४४-८)

दृसटि मै दरस दरस मै दृशटि दृग (४५-१)
दृसटि दरस अदरस गुर धिआन है । (४५-२)
सबद मै सुरति सुरति मै सबद धुनि (४५-३)
सबद सुरति अगमिति गुर गिआन है । (४५-४)

गिआन धिआन करनी कै प्रगटत प्रेम रसु (४५-५)
गुरमति गति प्रेम नेम निरबान है । (४५-६)
पिंड प्रान प्रानपति बीस को बरतमान (४५-७)
गुरमुख सुख इकिईस मो निधान है ॥४५॥ (४५-८)

मन बच क्रम हुइ इकत्र छत्रपति भइे (४६-१)
सहज सिंघासन कै अबि निहचल राज है । (४६-२)
सत अउ संतोख दइिआ धरम अरथ मेलि, (४६-३)
पंच परवान कीइे गुरमति साज है । (४६-४)
सकल पदारथ अउ सरब निधान सभा (४६-५)
सिव नगरी सुबास कोटि छबि छाज है । (४६-६)
राजनीति रीति प्रीति परजा कै सुखै सुख (४६-७)
पूरन मनोरथ सफल सब काज है ॥४६॥ (४६-८)

चरन सरनि मन बच क्रम हुइ इकत्र (४७-१)
गंमिता तृकाल तृभवन सुधि पाई है । (४७-२)
सहज समाधि साधि अगम अगाधि कथा (४७-३)
अंतरि दिसंतर निरंतरी जताई है । (४७-४)
खंड ब्रहमंड पिंड प्रान प्रानपति गति (४७-५)
गुर सिख संधि मिले सोह्म लिवलाई है । (४७-६)
दरपन दरस अउ जंत्र धनि जंत्री बिधि (४७-७)
एतपोति सूतु इेकै दुबिधा मिटाई है ॥४७॥ (४७-८)

चरन सरनि मन बच क्रम हुइ इकत्र तन (४८-१)
तृभवन गति अलख लखाई है। (४८-२)
मन बच करम करम मन बचन कै (४८-३)
बचन करम मन उनमनी छाई है । (४८-४)
गिआनी धिआनी करनी जिउ गुर महूआ कमादि (४८-५)
निझर अपार धार भाठी कै चुआई है । (४८-६)
प्रेमरस अंमृत निधान पान पूरन हुइ (४८-७)
गुरमुखि संधि मिले सहज समाई है ॥४८॥ (४८-८)

बिबिधि बिरख बली फल फूल साखा (४९-१)
रचन चरित्र चित्र अनिक प्रकार है। (४९-२)
बरन बरन फल बहु बिधि स्वादरस (४९-३)
बरन बरन फूल बासना बिथार है। (४९-४)
बरन बरन मूल बरन बरन साखा (४९-५)
बरन बरन पत् सुगन अचार है। (४९-६)
बिबिधि बनासपति अंतरि अगनि जैसे (४९-७)
सकल संसार बिखै इेकै इेकंकार है ॥४९॥ (४९-८)

गुर सिख संधि मिले दृसटि दरस लिव (५०-१)
गुरमुखि ब्रहम गिआन धिआन लिव लाई है। (५०-२)
गुर सिख संधि मिले सबद सुरति लिव (५०-३)
गुरमुखि ब्रहम गिआन धिआन सुधि पाई है। (५०-४)
गुर सिख संधि मिले स्वामी सेवक हुइ (५०-५)
गुरमुखि निहकाम करनी कमाई है । (५०-६)
गुर सिख संधि मिले करनी सु गिआन धिआन (५०-७)
गुरमुखि प्रेम नेम सहज समाई है ॥५०॥ (५०-८)

गुरमुखि संधि मिले ब्रहम धिआन लिव, (५१-१)
इेकंकार कै आकार अनिक प्रकार है । (५१-२)
गुरमुखि संधि मिले ब्रहम गिआन लिव (५१-३)
निरंकार एअंकार बिबिधि बिथार है । (५१-४)
गुर सिख संधि मिले स्वामी सेव सेवक हुइ (५१-५)
ब्रहम बिबेक प्रेम भगति अचार है । (५१-६)
गुरमुखि संध मिले परमद्भुत गति (५१-७)
नेत नेत नेत नमो नमो नमसकार है ॥५१॥ (५१-८)

गुरमुखि मन बच करम इिकत्र भइे (५२-१)
अंग अंग बिसम स्रबंग मै समाइे है । (५२-२)
प्रेमरस अंमृत निधान पान के मदोन (५२-३)
रसना थकत भई कहित न आइे है। (५२-४)
जगमग प्रेम जोति अति अस्चरज मै (५२-५)
लोचन चकत भइे हेरत हिराइे है। (५२-६)
राग नाद बाद बिसमाद प्रेम धुनि सुनि (५२-७)
स्रवन सुरति बिलै बिलै बिलाइे है॥५२॥ (५२-८)

गुरमुखि मन बच करम इिकत्र भइे (५३-१)
पूरन परमपद प्रेम प्रगटाइे है । (५३-२)
लोचन मै दृसटि दरस रस गंध संधि (५३-३)
स्रवन सबद स्रुति गंध रस पाइे है । (५३-४)
रसना मै रस गंध सबद सुरति मेल (५३-५)
नास बासु रस स्र ुति सबद लखाइे है । (५३-६)
रोम रोम रसना स्रवन दृग नासा कोटि (५३-७)
खंड ब्रहमंड पिंड प्रान मै जताइे है ।५३॥ (५३-८)

पूरन ब्रहम आप आपन ही आपि साजि (५४-१)
आपन रचिए है नउि आपि है बिचारि कै । (५४-२)
आदि गुर दुतीआ गोबिंद कहाइिउ (५४-३)
गुरमुख रचना अकार एअुंकार कै । (५४-४)
गुरमुखि नाद बेद गुरमुखि पावै भेद , (५४-५)

गुरमुखि लीलाधारी अनिक अउतार कै । (५४-६)
गुर गोबिंद अए गोबिंद गुर इेकमेक (५४-७)
एतिपोति सूत्र गति अंबर उचार कै ॥५४॥ (५४-८)

जैसे बीज बोइि होत बिरख बिथार गुर (५५-१)
पूरन ब्रहम निरंकार इेकंकार है । (५५-२)
जैसे इेक बिरख सै होत है अनेक फल (५५-३)
तैसे गुर सिख साध संगति अकार है । (५५-४)
दरस धिआन गुर सबद गिआन गुर (५५-५)
निरगुन सरगुन ब्रहम बीचार है । (५५-६)
गिआन धिआन ब्रहम सथान सावधान साध (५५-७)
संगति प्रसंग प्रेम भगति उधार है ॥५५॥ (५५-८)

फल फूल मूल फल मूल फल फल मूल (५६-१)
आदि परमादि अरु अंत कै अनंत है । (५६-२)
पित सुत सुत पित सुत पित पित सुत (५६-३)
उतपति गति अति गूड़ मूल मंत है । (५६-४)
पथिक बसेरा को निबेरा जिउ निकसि बैठ (५६-५)
इित उत वार पार सरिता सिधत है । (५६-६)
पूरन ब्रहम गुर गोबिंद गोबिंद गुर (५६-७)
अबिगत गति सिमरत सिख संत है ॥५६॥ (५६-८)

गुरमुखि पंथ गहे जमपुरि पंथ मेटे (५७-१)
गुरसिख संग पंच दूत संग तिआगे है । (५७-२)
चरन सरनि गुर करम भरम खोइे (५७-३)
दरस अकाल काल कंटक भै भागे है । (५७-४)
गुर उपदेस वेस बज्र कपाट खुले (५७-५)
सबद सुरति मूरछत मन जागे है । (५७-६)
किंचत कटाछ क्रिपा सरब निधान पाइे (५७-७)
जीवन मुकति गुर गिआन लिव लागे है ॥५७॥ (५७-८)

गुरमुखि पंथ सुख चाहत सकल पंथ (५८-१)
सकल दरस गुर दरस अधीन है । (५८-२)
सुर सुरसरि गुर चरन सरन चाहै (५८-३)
बेद ब्रहमादिक सबद लिवलीन है । (५८-४)
सरब गिअनि गुरु गिआन अवगाहन मै (५८-५)
सरब निधान गुर क्रिपा जल मीन है । (५८-६)
जोगी जोग जुगति मै भोगी भोग भुगति मै (५८-७)
गुरमुखि निजपद कुल अकुलीन है ॥५८॥ (५८-८)

उलटि पवन मन मीन की चपल गति (५९-१)

सुखमना संगम कै ब्रहम सथान है । (५९-२)
सागर सलिल गहि गगन घटा घमंड (५९-३)
उनमन मगन लगन गुर गिआन है । (५९-४)
जोति मै जोती सरूप दामनी चमतकार (५९-५)
गरजत अनहद सबद नीसान है । (५९-६)
निझर अपार धार बरखा अंमृत जल (५९-७)
सेवक सकल फल सरब िनधान है ।५९॥ (५९-८)

लोगन मै लोगाचार बेदन मै बेद बिचार (६०-१)
लोग बेद बीस इकईस गुर गिआन है । (६०-२)
जोग मै न जोग भोग मै न खान पान (६०-३)
जोग भोगातीत उनमन उनमान है । (६०-४)
दृसट दरस धिआन सबद सुरति गिआन (६०-५)
गिआन धिआन लख प्रेम परम निधान है । (६०-६)
मन बच क्रम स्रम साधनाध्रातम क्रम (६०-७)
गुरमुख सुख सरबोतिम निधान है ॥६०॥ (६०-८)

सबद सुरति लिव धावत बरजि राखे (६१-१)
निहचल मति मन उनमन भीन है । (६१-२)
सागर लहरि गति आतम तरंग रंग (६१-३)
परमुदभुत परमारथ प्रबीन है । (६१-४)
गुरउपदेस निरमोलक रतन धन (६१-५)
परम निधान गुर गिआन लिवलीन है । (६१-६)
सबद सुरति लिव गुर सिख संधि मिले (६१-७)
सोह्म ह्मसो इेकामेक आपा आपु चीन है ॥६१॥ (६१-८)

सबद सुरति अवगाहन बिमल मति (६२-१)
सबद सुरति गुर गिआन को प्रगास है । (६२-२)
सबद सुरति सम दृसटि कै दिबि जोति (६२-३)
सबद सुरति लिव अनभै अभिआस है । (६२-४)
सबद सुरति परमारथ परमपद (६२-५)
सबद सुरति सुख सहज निवास है । (६२-६)
सबद सुरति लिव प्रेमरस रसिक हुइि (६२-७)
सबद सुरति लिव बिसम बिस्रास है ॥६२॥ (६२-८)

दृसटि दरस लिव गुर सिख संधि मिले (६३-१)
घट घटि कास जल अंतरि धिआन है । (६३-२)
सबद सुरति लिव गुर सिख संधि मिले (६३-३)
जंत्र धुनि जंत्री उनमन उनमान है । (६३-४)
गुरमुखि मन बच करम इिकत्र भइे (६३-५)
तन तृभवन गति गंमिता गिआन है । (६३-६)

इेक अउ अनेक मेक ब्रहम बिबेक टेक (६३-७)
स्रोत सरता समुंद्र आतम समान है ॥६३॥ (६३-८)

गुरमुखि मन बच करम इिकत्र भइे (६४-१)
परमदभुत गति अलख लखाइे है । (६४-२)
अंतर धिआन दिब जोत को उदोतु भइिए (६४-३)
तृभवन रूप घट अंतरि दिखाइे है । (६४-४)
परम निधान गुर गिआन को प्रगासु भइिए (६४-५)
गंमिता तृकाल गति जतन जताइे है । (६४-६)
आतम तरंग प्रेमरस मध पान मत (६४-७)
अकथ कथा बिनोद हेरत हिराइे है ॥६४॥ (६४-८)

बिनु रस रसना बकत जी बहुत बातै (६५-१)
प्रेमरस बसि भइे मोनिब्रत लीन है । (६५-२)
प्रेमरस अंमृत निधान पान कै मदोन (६५-३)
अंतर धिआन दृग दुतीआ न चीन है । (६५-४)
प्रेम नेम सहज समाधि अनहद लिव (६५-५)
दुतीआ सबद स्रवनंतरि न कीन है । (६५-६)
बिसम बिदेह जग जीवन मुकति भइे (६५-७)
तृभवन अउ तृकाल गंमिता प्रबीन है ॥६५॥ (६५-८)

सकल सुगंधता मिलत अरगजा होत (६६-१)
कोटि अरगजा मिलि बिसम सुबास कै। (६६-२)
सकल अनूप रूप कमल बिखै समात (६६-३)
हेरत हिरात कोटि कमला प्रगास कै । (६६-४)
सरब निधान मिलि परम निधान भइे (६६-५)
कोटिक निधान हुइि चकित बिलास कै । (६६-६)
चरन कमल गुर महिमा अगाधि बोधि (६६-७)
गुरसिख मधुकर अनभै अभिआस कै ॥६६॥ (६६-८)

रतन पारख मिलि रतन परीखा होत (६७-१)
गुरमुखि हाट साट रतन बिउहार है । (६७-२)
मानक हीरा अमोल मनि मकताहल कै (६७-३)
गाहक चाहक लाभ लभति अपार है । (६७-४)
सबद सुरति अवगाहन बिसाहन कै (६७-५)
परम निधान प्रेम नेम गुरदुआर है । (६७-६)
गुरसिख संधि मिलि संगम समागम कै (६७-७)
माइिआ मै उदास भव तरत संसार है ॥६७॥ (६७-८)

चरन कमल मकरंद रस लुभित हुइि (६८-१)
निज घर सहज समाधि लिव लागी है । (६८-२)

चरन कमल मकरंद रस लुभित हुइ (६८-३)
गुरमति रिदै जगमग जोति जागी है । (६८-४)
चरन कमल मकरंद रस लुभित हुइ (६८-५)
अंमृत निधान पान दुरमति भागी है । (६८-६)
चरन कमल मकरंद रस लुभित हुइ (६८-७)
माइिआ मै उदास बास बिरलो बैरागी है ॥६८॥ (६८-८)

जैसे नाउ बूडत सै जोई निकसै सोई भलो (६९-१)
बूडि गइे पाछे पछताइिए रहि जात है । (६९-२)
जैसे घर लागे आगि जोई भचै सोई भलो (६९-३)
जरि बुझे पाछे कछु बसु न बसात है । (६९-४)
जैसे चोर लागे जागे जोई रहै सोई भलो (६९-५)
सोइि गइे रीतो घर देखै उठि प्रात है । (६९-६)
तैसे अंत काल गुर चरन सरनि आवै (६९-७)
पावै मोख पदवी नातर बिललात है ॥६९॥ (६९-८)

अंत काल इेक घरी निग्रह कै सती होइि (७०-१)
धंनि धंनि कहत है सकल संसार जी । (७०-२)
अंत काल इेक घरी निग्रह कै जोधा जूझै (७०-३)
इित उत जत कत होत जै जै कार जी । (७०-४)
अंत काल इेक घरी निग्रह कै चोरु मरै (७०-५)
फासी कै सूरी चढाइे जग मै धिकार जी । (७०-६)
तैसे दुरमति गुरमति कै असाध साध (७०-७)
संगति सुभाव गति मानस अउतार जी ॥७०॥ (७०-८)

आदि कै अनादि अर अंति कै अनंत अति (७१-१)
पार कै अपार न अथाह थाह पाई है । (७१-२)
मिति कै अमिति अर संख्‍ कै असंख पुनि (७१-३)
लेख कै अलेख नही तौल कै तौलाई है । (७१-४)
अरध उरध परजंत कै अपार जंत (७१-५)
अगम अगोचर न मोल कै मुलाई है । (७१-६)
परमदभुत अस्‍चरज बिसम अति (७१-७)
अबिगति गति सतिगुर की बडाई है ॥७१॥ (७१-८)

चरन सरनि गुर तीरथ पुरब कोटि (७२-१)
देवी देव सेव गुर चरनि सरन है । (७२-२)
चरन सरनि गुर कामना सकलफल (७२-३)
रिधि सिधि निधि अवतार अमरन है । (७२-४)
चरन सरनि गुर नाम निहकाम धाम (७२-५)
भगति जुगति करि तारन तरन है । (७२-६)
चरन सरनि गुर महिमा अगाधि बोध (७२-७)

हरन भरन गति कारन करन है ॥७२॥ (७२-८)

गुरसिख इेकमेक रोम महिमा अनंत (७३-१)
अगम अपार गुर महिमा निधान है । (७३-२)
गुरसिख इेकमेक बोल को न तोल मोल (७३-३)
स्रीगुर सबद अगमिति गिआन धिआन है । (७३-४)
गुरसिख इेकमेक दृसटि दृसटि तारै (७३-५)
स्रीगुर कटाछ क्रिपा को न परमान है । (७३-६)
गुरसिख इेकमेक पल संग रंग रस (७३-७)
अबिगति गति सतिगुरनिरबान है ॥७३॥ (७३-८)

बरन बरन बहु बरन घटा घमंड (७४-१)
बसुधा बिराजमान बरखा अनंद कै । (७४-२)
बरन बरन हुइ प्रफुलित बनासपती (७४-३)
बरन बरन फल फूल मूलकंद कै । (७४-४)
बरन बरन खग बिबिध भाखा प्रगास (७४-५)
कुसम सुगंध पउन गउन सीत मंद कै । (७४-६)
रवन गवन जल थन तृन सोभा निधि (७४-७)
सफल हुइ चरन कमल मकरंद कै ॥७४॥ (७४-८)

चीटी कै उदर बिखै हसती समाइि कैसे (७५-१)
अतुल पहार भार भ्रिंगीन उठावई । (७५-२)
माछर कै डंग न मरत है बसित नागु (७५-३)
मकरी न चीतै जीतै सरि न पूजावई । (७५-४)
तमचर उडत न पहूचै आकास बास (७५-५)
मूसा तउ न पैरत समुंद्र पार पावई । (७५-६)
तैसे पृअ प्रेम नेम अगम अगाधि बोधि (७५-७)
गुरमुखि सागर जिउ बूंद हुइ समावई ॥७५॥ (७५-८)

सबद सुरति अवगाहन कै साध संगि (७६-१)
आतम तरंग गंग सागर लहरिहै । (७६-२)
अगम अथाहि आहि अपर अपार अति (७६-३)
रतन प्रगास निधि पूरन गहरि है । (७६-४)
ह्मस मरजीवा गुन गाहक चाहक संत (७६-५)
निस दिन घटिका महूरत पहरहै । (७६-६)
स्वाँत बूंद बरखा जिउ गवन घटा घमंड (७६-७)
होत मुकताहल अउ नर नरहर है ॥७६॥ (७६-८)

सबद सुरति लिव जोत को उदोत भइिए (७७-१)
तृभवन अउ तृकाल अंतरि दिखाइे है । (७७-२)
सबद सुरति लिव गुरमति को प्रगास (७७-३)

अकथ कथा बिनोद अलख लखाइे है । (७७-४)
सबद सुरति लिव निझर अपार धार (७७-५)
प्रेमरस रसिक हुइि अपीआ पीआइे है । (७७-६)
सबद सुरति लिव सोह्म सोह अजपा जाप (७७-७)
सहज समाधि सुख समइे है ॥७७॥ (७७-८)

आधि कै बिआधि कै उपाधि कै तृदोख हुते (७८-१)
गुरसिख साध गुर बैद पै लै आइे है । (७८-२)
अंमित कटाछ पेख जनम मरन मेटे (७८-३)
जोन जम भै निवारे अभै पद पाइे है । (७८-४)
चरन कमल मकरंद रज लेपन कै (७८-५)
दीखिआ सीखिआ संजम कै अउखद खवाइे है । (७८-६)
करम भरम खोइे धावत बरजि राखे (७८-७)
निहचल मति सुख सहज समाइे है ।७८॥ (७८-८)

बोहिथि प्रवेस भइे निरभै हुइि पारगामी (७९-१)
बोहिथ समीप बूडि मरत अभागे है । (७९-२)
चंदन समीप द्रुगंध सो सुगंध होहि (७९-३)
दुरंतर तर मारुत न लागे है । (७९-४)
सिहजा संजोग भोग नारि गरहारि होत (७९-५)
पुरख बिदेसि कुलदीपक न जागे है । (७९-६)
स्री गुरू क्रिपा निधान सिमरन गिआन धिआन (७९-७)
गुरमुख सुखफल पल अनुरागे है ।७९॥ (७९-८)

चरन कमल के महातम अगाधि बोधि (८०-१)
अति असचरज मै नमो नमो नम है । (८०-२)
कोमल कोमलता अउ सीतल सीतलता कै (८०-३)
बासना सुबासु तासु दुतीआ न सम है । (८०-४)
सहज समाधि निजआसन सिंघासन (८०-५)
स्नाद बिसमाद रस गंमित अगम है । (८०-६)
रूप कै अनूप रूप मन मनसा बकत (८०-७)
अकथ कथा बिनोद बिसमै बिसम है ॥८०॥ (८०-८)

सतिगुर दरसन सबद अगाधि बोध (८१-१)
अबिगति गति नेत नेत नमो नमोहै । (८१-२)
दरस धिआन अरु सबद गिआन लिव (८१-३)
गुपत प्रगट ठट पूरन ब्रहम है । (८१-४)
निरगुन सरगुन कुसमावली सुगंधि (८१-५)
इेक अउ अनेक रूप गमिता अगम है । (८१-६)
परमदभुत अचरजै असचरजमै (८१-७)
अकथ कथा अलख बिसमे बिसम है ॥८१॥ (८१-८)

सतिगुर दरस धिआन गिआन अंजम कै (८२-१)
मित्र सत्रता निवारी पूरन ब्रहम है । (८२-२)
गुर उपदेस परवेस आदि कउ आदेस (८२-३)
उसतति निंदा मेटि गंमिता अगम है । (८२-४)
चरन सरनि गहे धावत बरजि राखे (८२-५)
आसा मनसा थकत सफल जनम है । (८२-६)
साधु संगि प्रेम नेम जीवनमुकति गति (८२-७)
काम निहकाम निहकरम करम है ॥८२॥ (८२-८)

सतिगुर देव सेव अलख अभेव गति (८३-१)
सावधान साध संग सिमरन मात्र कै । (८३-२)
पतित पुनीत रीति पारस करै मनूर (८३-३)
बाँसु मै सुबास दै कुपात्रहि सुपात्र कै । (८३-४)
पतित पुनीत करि पावन पवित्र कीने (८३-५)
पारस मनूर बाँस बासै द्रुम जात्र कै । (८३-६)
सरिता समुंद्र साध संगि तृखावत जीअ (८३-७)
क्रिपाजल दीजै मोहि कंठ छेद चात्रके ॥८३॥ (८३-८)

बीसके बरतमान भइे न सुबासु बाँसु (८४-१)
हेम न भइे मनूर लोग बेद गिआन है । (८४-२)
गुरमुखि पंथ इिकईस को बरतमान (८४-३)
चंदन सुबासु बाँस बासै द्रुम आन है । (८४-४)
कंचन मनूर होइि पारस परस भेटि (८४-५)
पारस मनूर करै अउर ठउर मान है । (८४-६)
गुरसिख साध संग पतित पुनीति रीति, (८४-७)
गुरसिख संध मिले गुरसिख जानि है ॥८४॥ (८४-८)

चरन सरनि गुर भई निहचल मति (८५-१)
मन उनमन लिव सहज समाइे है । (८५-२)
दृसटि दरस अरु सबद सुरति मिलि (८५-३)
परमद्भुत प्रेम नेम उपजाइे है । (८५-४)
गुरसिख साधसंग रंग हुइि तंबोल रस (८५-५)
पारस परसि धातु कंचन दिखाइे है । (८५-६)
चंदन सुगंध संध बासना सुबास तास (८५-७)
अकथ कथा बिनोद कहत न आइे है ।८५॥ (८५-८)

प्रेमरस अंमृत निधान पान पूरन हुइि (८६-१)
अकथ कथा बिनोद न आइे है । (८६-२)
गिआन धिआन सिआन सिमरन बिसमरन कै (८६-३)
बिसम बिदेह बिसमाद बिसमाइे है । (८६-४)

आदि परमादि अरु अंत कै अनंत भइे (८६-५)
थाह कै अथाह न अपार पार पाइे है । (८६-६)
गुर सिख संधि मिले बीस इिकईस ईस (८६-७)
सोह्म सोई दीपक सै दीपक जगाइि है ॥८६॥ (८६-८)

सतिगुर चरन सरनि चलि जाइे सिख (८७-१)
ता चरन सरनि जगतु चलि आवई । (८७-२)
सतिगुर आगिआ सति सति करि मानै सिख (८७-३)
आगिआ ताहि सकल संसारहि हितावई । (८७-४)
सतिगुर सेवा भाइि प्रान पूजा करै सिख (८७-५)
सरब निधान अग्रभागि लिव लावई । (८७-६)
सतिगुर सीखिआ दीखिआ हिरदे प्रवेस जाहि (८७-७)
ताकी सीख सुनत परमपद पावई ।८७॥ (८७-८)

गुरसिख साधसंग रंग मै रंगीले भइे (८८-१)
बारनी बिगंध गंग संग मिलि गंग है । (८८-२)
सुरसुरी संगम हुइि प्रबल प्रवाह लिव (८८-३)
सागर अथाह सतिगुर संग संगि है । (८८-४)
चरन कमल मकरंद निहचल चित (८८-५)
दरसन सोभा निधि लहरि तरंग है । (८८-६)
अनहदसबद कै सरबि निधान दान (८८-७)
गिआन अंस ह्मस गति सुमति स्रबंग है ॥८८॥ (८८-८)

गुरमुखि मारग हुइि दुबिधा भरम खोइे (८९-१)
चरन सरनि गहे निज घरि आइे है । (८९-२)
दरस दरसि दिबि दृसटि प्रगास भई (८९-३)
अंमृत कटाछ कै अमरपद पाइे है । (८९-४)
सबद सुरति अनहद निझर झरन (८९-५)
सिमरन मंत्र लिव उनमन छाइे है । (८९-६)
मन बच क्रम हुइि इिकत्र गुरमुख सुख (८९-७)
प्रेम नेम बिसम बिस्वास उपजाइे है ॥८९॥ (८९-८)

गुरमुखि आपा खोइि जीवनमुकति गति (९०-१)
बिसम बिदेह गेह समत सुभाउ है । (९०-२)
जनम मरन सम नरक सुरग अरु (९०-३)
पुंन पाप संपति बिपति चिंता चाउ है । (९०-४)
बन ग्रह जोग भोग लोग बेद गिआन धिआन (९०-५)
सुख दुख सोगानंद मित्र सत्र ताउ है । (९०-६)
लोसट कनिक बिखु अंमृत अगन जल (९०-७)
सहज समाधि उनमन अनुराउ है ॥९०॥ (९०-८)

सफल जनम गुरमुखि हुइि जनम जीतिए (६१-१)
चरन सफल गुर मारग रवन कै । (६१-२)
लोचन सफल गुर दरसा वलोकन कै (६१-३)
मसतक सफल रज पद गवन कै । (६१-४)
हसत सफल नम सतगुर बाणी लिखे (६१-५)
सुरति सफल गुर सबद स्रवन कै । (६१-६)
संगति सफल गुरसिख साध संगम कै (६१-७)
प्रेम नेम गंमिता तृकाल तृभवन कै ॥६१॥ (६१-८)

चरन कमल मकरंद रस लुभित हुइि (६२-१)
सहज समाधि सुख संपट समाने है । (६२-२)
भैजल भइिआनक लहरि न बिआपि सकै (६२-३)
दुबिधा निवारि इेक टेक ठहराने है । (६२-४)
दृसटि सबद सुरति बरजि बिसरजत (६२-५)
प्रेम नेम बिसम बिस्वास उर आने है । (६२-६)
जीवनमुकति जगजीवन जीवन मूल (६२-७)
आपा खोइि होइि अपरंपर परानै है ॥६२॥ (६२-८)

सरिता सरोवर सलिल मिल इेक भइे (६३-१)
इेक मै अनेक होत कैसे निरवारो जी । (६३-२)
पान चूना काथा सुपारी खाइे सुरंग भइे (६३-३)
बहुरि न चतुर बरन बिसथारो जी । (६३-४)
पारस परति होत कनिक अनिक धात (६३-५)
कनिक मै अनिक न होत गोताचारो जी । (६३-६)
चंदन सुबासु कै सुबासना बनासपती (६३-७)
भगत जगत पति बिसम बीचारो जी ॥६३॥ (६३-८)

चतुर बरन मिलि सुरंग तंबेल रस (६४-१)
गुरसिख साधसंग रंग मै रंगीले है । (६४-२)
खाँड घ्रित चून जल मिले बिंजनादि स्वाद (६४-३)
प्रेमरस अंमृत मै रसिक रसीले है । (६४-४)
सकल सुगंध सनबंध अरगजा होइि (६४-५)
सबद सुरति लिव बासना बसीले है । (६४-६)
पारस परसि जैसे कनिक अनिक धातु (६४-७)
दिबि देह मन उनमन उनमीले है ॥६४॥ (६४-८)

पवन गवन जैसे गुडीआ उडत रहै (६५-१)
पवन रहत गुडी उडि न सकत है । (६५-२)
डोरी की मरोरि जैसे लटूआ फिरत रहै (६५-३)
ताउ हाउ मिटै गिरि परै हुइि थकत है । (६५-४)
कंचन असुध जिउ कुठारी ठहरात नही (६५-५)

सुध भइे निहचल छबि कै छकत है । (६५-६)
दुरमति दुबिधा भ्रमत चतुर कुंट (६५-७)
गुरमति इेक टेक मोनि न बकत है ॥६५॥ (६५-८)

प्रेमरस अंमृत निधान पान पूरन होइि (६६-१)
परमदभुत गति आतम तरंग है । (६६-२)
इित ते दृसटि सुरति सबद बिसरजत (६६-३)
उत ते बिसम असचरज प्रसंग है । (६६-४)
देखै सु दिखावै कैसे सुनै सु सुनावै कैसे (६६-५)
चाखे सो बतावे कैसे राग रस रंग है । (६६-६)
अकथ कथा बिनोद अंग अंग थकत हुइि (६६-७)
हेरत हिरानी बूंद सागर स्रबंग है ॥६६॥ (६६-८)

साधसंग गंग मिलि स्रीगुर सागर मिले (६७-१)
गिआन धिआन परम निधान लिव लीन है । (६७-२)
चरन कमल मकरंद मधुकर गति (६७-३)
चंद्रमा चकोर गुर धिआन रस भीन है । (६७-४)
सबद सुरति मुकताहल अहार ह्मस (६७-५)
प्रेम परमारथ बिमल जल मीन है । (६७-६)
अंमित कटाछ अमरापद क्रिपा क्रिपाल (६७-७)
कमला कलपतर कामधेनाधीन है ॥६७॥ (६७-८)

इेक ब्रहमाँड के बिथार की अपार कथा (६८-१)
कोटि ब्रहमाँड को नाइिकु कैसे जानीअै । (६८-२)
घटि घटि अंतरि अउ सरब निरंतरि है (६८-३)
सूखम सथूल मूल कैसे पहिचानीअै । (६८-४)
निरगुन अदृसट सृसटि मै नाना प्रकार (६८-५)
अलख लखिए न जाइि कैसे उरि आनीअै । (६८-६)
सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (६८-७)
पूरन ब्रहम सरबातम कै मानीअै ॥६८॥ (६८-८)

पूरन ब्रहम गुर पूरन सरबमई (६९-१)
पूरन क्रिपा कै परपूरन कै जानीअै । (६९-२)
दरस धिआन लिव इेक अउ अनेक मेक (६९-३)
सबद बिबेक टेक इेकै उर आनीअै । (६९-४)
दृसटि दरस अरु सबद सुरति मिलि (६९-५)
पेखता बकता स्रोता इेकै पहिचानीअै । (६९-६)
सूखम सथूल मूल गुपत प्रगट ठट (६९-७)
नटवट सिमरन मंत्र मनु मानीअै ॥६९॥ (६९-८)

नहीं ददसार पित पितामा परपितामा (१००-१)

सुजन कुटंब सुत बाधव न भ्राता है । (१००-२)
नही ननसार माता परमाता बिरधि परमाता (१००-३)
मामू मामी मासी औ मौसा बिबिध बिख्याता है । (१००-४)
नही ससुरार सासु सुसरा सारो अउ सारी (१००-५)
नही बिरतीसुर मै जाचिक न दाता है । (१००-६)
असन बसन धन धाम काहू मै न देखिए (१००-७)
जैसा गुरसिख साधसंगत को नाता है ॥१००॥ (१००-८)

जैसे माता पिता पालक अनेक सुत (१०१-१)
अनक सुतन पै न तैसे होइ न आवई । (१०१-२)
जैसे माता पिता चित चाहत है सुतन कउो (१०१-३)
तैसे न सुतन चित चाह उपजावई । (१०१-४)
जैसे माता पिता सुत सुख दुख सोगानंद (१०१-५)
दुख सुख मै न तैसे सुत ठहरावई । (१०१-६)
जैसे मन बच क्रम सिखनु लुडावै गुर (१०१-७)
तैसे गुर सेवा गुरसिख न हितावई ॥१०१॥ (१०१-८)

जैसे कछप धरि धिआन सावधान करै (१०२-१)
तैसे माता पिता प्रीति सुतु न लगावई । (१०२-२)
जैसे सिमरन करि कूंज परपक करै (१०२-३)
तैसो सिमरनि सुत पै न बनि आवई । (१०२-४)
जैसे गऊ बछरा कउ दुगध पीआँइि पोखै (१०२-५)
तैसे बछरा न गऊ प्रीति हितु लावई । (१०२-६)
तैसे गिआन धिआन सिमरन गुरसिख प्रति (१०२-७)
तैसे कैसे सिख गुर सेवा ठहरावई ॥१०२॥ (१०२-८)

जैसे मात पिता केरी सेवा सरवन कीनी (१०३-१)
सिख बिरलोई गुर सेवा ठहरावई । (१०३-२)
जैसे लछमन रघुपति भाइि भगत मै (१०३-३)
कोटि मधे काहू गुरभाई बनि आवई । (१०३-४)
जैसे जल बरन बरन सरबंग रंग (१०३-५)
बिरलो बिबेकी साध संगति समावई । (१०३-६)
गुर सिख संधि मिले बीस ,इिकईस ईस (१०३-७)
पूरन क्रिपा कै काहू अलख लखावई ॥१०३॥ (१०३-८)

लोचन धिआन सम लोसट कनिक ताकै (१०४-१)
स्रवन उसतति निंदा समसरि जानीऐ । (१०४-२)
नासका सुगंध बिरगंध समतुलि ताकै (१०४-३)
रिदै मित्र सत्र समसरि उनमानीऐ । (१०४-४)
रसन सुआद बिख अंम्रितु समानि ताकै (१०४-५)
कर सपरस जल अगनि समानीऐ । (१०४-६)

दुख सुख समसरि बिआपै न हरख सोगु (१०४-७)
जीवनमुकति गति सतिगुर गिआनीऐ ॥१०४॥ (१०४-८)

चरन सरनि गहे निजघरि मै निवास (१०५-१)
आसा मनसा थकत अनत न धावई । (१०५-२)
दरसन मात्र आन धिआन मै रहत होइि (१०५-३)
सिमरन आन सिमरन बिसरावई । (१०५-४)
सबद सुरति मोनिब्रत कउ प्रापति होइि (१०५-५)
प्रेमरस अकथ कथा न कहि आवई । (१०५-६)
किंचत कटाछ क्रिपा परम निधान दान (१०५-७)
परमदभुत गति अति बिसमावई ॥१०५॥ (१०५-८)

सबद सुरति आपा खोइि गुरदासु होइि (१०६-१)
बरतै बरतमानि गुर उपदेस कै । (१०६-२)
होनहार होई जोई जोई सोई सोई भलो (१०६-३)
पूरन ब्रहम गिआन धिआन परवेस कै । (१०६-४)
नाम निहकाम धाम सहज सुभाइि चाइि (१०६-५)
प्रेमरस रसिक हुइि अंम्रत अवेस कै । (१०६-६)
सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (१०६-७)
पूरन सरबमई आदि कउ अदेस कै ॥१०६॥ (१०६-८)

सबद सुरति आपा खोइि गुरदासु होइि (१०७-१)
बाल बुधि सुधि न करत मोह द्रोह की । (१०७-२)
स्रवन उसतति निंदा समतुल सुरति लिव (१०७-३)
लोचन धिआन लिव कंचन अउ लोह की । (१०७-४)
नासका सुगंध बिरगंध समसरि ताकै (१०७-५)
जिहबा समानि बिख अंमृत न बोह की । (१०७-६)
कर चर करम अकरम अपथ पथ (१०७-७)
किरति बिरति सम उकति न द्रोहकी ॥१०७॥ (१०७-८)

सबद सुरति आपा खोइि गुरदासु होइि (१०८-१)
सरब मै पूरन ब्रहमु करि मानीऐ । (१०८-२)
कासट अगनि माला सूत्र गोरस गोबंस (१०८-३)
इेक अउ अनेक को बिबेक पहचानीऐ । (१०८-४)
लोचन स्रवन मुख नासका अनेक सोत्र (१०८-५)
देखै सुनै बोलै मन मैक उर आनीऐ ो (१०८-६)
गुर सिख संध मिले सोह्म सोही ओतिपोति (१०८-७)
जोती जोति मिलत जोती सरूप जानीऐ ॥१०८॥ (१०८-८)

गाँडा मै मिठासु तास छिलका न लीए जाइि (१०९-१)
दारम अउ दाख बिखै बीजु गहि डारीऐ । (१०९-२)

आँब खिरनी छहारा माझ गुठली कठोर (१०६-३)
खरबूजा अउ कलीदा सजल बिकारीऐ । (१०६-४)
मधुमाखी मै मलीन समै पाइ सफल हुइ (१०६-५)
रस बस भइे नही तृसना निवारीऐ । (१०६-६)
स्रीगुर सबद रस अंमृत निधान पान (१०६-७)
गुरसिख साध संगि जनमु सवारीऐ ॥१०६॥ (१०६-८)

सलिल मै धरनि धरनि मै सलिल जैसे (११०-१)
कूप अनरूप कै बिमल जल छाइे है । (११०-२)
ताही जल माटी कै बनाई घटिका अनेक (११०-३)
इेकै जलु घट घट घटिका समाइे है । (११०-४)
जाही जाही घटिका मै दृसटी कै देखीअत (११०-५)
पेखीअत आपा आपु आन न दिखाइे है । (११०-६)
पूरन ब्रहम गुर इेकंकार के अकार (११०-७)
ब्रहम बिबेक इेक टेक ठहराइे है ॥११०॥ (११०-८)

चरन सरनि गुर इेक पैडा जाइि चल (१११-१)
सति गुर कोटि पैडा आगे होइि लेत है । (१११-२)
इेक बार सतिगुर मंत्र सिमरन मात्र (१११-३)
सिमरन ताहि बारंबार गुर हेत है । (१११-४)
भावनी भगति भाइि कउडी अग्रभागि राखै (१११-५)
ताहि गुर सरब निधान दान देत है । (१११-६)
सतिगुर दइिआ निधि महिमा अगाधि बोधि (१११-७)
नमो नमो नमो नेत नेत नेत है ॥१११॥ (१११-८)

प्रेमरस अंमृत निधान पान पूरन हुइि (११२-१)
उनमन उनमत बिसम बिस्रास है । (११२-२)
आतम तरंग बहु रंग अंग अंग छबि (११२-३)
अनिक अनूप रूप उप को प्रगास है । (११२-४)
स्राद बिसमाद बहु बिबिधि सुरस सरब (११२-५)
राग नाद बाद बहु बासना सुबास है । (११२-६)
परमदभुत ब्रहमासन सिंघासन मै (११२-७)
सोभा सभा मंडल अखंडल बिलास है ॥११२॥ (११२-८)

बि्थावंतै जंतै जैसे बैद उपचारु करै (११३-१)
बि्था बृताँतु सुनि हरै दुख रोग कउ । (११३-२)
जैसे माता पिता हित चित कै मिलत सुतै (११३-३)
खान पान पोखि तोखि हरत है सोग कउ । (११३-४)
बिरहनी बनिता कउ जैसे भरतारु मिलै (११३-५)
प्रेमरस कै हरत बिरह बिएग कउ । (११३-६)
तैसे ही बिबेकी जन परउपकार हेत (११३-७)

मिलत सलिल गति सहज संजोग कउ॥११३॥ (११३-८)

ब्रिथावंते बैद रूप जाचिक दातार गति (११४-१)
गाहकै बिआपारी होइि मात पिता पूत कउ । (११४-२)
नार भिरतार बिधि मित्र मित्रताई रूप (११४-३)
सुजन कुटंब सखा भाइि चाइि सूत कउ । (११४-४)
लोगन मै लोगाचार बेद कै बेद बीचार (११४-५)
गिआन गुर इेकंकार अवधूत अवधूत कउ । (११४-६)
बिरलो बिबेकी जन परउपकार हेति (११४-७)
मिलत सलिल गति रंग स्रबंग भूत कउ ॥११४॥ (११४-८)

दरसन धिआन दिबि देह कै बिदेह भइे (११५-१)
दृग दृब दृसटि बिखै भाउ भगति चीन है । (११५-२)
अधिआतम करम करि आतम प्रवेस (११५-३)
परमातम प्रवेस सरबातम लिउलीन है । (११५-४)
सबद गिआन परवान हुइि निधान पाइे (११५-५)
परमारथ सबदारथ प्रबीन है । (११५-६)
ततै मिले तत जोती जोति कै परम जोति (११५-७)
प्रेमरस बसि भइे जैसे जल मीन है ॥११५॥ (११५-८)

अधिआतम करम परमातम परम पद (११६-१)
ततु मिलि ततहि परमतत वासी है । (११६-२)
सबद बिबेक टेक इेक ही अनेकमेक (११६-३)
जंत्र धुनि राग नाद अनभै अभिआसी है । (११६-४)
दरस धिआन उनमान प्रानपति (११६-५)
अबिगति गति अति अलख बिलासी है । (११६-६)
अंमृत कटाछ दिबि देह कै बिदेह भइे (११६-७)
जीवनमुकति कोऊ बिरलो उदासी है ॥११६॥ (११६-८)

सुपन चरित्र चित्र जागत न देखीअत (११७-१)
तारका मंडल परभाति न दिखाईऐ। (११७-२)
तरवर छाइिआ लघु दीरघ चपल बल (११७-३)
तीरथ पुरब जात्रा थिर न रहाईऐ। (११७-४)
नदी नाव को संजोग लोग बहरिए न मिलै (११७-५)
गंध्रब नगर मृग तृसना बिलाईऐ । (११७-६)
तैसे माइिऐ मोह ध्रोह कुटंब सनेह देह (११७-७)
गुरमुखि सबद सुरति लिव लाईऐ ॥११७॥ (११७-८)

नैहर कुआरि कंनिआ लाडिली कै मानीअति (११८-१)
बिआहे ससुरार जाइि गुननु कै मानीऐ । (११८-२)
बनज बिउहार लगि जात है बिदेसि प्रानी (११८-३)

कहीइे सपूत लाभ लभत कै आनीअै । (११८-४)
जैसे तउ संग्राम समै परदल मै अकेलो जाइि (११८-५)
जीति आवै सोई सूरो सुभटु बखानीअै । (११८-६)
मानस जनमु पाइि चरनि सरनि गुर (११८-७)
साधसंगति मिलै गुरदुआरि पहिचानीअै ॥११८॥ (११८-८)

नैहर कुटंब तजि बिआहे ससुररि जाइि (११९-१)
गुननु कै कुलाबधू बिरद कहावई । (११९-२)
पुरन पतिब्रति अउ गुरजन सेवा भाइि (११९-३)
गृह मै गृहसुरि सुजसु प्रगटावई । (११९-४)
अंतकालि जाइि पृअ संगि सहिगामनी हुइि (११९-५)
लोक परलोक बिखै ऊच पद पावई । (११९-६)
गुरमुख मारग भै भाइि निरबाहु करै (११९-७)
धन्न गुरसिख आदि अंत ठहरावई ॥११९॥ (११९-८)

जैसे नृप धाम भाम इेक सै अधिक इेक (१२०-१)
नाइिक अनेक राजा सबनु लडावई । (१२०-२)
जनमत जाकै सुतु वाही कै सुहागु भागु (१२०-३)
सकल रानी मै पटरानी सो कहावई । (१२०-४)
असन बसन सिहजासन संजोगी सबै (१२०-५)
राज अधिकारु तउ सपूती गृह आवई । (१२०-६)
गुरसिख सबै गुरु चरनि सरनि लिव (१२०-७)
गुरसिख संधि मिले निजपदु पावई ॥१२०॥ (१२०-८)

तुस मै तंदुल बोइि निपजै सह्मस्र गुनो (१२१-१)
देह धारि करत है परउपकार जी । (१२१-२)
तुस मै तंदुल निरबिघन लागै न घुनु (१२१-३)
राखे रहै चिरंकाल होत न बिकार जी । (१२१-४)
तुख सै निकसि होइि भगन मलीन रूप (१२१-५)
स्वाद करवाइि राधे रहै न संसार जी । (१२१-६)
गुर उपदेस गुरसिख गृह मै बैरागी (१२१-७)
गृह तजि बन खंड होत न उधार जी ॥१२१॥ (१२१-८)

हरदी अउ चूना मिलि अरुन बरन जैसे (१२२-१)
चतुर बरन कै तंबोल रस रूप है । (१२२-२)
दूध मै जावनु मिलै दधि कै बखानीअत (१२२-३)
खाँड घ्रित चून मिलि बिंजन अनूप है । (१२२-४)
कुसम सुगंध मिलि तिल सै फुलेल होत (१२२-५)
सकल सुगंध मिलि अरगजा धूप है । (१२२-६)
दोइि सिख साधसंगु पंच परमेसर है (१२२-७)
दस बीस तीस मिले अबिगति ऊप है ॥१२२॥ (१२२-८)

इेक ही गोरस मै अनेक रस को प्रगास (१२३-१)
दहिए महिए माखनु अउ घ्रित उनमानीऔ । (१२३-२)
इेक ही उखारी मै मिठास को निवास गुड़ु (१२३-३)
खाँड मिसरी अउ कलीकंद पहिचानीऔ । (१२३-४)
इेक ही गेहू सै होत नाना बिंजनाद स्वाद (१२३-५)
भूने भीजे पीसे अउ उसेई बिबिधानीऔ । (१२३-६)
पावक सलिल इेक इेकहि गुन अनेक (१२३-७)
पंच कै पंचाम्रत साधसंगु जानीऔ ॥१२३॥ (१२३-८)

खाँड घ्रित चून जल पावक इिकत्र भइे (१२४-१)
पंच मिलि प्रगट पंचाम्रत प्रगास है । (१२४-२)
मृगमद गउरा चोआ चंदन कुसम दल (१२४-३)
सकल सुगंध कै अरगजा सोबास है । (१२४-४)
चतुर बरन पान चूना अउ सुपारी काथा (१२४-५)
आपा खोइि मिलत अनूप रूप तास है । (१२४-६)
तैसे साधसंगति मिलाप को प्रतापु औसो (१२४-७)
सावधान पूरन ब्रहम को निवास है ॥१२४॥ (१२४-८)

सहज समाधि साधसंगति मै साचुखंड (१२५-१)
सतिगुर पूरन ब्रहम को निवास है । (१२५-२)
दरस धिआन सरगुन अकाल मूरति (१२५-३)
पूजा फुल फल चरनाम्रत बिस्रास है । (१२५-४)
निरंकार चार परमारथ परमपद (१२५-५)
सबद सुरति अवगाहन अभिआस है । (१२५-६)
सरब निधान दान दइिक भगति भाइि (१२५-७)
काम निहकाम धाम पूरन प्रगास है ॥१२५॥ (१२५-८)

सहज समाधि साधसंगति सुक्रित भूमी (१२६-१)
चित चितवत फल प्रापति उधार है । (१२६-२)
बजर कपाट खुले हाट साधसंगति मै (१२६-३)
सबद सुरति लाभ रात बिउहार है । (१२६-४)
साधुसंगि ब्रहम सथान गुरदेव सेव (१२६-५)
अलख अभेव परमारथ आचार है । (१२६-६)
सफल सुखेत हेत बनत अमिति लाभ (१२६-७)

सेवक सहाई बरदाई उपकार है ॥१२६॥ (१२७-१)
गुरमुखि साध चरनाम्रत निधान पान (१२७-२)
काल मै अकाल काल बिआल बिखु मारीऔ । (१२७-३)
गुरमुखि साध चरनाम्रत निधान पान (१२७-४)
कुल अकुलीन भइे दुबिधा निवारीऔ । (१२७-५)

गुरमुखि साध चरनाम्रत निधान पान (१२७-६)
सहज समाधि निज आसन की तारीऔ । (१२७-७)
गुरमुखि साध चरनाम्रत परमपद (१२७-८)
गुरमुखि पंथ अबिगत गति निआरी है ॥१२७॥ (१२७-९)

सहज समाधि साधसंगति सखा मिलाप (१२८-१)
गगन घटा घमंड जुगति कै जानीऔ । (१२८-२)
सहज समाधि कीरतन गुर सबद कै (१२८-३)
अनहद नाद गरजत उनमानीऔ । (१२८-४)
सहज समाधि साधसंगति जोती सरूप (१२८-५)
दामनी चमतकार उनमन मानीऔ । (१२८-६)
सहज समाधि लिव निझर अपार धार (१२८-७)
बरखा अंमृत जल सरब निधानीऔ ॥१२८॥ (१२८-८)

जैसे तउ गोबंस तिन खाइ दुहे गोरस दै (१२९-१)
गोरस अउटाइ दधि माखन प्रगास है । (१२९-२)
ऊख मै पिऊख तन खंड खंड के पराइ (१२९-३)
रस के अउटाइ खाँड मिसरी मिठास है । (१२९-४)
चंदन सुगंध सनबंध कै बनासपती (१२९-५)
ढाक अउ पलास जैसे चंदन सुबास है । (१२९-६)
साधुसंगि मिलत संसारी निरंकारी होत (१२९-७)
गुरमति परउपकार के निवास है ॥१२९॥ (१२९-८)

कोटनि कोटानि मिसटानि पान सुधारस (१३०-१)
पुजसि न साध मुख मधुर बचन कउ । (१३०-२)
सीतल सुगंध चंद चंदन कोटानि कोटि (१३०-३)
पुजसि न साध मति निम्रता सचन कउ । (१३०-४)
कोटनि कोटानि कामधेन अउ कलपतर (१३०-५)
पुजसि न किंचत कटाछ के रचन कउ । (१३०-६)
सरब निधान फल सकल कोटानि कोटि (१३०-७)
पुजसि न परउपकार के खचन खउ ॥१३०॥ (१३०-८)

कोटनि कोटानि रूप रंग अंग अंग छबि (१३१-१)
कोटनि कोटानि स्वाद रस बिंजनाद कै । (१३१-२)
कोटनि कोटानि कोटि बासना सुबास रसि (१३१-३)
कोटनि कोटानि कोटि राग नाद बाद कै । (१३१-४)
कोटनि कोटानि कोटि रिधि सिधि निधि सुधा (१३१-५)
कोटिनि कोटानि गिआन धिआन करमादि कै । (१३१-६)
सगल पदारथ हुइ कोटनि कोटानि गुन (१३१-७)
पुजसि न धाम उपकार बिसमादि कै ॥१३१॥ (१३१-८)

अजया अधीन ताकै परम पवित्र भई (१३२-१)
गरब कै सिंघ देह महा अपवित्र है । (१३२-२)
मोनि ब्रत गहे जैसे ऊख मै पयूख रस (१३२-३)
बास बकबानी कै सुगंधता न मित्र है । (१३२-४)
मुल होइि मजीठ रंग संग संगाती भइे (१३२-५)
फुल होइि कुसंभ रंग चंचल चरित्र है । (१३२-६)
तैसे ही असाध साध दादर अउ मीन गति (१३२-७)
गुपत प्रगट मोह द्रोह कै बचित्र है ॥१३२॥ (१३२-८)

पूरन ब्रहम धिआन पूरन ब्रहम गिआन (१३३-१)
पूरन भगति सतिगुर उपदेस है । (१३३-२)
जैसे जल आपा खोइि बरन बरन मिलै (१३३-३)
तैसे ही बिबेकी परमातम प्रवेस है । (१३३-४)
पारस परसि जैसे कनिक अनिक धातु (१३३-५)
चंदन बनासपती बासना अवेस है । (१३३-६)
घटि घटि पूरम ब्रहम जोति एतिपोति (१३३-७)
भावनी भगति भाइि आदि कउ अदेस है ॥१३३॥ (१३३-८)

जैसे करपूर मै उडत को सुभाउ ताते (१३४-१)
अउर बासना न ताकै आगै ठहारवई । (१३४-२)
चंदन सुबास कै सुबासना बनासपती (१३४-३)
ताही ते सुगंधता सकल सै समावई । (१३४-४)
जैसे जल मिलत स्रबंग संग रंगु राखै (१३४-५)
अगन जराइि सब रंगनु मिटावई । (१३४-६)
जैसे रवि ससि सिव सकत सुभाव गति (१३४-७)
संजोगी बिएगी दृसटातु कै दिखावई ॥१३४॥ (१३४-८)

स्रीगुर दरस धिआन स्रीगुर सबद (१३५-१)
गिआन ससत्र सनाह पंच दूत बसि आइे है । (१३५-२)
स्रीगुर चरन रेन स्रीगुर सरनि धेन (१३५-३)
करम भरम कटि अभै पद पाइे है । (१३५-४)
स्रीगुर बचन लेख स्रीगुर सेवक भेख (१३५-५)
अछल अलेख प्रभु अलख लखाइे है । (१३५-६)
गुरसिख साधसंग गोसटि प्रेम प्रसंग (१३५-७)
निंम्रता निरंतरी कै सहज समाइे है ॥१३५॥ (१३५-८)

जैसे तउ मजीठ बसुधा सै खोदि काढीअत (१३६-१)
अंबर सुरंग भइे संग न तजत है । (१३६-२)
जैसे तउ कसुंभ तजि मूल फूल आनीअत (१३६-३)
जानीअत संगु छाडि ताही भजत है । (१३६-४)
अरध उरध मुख सलिल सूची सुभाउ (१३६-५)

ताँते सीत तपति मल अमल सजत है । (१३६-६)
गुरमति दुरमति ऊच नीच नीच ऊच (१३६-७)
जीत हार हार जीत लजा न लजत है ॥१३६॥ (१३६-८)

गुरमुखि साधसंगु सबद सुरति लिव (१३७-१)
पूरन ब्रहम सरबातम कै जानीऐ । (१३७-२)
सहज सुभाइ रिदै भावनी भगति भाइ (१३७-३)
बिहसि मिलन समदरस धिआनीऐ । (१३७-४)
निम्रता निवास दास दासन दासान मति (१३७-५)
मधुर बचन मुख बेनती बखानीऐ । (१३७-६)
पूजा प्रान गिआन गुर आगिआकारी अग्रभाग (१३७-७)
आतम अवेस परमातम निधानीऐ ॥१३७॥ (१३७-८)

सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (१३८-१)
सतिगुर मति सुनि सति करि मानी है । (१३८-२)
दरस धिआन समदरसी ब्रहम धिआनी (१३८-३)
सबद गिआन गुर ब्रहमगिआनी है । (१३८-४)
गुरमति निहचल पूरन प्रगास रिदै (१३८-५)
मानै मन माने उनमन उनमानी है । (१३८-६)
बिसमै बिसम अस्चरजै अस्चरजमै (१३८-७)
अदभुत परमदभुत गति ठानी है ॥१३८॥ (१३८-८)

पूरन परमजोति सतिगुर सतिरूप (१३९-१)
पूरन गिआन सतिगुर सतिनाम है । (१३९-२)
पूरन जुगति सति सति गुरमति रिदै (१३९-३)
पूरन सेव साधसंगति बिस्राम है । (१३९-४)
पूरन पूजा पदारबिंद मधकर मन (१३९-५)
प्रेमरस पूरन हुइ काम निहकाम है । (१३९-६)
पूरन ब्रहम गुर पूरन परम निधि (१३९-७)
पूरन प्रगास बिसम सथल धाम है ॥१३९॥ (१३९-८)

दरसन जोति को उदोत असचरजमै (१४०-१)
तामै तिल छबि परमदभुत छकि है । (१४०-२)
देखबे कउ द्रिसटि न सुनबे कउ सुरति है (१४०-३)
कहिबे कउ जिहबा न गिआन मै उकति है । (१४०-४)
सोभा कोटि सोभ लोभ लुभित हुइ लोटपोट (१४०-५)
जगमग जोति कोटि एटि लै छिपति है । (१४०-६)
अंग अंग पेख मन मनसा थकत भई (१४०-७)
नेत नेत नमो नमो अति हू ते अति है ॥१४०॥ (१४०-८)

छबि कै अनेक छब सोभा कै अनेक सोभा (१४१-१)

जोति कै अनेक जोति नमो नमो नम है । (१४१-२)
असतुति उपमा महतम महिमा अनेक (१४१-३)
इेक तिल कथा अति अगम अगम है । (१४१-४)
बुधि बल बचन बिबेक जउ अनेक मिले (१४१-५)
इेक तिल आदि बिसमादि कै बिसम है । (१४१-६)
इेक तिल कै अनेक भाँति निहकाँति भई (१४१-७)
अबिगति गति गुर पूरन ब्रहम है ॥१४१॥ (१४१-८)

दरसन जोति को उदोत असचरजमै (१४२-१)
किंचत कटाछ कै बिसम कोटि धिआन है । (१४२-२)
मंद मुसकानि बानि परमदभुति गति (१४२-३)
मधुर बचन कै थकत कोटि गिआन है । (१४२-४)
इेक उपकार के बिथार को न पारावारु (१४२-५)
कोटि उपकार सिमरन उनमान है । (१४२-६)
दइिआनिधि क्रिपानिधि सुखनिधि सोभानिधि (१४२-७)
मिहमा निधान गंमिता न काहू आन है ॥१४२॥ (१४२-८)

कोटनि कोटानि आदि बादि परमादि बिखै (१४३-१)
कोटनि कोटानि अंत बिसम अनंत मै । (१४३-२)
कोटि पारावार पारावारु न अपार पावै (१४३-३)
थाह कोटि थकत अथाह अपरंजत मै । (१४३-४)
अबिगति गति अति अगम अगाधि बोधि (१४३-५)
गंमिता न गिआन धिआन सिमरन मंत मै । (१४३-६)
अलख अभेव अपरंपर देवाधि देव (१४३-७)
अैसे गुरदेव सेव गुरसिख संत मै ॥१४३॥ (१४३-८)

आदि परमादि बिसमादि गुरइे नेमह (१४४-१)
प्रगट पूरन ब्रहम जोति राखी । (१४४-२)
मिलि चतुर बरन इिक बरन हुइि साधसंग (१४४-३)
सहज धुनि कीरतन सबद साखी । (१४४-४)
नाम निहकाम निजधाम गुरसिख स्रवन (१४४-५)
धुनि गुरसिख सुमति अलख लाखी । (१४४-६)
किंचत कटाछ करि क्रिपा दै जाहि लै (१४४-७)
ताहि अवगाहि पृअै प्रीति चाखी ॥१४४॥ (१४४-८)

सबद की सुरति असिफुरति हुइि तुरत ही (१४५-१)
जुरति है साधसंग मुरत नाही । (१४५-२)
प्रेम परतीति की रीति हित चीत करि (१४५-३)
जीति मन जगत मन दुरत नाही । (१४५-४)
काम निहकाम निहकरम हुइि करम करि (१४५-५)
आसा निरास हुइि झरत नाही । (१४५-६)

गिआन गुर धिआन उर मानि पूरन ब्रहम (१४५-७)
जगत महि भगति मति छरत नाही ॥१४५॥ (१४५-८)

कोटनि कोटानि गिआन गिआन अवगाहन कै (१४६-१)
कोटनि कोटानि धिआन धिआन उर धारही । (१४६-२)
कोटनि कोटानि सिमरन सिमरन करि (१४६-३)
कोटनि कोटानि उनमान बारंबार ही । (१४६-४)
कोटनि कोटानि सुरति सबद अउ दृसटि कै (१४६-५)
कोटनि कोटानि राग नाद झुनकार ही । (१४६-६)
कोटनि कोटानि प्रेम नेम गुर सबद कउ (१४६-७)
नेत नेत नमो नमो कै नमसकार ही ॥१४६॥ (१४६-८)

सबद सुरति लिवलीन अकुलीन भइे (१४७-१)
चतर बरन मिलि साधसंग जानीऐ । (१४७-२)
सबद सुरति लिवलीन जल मीन गति (१४७-३)
गुहज गवन जल पान उनमानीऐ । (१४७-४)
सबद सुरति लिवलीन परबीन भइे (१४७-५)
पूरन ब्रहम इेकै इेक पहिचानीऐ । (१४७-६)
सबद सुरति लिवलीन पग रीन भइे (१४७-७)
गुरमुखि सबद सुरति उर आनीऐ ॥१४७॥ (१४७-८)

गुरमुखि धिआन कै पतिसटा सुखंबर लै (१४८-१)
अनकि पटंबर की सोभा न सुहावई । (१४८-२)
गुरमुखि सुख फल गिआन मिसटान पान (१४८-३)
नाना बिंजनादि सांद लालसा मिटावई । (१४८-४)
परम निधान पृअ प्रेम परमारथ कै (१४८-५)
सरब निधान की इिछा न उपजावई । (१४८-६)
पूरन ब्रहम गुर किंचत क्रिपा कटाछ (१४८-७)
मन मनसा थकत अनत न धावई ॥१४८॥ (१४८-८)

धंनि धंनि गुरसिख सुनि गुरसिख भइे (१४९-१)
गुरसिख मनि गुरसिख मन माने है । (१४९-२)
गुरसिख भाइि गुरसिख भाउ चाउ रिदै (१४९-३)
गुरसिख जानि गुरसिख जग जाने है । (१४९-४)
गुरसिख संधि मिलै गुरसिख पूरन हुइि (१४९-५)
गुरसिख पूरन ब्रहम पहचाने है । (१४९-६)
गुरसिख प्रेम नेम गुरसिख सिख गुर (१४९-७)
सोह्म सोई बीस इिकईस उरि आने है ॥१४९॥ (१४९-८)

सतिगुर सति सतिगुर सति सति रिदै (१५०-१)
भिदै न दुतीआ भाउ तृगुन अतीत है । (१५०-२)

पूरन ब्रहम गुर पुरन सरबमई (१५०-३)
इेक ही अनेक मेक सकल के मीत है । (१५०-४)
निरबैर निरलेप निराधार निरलंभ (१५०-५)
निरंकार निरबिकार निहचक चीत है । (१५०-६)
निरमल निरमोल निरंजन निराहार (१५०-७)
निरमोह निरभेद अछल अजीत है ॥१५०॥ (१५०-८)

सहज समाधि साधसंगति सुक्रित भूमी (१५१-१)
चित चितवत फल प्रापति उधार है । (१५१-२)
सति साधसंगति है गुरमुखि जानीअै । (१५१-३)
दरसन धिआन सति सबद सुरति सति (१५१-४)
गुरसिख संग सति सति कर मानीअै । (१५१-५)
दरस ब्रहम धिआन सबद ब्रहम गिआन (१५१-६)
संगति ब्रहमथान प्रेम पहिचानीअै । (१५१-७)
सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (१५१-८)
काम निहकाम उनमन उनमानीअै ॥१५१॥ (१५१-९)

गुरमुखि पूरन ब्रहम देखे दृसटि कै (१५२-१)
गुरमुखि सबद कै पूरन ब्रहम है । (१५२-२)
गुरमुखि पूरन ब्रहम स्र्ुति स्रवन कै (१५२-३)
मधुर बचन कहि बेनती बिसम है । (१५२-४)
गुरमुखि पूरन ब्रहम रसगंध संधि (१५२-५)
प्रेसरस चंदन सुगंध गमागम है । (१५२-६)
गुरमुखि पूरन ब्रहम गुर सरब मै (१५२-७)
गुरमुखि पूरन ब्रहम नमो नम है ॥१५२॥ (१५२-८)

दरस अदरस दरस असचरजमै (१५३-१)
हेरत हिराने दृग दृसटि अगम है । (१५३-२)
सबद अगोचर सबद परमदभुत (१५३-३)
अकथ कथा कै स्र्ुति स्रवन बिसम है ी (१५३-४)
सांद रस रहित अपीअ पिआ प्रेमरस (१५३-५)
रसना थकत नेत नेत नमो नम है । (१५३-६)
निरगुन सरगुन अबिगति न गहन गति (१५३-७)
सूखम सथूल मूल पूरन ब्रहम है ॥१५३॥ (१५३-८)

खुले से बंधन बिखै भलो ही सीचानो जाते (१५४-१)
जीव घात करै न बिकारु होइि आवई । (१५४-२)
खुले से बंधन बिखै चकई भली जाते (१५४-३)
राम रेख मेटि निसि पृअ संगु पावई । (१५४-४)
खुले से बंधन बिखै भलो है सूआ प्रसिध (१५४-५)
सुनि उपदेसु राम नाम लिव लावई । (१५४-६)

मोख पदवी सै तैसे मानस जनम भलो (१५४-७)
गुरमुखि होइ साधसंगि प्रभ धिआवई ॥१५४॥ (१५४-८)

जैसे सूआ उडत फिरत बन बन प्रति (१५५-१)
जैसे ई बिरख बैठे तैसो फलु चाखई । (१५५-२)
परबसि होइ जैसी जैसी अै संगति मिलै (१५५-३)
सुनि उपदेस तैसी भाखा लै सभाखई । (१५५-४)
तैसे चित चंचल चपल जल को सुभाउ (१५५-५)
जैसे रंग संग मिलै तैसे रंग राखई । (१५५-६)
अधम असाध जैसे बारुनी बिनास काल (१५५-७)
साधसंग गंग मिलि सुजन भिलाखई ॥१५५॥ (१५५-८)

जैसे जैसे रंग संगि मिलत सेताँबर हुइ (१५६-१)
तैसे तैसे रंग अंग अंग लपटाइ है । (१५६-२)
भगवत कथा अरपन कउ धारनीक (१५६-३)
लिखत कितास पत्र बंध मोखदाइ है । (१५६-४)
सीत ग्रीखमादि बरखा बरख मै (१५६-५)
निसि दिन होइ लघु दीरघ दिखाइ है । (१५६-६)
तैसे चित चंचल चपल पउन गउन गति (१५६-७)
संगम सुगंध बिरगंध प्रगटाइ है ॥१५६॥ (१५६-८)

चतुर पहर दिन जगति चतुर जुग (१५७-१)
निसि महा परलै समानि दिन प्रति है । (१५७-२)
उतम मधिम नीच तृगुण संसार गति (१५७-३)
लोग बेद गिआन उनमान आसकति है । (१५७-४)
रजि तमि सति गुन अउगन सिम्रत चित (१५७-५)
तृगुन अतीत बिरलोई गुरमति है । (१५७-६)
चतुर बरन सार चउपर को खेल जग (१५७-७)
साधसंगि जुगल होइ जीवनमुकति है ॥१५७॥ (१५७-८)

जैसे रंग संग मिलत सलिल मिल (१५८-१)
होइ तैसो तैसो रंग जगत मै जानीअै । (१५८-२)
चंदन सुगंध मिलि पवन सुगंध संगि (१५८-३)
मल मूत्र सूत्र बृगंध उनमानीअै । (१५८-४)
जैसे जैसे पाक साक बिंजन मिलत घ्रित (१५८-५)
तैसो तैसो संाद रसु रसना कै मानीअै । (१५८-६)
तैसे ही असाध साध संगति सुभाव गति (१५८-७)
मूरी अउ तंबोल रस खाइे ते पहिचानीअै ॥१५८॥ (१५८-८)

बालक किसोर जोबनादि अउ जरा बिवसथा (१५९-१)
इेक ही जनम होत अनिक प्रकार है । (१५९-२)

जैसे निसि दिनि तिथि वार पछ मासु रुति (१५९-३)
चतुर मासा तृबिधि बरख बिथार है । (१५९-४)
जागत सुपन अउ सखोपति अवसथा कै (१५९-५)
तुरीआ प्रगास गुर गिआन उपकार है । (१५९-६)
मानस जनम साधसंग मिलि साध संत (१५९-७)
भगत बिबेकी जन ब्रहम बीचार है ॥१५९॥ (१५९-८)

जैसे चकई मुदित पेखि प्रतिबिंब निसि (१६०-१)
सिंघ प्रतिबिंब देखि कूप मै परत है । (१६०-२)
जैसे काच मंदर मै मानस अनंदमई (१६०-३)
सांनपेखि आपा आपु भूजि कै मरत है । (१६०-४)
जैसे रविसुति जम रूप अउ धरमराइ (१६०-५)
धरम अधरम कै भाउ भै करत है । (१६०-६)
तैसे दुरमति गुरमति कै असाध साध (१६०-७)
आपा आपु चीनत न चीनत चरत है ॥१६०॥ (१६०-८)

जैसे तउ सलिल मिलि बरन बरन बिखै (१६१-१)
जाही जाही रंग मिलै सोई हुइ दिखावई । (१६१-२)
जैसे घ्रित जाही जाही पाक साक संग मिलै (१६१-३)
तैसे तैसे सांद रस रसना चखावई । (१६१-४)
जैसे सांगी इेकु हुइ अनेक भाति भेख धारै (१६१-५)
जोई जोई साँग काछै सोई तउ कहावई । (१६१-६)
तैसे चित चंचल चपल संग दोखु लेप (१६१-७)
गुरमुखि होइ इेक टेक ठहरावई ॥१६१॥ (१६१-८)

सागर मथत जैसे निकसे अंमृत बिखु (१६२-१)
परउपकार न बिकार समसरि है । (१६२-२)
बिखु अचवत होत रतन बिनास काल (१६२-३)
अचइे अंमृत मूइे जीवत अमर है । (१६२-४)
जैसे तारो तारी इेक लोसट सै प्रगट हुइ (१६२-५)
बंध मोख पदवी संसार बिसथर है । (१६२-६)
तैसे ही असाध साध सन अउ मजीठ गति (१६२-७)
गुरमति दुरमति टेवसै न टर है ॥१६२॥ (१६२-८)

बरखा संजोग मुकताहल एरा प्रगास (१६३-१)
परउपकार अउ बिकारी तउ कहावई । (१६३-२)
एरा बरखत जैसे धान पास को बिनासु (१६३-३)
मुकता अनूप रूप सभा सोभा पावई । (१६३-४)
एरा तउ बिकार धारि देखत बिलाइि जाइि (१६३-५)
परउपकार मुकता जिउ ठहिरावई । (१६३-६)
तैसे ही असाध साध संगति सुभाव गति (१६३-७)

गुरमति दुरमति दुरै न दुरावई ॥१६३॥ (१६३-८)

लजा कुल अंकसु अउ गुरजन सील डील (१६४-१)
कुलाबधू ब्रत कै पतिब्रत कहावई । (१६४-२)
दुसट सभा संजोग अधम असाध संगु (१६४-३)
बहु बिबिचार धारि गनका बुलावई । (१६४-४)
कुलाबधू सुत को बखानीअत गोत्राचार (१६४-५)
गनिका सुआन पिता नामु को बतावई । (१६४-६)
दुरमति लागि जैसे कागु बन बन फिरै (१६४-७)
गुरमति ह्मस इेक टेक जसु भावई ॥१६४॥ (१६४-८)

मानस जनमु धारि संगति सुभाव गति (१६५-१)
गुर ते गुरमति दुरमति बिबिधि बिधानी है । (१६५-२)
साधुसंगि पदवी भगति अउ बिबेकी जन (१६५-३)
जीवनमुकति साधू ब्रहमगिआनी है । (१६५-४)
अधम असाध संग चोर जार अउ जूआरी (१६५-५)
ठग बटवारा मतवारा अभिमानी है । (१६५-६)
अपुने अपुने रंग संग सुखु मानै बिसु (१६५-७)
गुरमति गति गुरमुखि पहिचानी है ॥१६५॥ (१६५-८)

जैसे तउ असटधातू डारीअत नाउ बिखै (१६६-१)
पारि परै ताहि तऊ वार पार सोई है । (१६६-२)
सोई धातु अगनि मै हत है अनिक रूप (१६६-३)
तऊ जोई सोई पै सु घाट ठाट होई है । (१६६-४)
सोई धातु पारसि परस पुनि कंचन हुइ (१६६-५)
मोलकै अमोलानूप रूप अवलोई है । (१६६-६)
परम पारस गुर परसि पारस होत (१६६-७)
संगति हुइ साधसंग सतसंग पेई है ॥१६६॥ (१६६-८)

जैसे घर लागै आगि भागि निकसत खान (१६७-१)
प्रीतम परोसी धाइि जरत बुझावई । (१६७-२)
गोधन हरत जैसे करत पूकार गोप (१६७-३)
गाउ मै गुहार लागि तुरत छडावई । (१६७-४)
बूडत अथाह जैसे प्रबल प्रवाह बिखै (१६७-५)
पेखत पैरऊआ वार पार लै लगावई । (१६७-६)
तैसे अंत काल जम जाल काल बिआल ग्रसे (१६७-७)
गुरसिख साध संत संकट मिटावही ॥१६७॥ (१६७-८)

निहकाम निहक्रोध निरलोभ निरमोह (१६८-१)
निहमेव निहटेव, निरदोख वासी है । (१६८-२)
निरलेप, निरबान, निनिरमल निरबैर (१६८-३)

निरबिघनाइि निरालंब अबिनासी है । (१६८-४)
निराहार निराधार निरंकार निरबिकार (१६८-५)
निहचल निहभ्राति निरभै निरासी है । (१६८-६)
निहकरम, निहभरम निहसरम निहसांद (१६८-७)
निरबिवाद निरंजन सुंनि मै संनिआसी है ॥१६८॥ (१६८-८)

गुरमुखि सबद सुरति लिव साधसंगि (१६९-१)
परमदभुत प्रेम पूरन प्रगासे है । (१६९-२)
प्रेम रंग मे अनेक रंग जिउ तरंग गंग (१६९-३)
प्रेमरस मे अनेक रस हुइि बिलासे है । (१६९-४)
प्रेम गंध संधि मै सुगंध संबंध कोटि (१६९-५)
प्रेम स्र्ुति अनिक अनाहद उलासे है । (१६९-६)
प्रेम असपरस कोमलता सीतलता कै (१६९-७)
अकथ कथा बिनोद बिसम बिसांसे है ॥१६९॥ (१६९-८)

प्रेम रंग समसरि पुजिसि न कोऊ रंग (१७०-१)
प्रेम रंग पुजिसि न अनरस समानि कै । (१७०-२)
प्रेम गंध पुजिसि न आन कोऊऔ सुगंध (१७०-३)
प्रेम प्रभुता पुजसि प्रभुता न आन कै । (१७०-४)
प्रेम तोलु तुलि न पुजसि नही बोल कतुलाधार (१७०-५)
मोल प्रेम पुजसि न सरब निधान कै । (१७०-६)
इेक बोल प्रेम कै पुजसि नही बोल कोऊऔ (१७०-७)
गिआन उनमान अस थकत कोटानि कै १७०॥ (१७०-८)

पूरन ब्रहम गुर चरन कमल जस (१७१-१)
आनद सहज सुख बिसम कोटानि है । (१७१-२)
कोटनि कोटानि सोभ लोभ कै लभित होइि (१७१-३)
कोटनि कोटानि छबि छबि कै लुभानि है । (१७१-४)
कोमलता कोटि लोटपोट हुइि कोमलता कै (१७१-५)
सीतलता कोटि एट चाहत हिरानि है । (१७१-६)
अंमृत कोटानि अनहद गद गद होत (१७१-७)
मन मधुकर तिह संपट समानि है ॥१७१॥ (१७१-८)

सोवत पै सुपन चरित चित्र देखीए चाहे (१७२-१)
सहज समाधि बिखै उनमनी जोति है । (१७२-२)
सुरापान सांद मतवारा प्रति प्रसन्न जिउ (१७२-३)
निझर अपार धार अनभै उदोत है । (१७२-४)
बालक पै नाद बाद सबद बिधान चाहै (१७२-५)
अनहद धुनि रुनझुन स्र्ुति स्रोत है । (१७२-६)
अकथ कथा बिनोद सोई जानै जामै बीतै (१७२-७)
चंदन सुगंध जिउ तरोवर न गोत है ॥१७२॥ (१७२-८)

प्रेमरस को प्रतापु सोई जानै जामै बीते (१७३-१)
मदन मदोन मतिवारो जग जानीऔ । (१७३-२)
घूरम होइि घाइिल सो घूमत अरुन दृग (१७३-३)
मित्र सत्रता निलज लजा हू लजानीऔ । (१७३-४)
रसना रसीली कथा अकथ कै मोनब्रत (१७३-५)
अनरस रहित उतर बखानीऔ । (१७३-६)
सुरति संकोच समसरि असतुति निंदा (१७३-७)
पग डगमग जत कत बिसमानीऔ ॥१७३॥ (१७३-८)

तनक ही जावन कै दूध दध होत जैसे (१७४-१)
तनक ही काँजी परै दूध फट जात है । (१७४-२)
तनक ही बीज बोइि बिरख बिथार होइि (१७४-३)
तनक ही चिनग परे भसम हुइि समात है । (१७४-४)
तनक ही खाइि बिखु होत है बिनास काल (१७४-५)
तनक ही अंमृत कै अमरु होइि गात है । (१७४-६)
संगति असाध साध गनिका बिवाहिता जिउ (१७४-७)
तनक मै उपकार अउबिकार घात है ॥१७४॥ (१७४-८)

साधु संगि दृसटि दरस कै ब्रहम धिआन (१७५-१)
सोई तउ असाधि संगि दृसटि बिकार है । (१७५-२)
साधु संगि सबद सुरति कै ब्रहम गिआन (१७५-३)
सोई तउ असाध संगि बादु अह्मकार है । (१७५-४)
साधु संगि असन बसन कै महा प्रसाद (१७५-५)
सोई तउ असाध संगि बिकम अहार है । (१७५-६)
दुरमति जनम मरन हुइि असाध संगि (१७५-७)
गुरमति साधसंगि मुकति दुआर है ॥१७५॥ (१७५-८)

गुरमति चरम दृसटि दिबि दृसटि हुइि (१७६-१)
दुरमति लोचन अछत अंध कंध है । (१७६-२)
गुरमति सुरति कै बजर कपाट खुले (१७६-३)
देरमति कठिन कपाट सनबंध है । (१७६-४)
गुरमति प्रेमरस अंमृत निधान पान (१७६-५)
दुरमति मुखि दुरबचन दुगंध है । (१७६-६)
गुरमति सहज सुभाइि न हरख सोग (१७६-७)
दुरमति बिग्रह बिरोध क्रोध संधि है ॥१७६॥ (१७६-८)

दुरमति गुरमति संगति असाध साध (१७७-१)
काम चेसटा संजोग जत सतवंत है । (१७७-२)
क्रोध के बिरोध बिखै सहज संतोख मोख (१७७-३)
लोभ लहरंतर धरम धीर जंत है । (१७७-४)

माइिआ मोह द्रोह कै अरथ परमारथ सै (१७७-५)
अह्ममेव टेव दइिआ द्रवीभूत संत है । (१७७-६)
दुक्रित सुक्रित चित मित्र सत्रता सुभाव (१७७-७)
परउपकार अउ बिकार मूल मंत है ॥१७७॥ (१७७-८)

सतिगुर सिख रिदै प्रथम क्रिपा कै बसै (१७८-१)
ता पाछै करत आगिआ मइिआ कै मनावई । (१७८-२)
आगिआ मानि गिआन गुर परम निधान दान (१७८-३)
गुरमुखि सुखि फल निजपद पावई । (१७८-४)
नाम निहकाम धाम सहज समाधि लिव (१७८-५)
अगम अगाधि कथा कहत न आवई । (१७८-६)
जैसो जैसो भाउ करि पूजत पदारबिंद (१७८-७)
सकल संसार कै मनोरथ पुजावई ॥१७८॥ (१७८-८)

जैसे पृअ भेटत अधान निरमान होत (१७९-१)
बाँछत बिधान खान पान अग्रभागि है । (१७९-२)
जनमत सुत खान पान को संजमु करै (१७९-३)
सुत हित रस कस सकलतिआगि है । (१७९-४)
तैसे गुर चरन सरनि कामना पुजाइि (१७९-५)
नाम निहकाम धाम अनत न लागि है । (१७९-६)
निसि अंधकार भवसागर संसार बिखै (१७९-७)
पंच तसकर जीति सिख ही सुजागि है ॥१७९॥ (१७९-८)

सतिगुर आगिआ प्रतिपालक बालक सिख (१८०-१)
चरन कमल रज महिमा अपार है । (१८०-२)
सिव सनकादिक ब्रहमादिक न गंमिता है (१८०-३)
निगम सेखादि नेत नेत कै उचार है । (१८०-४)
चतुर पदारथ तृकाल तृभवन चाहै (१८०-५)
जोग भोग सुरसर सरधा संसार है । (१८०-६)
पूजन के पूज अरु पावन पवित्र करै (१८०-७)
अकथ कथा बीचार बिमल बिथार है ॥१८०॥ (१८०-८)

गुरमुखि सुखि फल चाखत भई उलटी (१८१-१)
तन सनातन मन उनमन माने है । (१८१-२)
दुरमति उलटि भई है गुरमति रिदै (१८१-३)
दुरजन सुरजन करि पहिचाने है । (१८१-४)
संसारी सै उलटि पलटि निरंकारी भइे (१८१-५)
बग बंस ह्मस भइे सतिगुर गिआने है । (१८१-६)
कारन अधीन दीन कारन करन भइे (१८१-७)
हरन भरन भेद अलख लखाने है ॥१८१॥ (१८१-८)

गुरमुखि सुखफल चाखत उलटी भई (१८२-१)
जोनि कै अजोनि भइे कुल अकुलीन है । (१८२-२)
जंतन ते संत अउ बिनासी अबिनासी भइे (१८२-३)
अधम असाध भइे साध परबीन है । (१८२-४)
लालची ललूजन ते पावन कै पूज कीने (१८२-५)
अंजन जगत मै निरंजनई दीन है । (१८२-६)
काटि माइिआ फासी गुर गृह मै उदासी कीने (१८२-७)
अनभै अभिआसी पृआ प्रेमरस भीन है ॥१८२॥ (१८२-८)

सतिगुर दरस धिआन असचरजमै (१८३-१)
दरससनी होत खट दरस अतीत है । (१८३-२)
सतिगुर चरन सरनि निहकाम धाम (१८३-३)
सेवकु न आन देव सेव की न प्रीति है । (१८३-४)
सतिगुर सबद सुरति लिव मूलमंत्र (१८३-५)
आन तंत्र मंत्र की न सिखन प्रतीति है । (१८३-६)
सतिगुर क्रिपा साधसंगति पंगति सुख (१८३-७)
ह्मस बंस मानसरि अनत न चीत है ॥१८३॥ (१८३-८)

घोसला मै अंडा तजि उडत अकासचारी (१८४-१)
संधिआ समै अंडा होति चेति फिरि आवई । (१८४-२)
तिरीआ तिआग सुत जात बन खंड बिखै (१८४-३)
सुत की सुरति गृह आइि सुक पावई । (१८४-४)
जैसे जल कुंड करि छाडीअत जलचरी (१८४-५)
जब चाहे तब गहि लेत मनि भावई । (१८४-६)
तैसे चित चंचल भ्रमत है चतुरकुंट (१८४-७)
सतिगुर बोहिथ बिह्मग ठहरावई ॥१८४॥ (१८४-८)

चतुर बरन मै न पाइअै बरन तेसो (१८५-१)
खट दरसन मै न दरसन जोति है । (१८५-२)
सिंमृति पुरान बेद सासत्र समानि खान (१८५-३)
राग नाद बाद मै न सबद उदोत है । (१८५-४)
नाना बिमजनादि संाद अंतरि न प्रेमरस (१८५-५)
सकल सुगंध मै न गंधि संधि होत है । (१८५-६)
उसन सीतलता सपरस अपरस न (१८५-७)
गरमुख सुख फळ तुलि एतपोत है ॥१८५॥ (१८५-८)

लिखनु पड़न तउ लउ जानै दिसंतर जउ लउ (१८६-१)
कहत सुनत है बिदेस के संदेस कै । (१८६-२)
देखत अउ देखीअत इत उत दोइि होइि (१८६-३)
भेटत परसपर बिरह अवेस कै । (१८६-४)
खोइि खोइि खोजी होइि खोजत चतुर कुंट (१८६-५)

मृग मद जुगति न जानत प्रवेस कै । (१८६-६)
गुरसिख संधि मिले अंतरि अंतरजामी (१८६-७)
सामी सेव सेवक निरंतरि आदेस कै ॥१८६॥ (१८६-८)

दीपक पतंग संग प्रीति इकअंगी होइ (१८७-१)
चंद्रमा चकोर घन चातृक नु होत है । (१८७-२)
चकई अउ सूर जलि मीन जिउ कमल अलि (१८७-३)
कासट अगन मृग नाद को उदोत है । (१८७-४)
पित सुत हित अरु भामनी भतार गति (१८७-५)
माइआ अउ संसार दुआर मिटत न छोति है । (१८७-६)
गुरसिख संगति मिलाप को प्रताप साचो (१८७-७)
लोक परलोक सुखदाई एतिपोति है ॥१८७॥ (१८७-८)

लोगन मै लोगाचार अनिक प्रकार पिआर (१८८-१)
मिथन बिउहार दुखदाई पहचानीऐ । (१८८-२)
बेद मिरजादा मै कहत है कथा अनेक (१८८-३)
सुनीऐ न तैसी प्रीति मन मै न मानीऐ । (१८८-४)
गिआन उनमान मै न जगत भगत बिखै (१८८-५)
रागनाद बादि आदि अंति हू न जानीऐ । (१८८-६)
गुरसिख संगति मिलाप को प्रतापु जैसो (१८८-७)
तैसो न तृलोक बिखे अउर उर आनीऐ॥१८८॥ (१८८-८)

पूरन ब्रहम गुर पूरन क्रिपा जउ करै (१८९-१)
हरै हउमै रोगु रिदै निंम्रता निवास है । (१८९-२)
सबद सुरति लिवलीन साधसंगि मिलि (१८९-३)
भावनी भगति भाइ दुबिधा बिनास है । (१८९-४)
प्रेमरस अंमृत निधान पान पूरन होइ (१८९-५)
बिसम बिसवास बिखै अनभै अभिआस है । (१८९-६)
सहज सुभाइ चाइ चिंता मै अतीत चीत (१८९-७)
सतिगुर सति गुरमति गुरदास है ॥१८९॥ (१८९-८)

गुरमुखि सबद सुरति लिव साधसंगि (१९०-१)
तृगुन अतीत चीत आसा मै निरास है । (१९०-२)
नाम निहकाम धाम सहज सुभाइ रिदै (१९०-३)
बरतै बरतमान गिआन को प्रगास है । (१९०-४)
सूखम सथल इेक अउ अनेकमेक (१९०-५)
ब्रहम बिबेक टेक ब्रहम बिसवास है । (१९०-६)
चरन सरनि लिव आपा खोइ हुइ रेन (१९०-७)
सतिगुर सत गुरमति गुरदास है ॥१९०॥ (१९०-८)

हउमै अभिमान कै अगिआनता अवगिआ गुर (१९१-१)

निੴदी गुरदासन कै नाम गुरदास है । (१६१-२)
महुरा कहावै मीठा गई सो कहावै आई (१६१-३)
रूठी कउ कहत तुठी होत उपहास है । (१६१-४)
बाँझ कहावै सपूती दुहागनि सुहागनि कुरीति (१६१-५)
सुरीति काटिए नकटा को नास है । (१६१-६)
बावरो कहावै भोरो आँधरै कहै सुजाखो (१६१-७)
चंदन समीप जैसे बासु न सुबास है ॥१६१॥ (१६१-८)

गुरसिख इेक मेक रोम न पुजसि कोटि (१६२-१)
होम जगि भोग नईबेद पूजाचार है । (१६२-२)
जोग धिआन गिआन अधिआतम रिधि सिधि निध (१६२-३)
जल तल संजमादि अनिक प्रकार है । (१६२-४)
सिंमृति पुरान बेद सासत्र अउ साअंगीत (१६२-५)
सुरसर देव सबल माइिआ बिसथार है । (१६२-६)
कोटनि कोटानि सिख संगति असंख जाकै (१६२-७)
स्रीगुर चरन नेत नेत नमसकार है ॥१६२॥ (१६२-८)

चरन कमल रज गुरसिख माथै लागी (१६३-१)
बाछत सकल गुरसिख पग रेन है । (१६३-२)
कोटनि कोटानि कोटि कमला कलपतर (१६३-३)
पारस अंमृत चिंतामनि कामधेन है । (१६३-४)
सुरि नर नाथ मुनि तृभवन अउ तृकाल (१६३-५)
लोग बेद गिआन उनमान जेन केन है । (१६३-६)
कोटनि कोटानि सिख संगति असंख जाकै (१६३-७)
नमो नमो गुरमुख सुख फल देन है ॥१६३॥ (१६३-८)

गुरसिख संगति मिलाप को प्रतापु अति (१६४-१)
भावनी भगत भाइि चाइि कै चईले है । (१६४-२)
दृसटि दरस लिव अति असचरजमै (१६४-३)
बचन तंबोल संग रंग हुइि रंगीले है । (१६४-४)
सबद सुरति लिव लीन जल मीन गति (१६४-५)
प्रेमरस अंमृत कै रसिक रसीले है । (१६४-६)
सोभा निधि सोभ कोटि एट लोभ कै लुभित (१६४-७)
कोटि छबि छाह छिपै छबि कै छबीले है ॥१६४॥ (१६४-८)

गुरसिख इेकमेक रोम की अकथ कथा (१६५-१)
गुरसिख साधसंगि महिमा को पावई । (१६५-२)
इेक एअंकार के बिथार को न पारावारु (१६५-३)
सबद सुरति साधसंगति समावई । (१६५-४)
पूरन ब्रहम गुर साध संगि मै निवास (१६५-५)
दासन दासान मति आपा न जतावई । (१६५-६)

सतिगुर गुर गुरसिख साधसंगति है (१६५-७)
एतिपोति जोति वाकी वाही बनि आवई ॥१६५॥ (१६५-८)

पवनहि पवन मिलत नही पेखीअत (१६६-१)
सलिले सलिल मिलत ना पहिचानीऐ । (१६६-२)
जोती मिले जोति होत भिन्न भिन्न कैसे करि (१६६-३)
भसमहि भसम समानी कैसे जानीऐ । (१६६-४)
कैसे पंचतत मेलु खेलु होत पिंड प्रान (१६६-५)
बिछुरत पिंड प्रान कैसे उनमानीऐ । (१६६-६)
अबिगत गति अति बिसम असचरजमै (१६६-७)
गिआन धिआन अगमिति कैसे उर आनीऐ ॥१६६॥ (१६६-८)

चारकुंट सातदीप मै न नवखंड बिखै (१६७-१)
दहिदिस देखीऐ न बन गृह जानीऐ । (१६७-२)
लोग बेद गिआन उनमान कै न देखिए सुनिए (१६७-३)
संरग पइआल मृतमंडल न मानीऐ । (१६७-४)
भूत अउ भविख न बरतमान चारोजुग (१६७-५)
चतर बरन खट दरस न धिआनीऐ । (१६७-६)
गुरसिख संगति मिलाप को प्रताप जैसे (१६७-७)
तैसो अउर ठउर सुनीऐ न पहिचानीऐ ॥१६७॥ (१६७-८)

उख मै पिऊख रस रसना रहित होइ (१६८-१)
चंदन सुबास तास नासका न होत है । (१६८-२)
नाद बाद सुरति बिहून बिसमाद गति (१६८-३)
बिबिध बरन बिनु दृसटि सो जोति है । (१६८-४)
पारस परस न सपरस उसन सीत (१६८-५)
कर चरन हीन धर अउखदी उदोत है । (१६८-६)
जाइ पंच दोख निरदोख मोख पावै कैसे (१६८-७)
गुरमुखि सहज संतोख हुइ अछोत है ॥१६८॥ (१६८-८)

निहफल जिहबा है सबद सुआदि हीन (१६९-१)
निहफल सुरति न अनहद नाद है । (१६९-२)
निहफल दृसटि न आपा आपु देखीअति (१६९-३)
निहफल सांसे नही बासु परमादु है । (१६९-४)
निहफल कर गुर पारस परस बिनु (१६९-५)
गुरमुखि मारग बिहून पग बादि है । (१६९-६)
गुरमुखि अंग अंग पंग सरबंग लिव (१६९-७)
सबद सुरति साधसंगति प्रसादि है ॥१६९॥ (१६९-८)

पसूआ मानुख देह अंतरि अंतरु इहै (२००-१)
सबद सुरति को बिबेक अबिबेक है । (२००-२)

पसु हरिहाउ कहिए सुनिए अनसुनिए करै (२००-३)
मानस जनम उपदेस रिदै टेक है । (२००-४)
पसूआ सबद हीन जिहबा न बोलि सकै (२००-५)
मानस जनम बोलै बचन अनेक है । (२००-६)
सबद सुरति सुनि समझि बोलै बिबेकी (२००-७)
नातुर अचेत पसु प्रेत हू मै इेक है ॥२००॥ (२००-८)

खड़ खाइे अंमृत प्रवाह को सुआउ है । (२०१-१)
गोबर गोमूत्र सूत्र परम पवित्र भइे (२०१-२)
मानस देही निखिध अंमृत अपिआउ है । (२०१-३)
बचन बिबेक टेक साधन कै साध भइे (२०१-४)
अधम असाध खल बचन दुराउे है । (२०१-५)
रसना अंमृत रस रसिक रसाइिन हुइि (२०१-६)
मानस बिखै धर बिखम बिखु ताउ है ॥२०१॥ (२०१-७)

पसू खड़ि खात खल सबद सुरति हीन (२०२-१)
मोनि को महातमु पै अंमृत प्रवाह जी । (२०२-२)
नाना मिसटान खान पान मानस मुख (२०२-३)
रसना रसीली होइि सोई भली ताहि जी । (२०२-४)
बचन बिबेक टेक मानस जनम फल (२०२-५)
बचन बिहून पसु परमिति आहि जी । (२०२-६)
मानस जनम गति बचन बिबेक हीन (२०२-७)
बिखधर बिखम चकत चितु चाहि जी ॥२०२॥ (२०२-८)

दरस धिआन बिरहा बिआपै दृगन हुइि (२०३-१)
स्रवन बिरहु बिआपै मधुर बचन कै । (२०३-२)
संगम समागम बिरहु बिआपै जिहबा कै (२०३-३)
पारस परस अंकमाल की रचन कै । (२०३-४)
सिहजा गवन बिरहा बिआपै चरन हुइि (२०३-५)
प्रेमरस बिरह स्रबंग हुइि सचन कै । (२०३-६)
रोम रोम बिरह बृथा कै बिहबल भई (२०३-७)
ससा जिउ बहीर पीर प्रबल तचन कै ॥२०३॥ (२०३-८)

किंचत कटाछ किपा बदन अनूप रूप (२०४-१)
अति असचरजमै नाइिक कहाई है । (२०४-२)
लोचन की पुतरी मै तनक तारका सिआम (२०४-३)
ताको प्रतिबिंब तिल बनिता बनाई है । (२०४-४)
कोटनि कोटानि छबि तिल छिपत छाह (२०४-५)
कोटनि कोटानि सोभ लोभ ललचाई है । (२०४-६)
कोटि ब्रहमंड के नाइिक की नाइिका भई (२०४-७)
तिल के तिलक सरब नाइिका मिटाई है ॥२०४॥ (२०४-८)

सुपन चरित्र चित्र बानक बने बचित्र (२०५-१)
पावन पवित्र मित्र आज मेरै आइे है । (२०५-२)
परम दइआल लाल लोचन बिसाल मुख (२०५-३)
बचन रसाल मधु मधुर पीआइे है । (२०५-४)
सोभित सिजासन बिलासन दै अंकमाल (२०५-५)
प्रेमरस बिसम हुइ सहज समाइे है । (२०५-६)
चातृक सबद सुनि अखीआ उघरि गई (२०५-७)
भई जल मीन गति बिरह जगाइे है ॥२०५॥ (२०५-८)

देखबे कउ दृसटि न दरस दिखाइबे कउ (२०६-१)
कैसे पृअ दरसनु देखीअै दिखाईअै । (२०६-२)
कहिबे कउ सुरति है न स्रवन सुनबे कउ (२०६-३)
कैसे गुननिधि गुन सुनीअै सुनाईअै । (२०६-४)
मन मै न गुरमति गुरमति मै न मन (२०६-५)
निहचल हुइ न उनमन लिव लाईअै । (२०६-६)
अंग अंग भंग रंग रूप कुलहीन दीन (२०६-७)
कैसे बहनाइक की नाइका कहाईअै ॥२०६॥ (२०६-८)

बिरह बिएग रोगु दुखति हुइ बिरहनी (२०७-१)
कहत संदेस पथिकन पै उसास ते । (२०७-२)
देखह तृगद जोनि प्रेम कै परेवा (२०७-३)
पर कर नारि देखि टटत अकास ते । (२०७-४)
तुम तो चतुरदस बिदिआ के निधान पृअ (२०७-५)
तृअ न छडावहु बिरह रिप रिप त्रास ते । (२०७-६)
चरन बिमुख दुख तारिका चमतकार (२०७-७)
हेरत हिराहि रवि दरस प्रगास ते ॥२०७॥ (२०७-८)

जोई पृअ भावे ताहि देखि अउ दिखावे आप (२०८-१)
दृसटि दरस मिलि सोभा दै सुहावई (२०८-२)
जोई पृअ भावै मुख बचन सुनावे ताहि (२०८-३)
सबदि सुरति गुर गिआन उपजावई (२०८-४)
जोई पृअ भावै दहदिसि प्रगटावै ताहि (२०८-५)
सोई बहुनाइक की नाइका कहावई । (२०८-६)
जोई पृअ भावै सिहजासनि मिलाव ताहि (२०८-७)
प्रेमरस बस करि अपीउ पीआवई ॥२०८॥ (२०८-८)

जोई पृअ भावै ताहि सुंदरता कै सुहावै (२०९-१)
सोई सुंदरी कहावै छबि कै छबीली है । (२०९-२)
जोई पृअ भावै ताहि बानक बधू बनावै (२०९-३)
सोई बनता कहावै रंग मै रंगीली है । (२०९-४)

जोई पृअ भावै ताकी सबै कामना पुजावै (२०६-५)
सोई कामनी कहावै सील कै सुसीली है । (२०६-६)
जोई पृअ भावै ताहि प्रेमरस लै पीआवै (२०६-७)
सोई प्रेमनी कहावै रसक रसीली है ॥२०६॥ (२०६-८)

बिरह बिएग सोग सेत रूप हुइ कितास (२१०-१)
सभ टूक टूक भइे पाती लिखीऔ बिदेस ते । (२१०-२)
बिरह अगनि से सवानी मासु किसन हुइ (२१०-३)
बिरहनी भेख लेख बिखम संदेस ते । (२१०-४)
बिरह बिएग रोग लेखनि की छाती फाटी (२१०-५)
रुदन करत लिखै आतम अवेस ते । (२१०-६)
बिरह उसासन प्रगासन दुखित गति (२१०-७)
बिरहर्नी कैसे जीऔ बिरह प्रवेस ते ॥२१०॥ (२१०-८)

पुरब संजोग मिलि सुजन सगाई होत (२११-१)
सिमरत सुनि सुनि स्रवन संदेस कै । (२११-२)
बिधि सै बिवाहे मिलि दृसटि दरस लिव (२११-३)
बिदिमान धिआन रस रूप रंग भेस कै । (२११-४)
रैन सैन समै स्रुत सबद् बिबेक टेक (२११-५)
आतम गिआन परमातम प्रवेस कै । (२११-६)
गिआन धिआन सिमरन उलंघ इिकत्र होइि (२११-७)
प्रेमरस बसि होत बिसम अवेस कै ॥२११॥ (२११-८)

इेक सै अधिक इेक नाइिका अनेक जाकै (२१२-१)
दीन कै दइिआल हुइि क्रिपाल क्रिपाधारी है । (२१२-२)
सजनी रजनी ससि प्रेमरस अउसर मै (२१२-३)
अबले अधीन गति बेनती उचारी है । (२१२-४)
जोई जोई आगिआ होइि सोई सोई मानि जानि (२१२-५)
हाथ जोरे अग्रभागि होइि आगिआकारी है । (२१२-६)
भावनी भगति बाइि चाइिकै चईलो भजउ (२१२-७)
सफल जनमु धंनि आज मेरी बारी है ॥२१२॥ (२१२-८)

प्रीतम की पुतरी मै तनक तारका सिआम (२१३-१)
ताको प्रतिबिंबु तिलु तिलकु तृलोक को । (२१३-२)
बनिता बदन परि प्रगट बनाइि राखिए (२१३-३)
कामदेव कोटि लोटपोट अविलोक को । (२१३-४)
कोटनि कोटानि रूप की अनूप रूप छबि (२१३-५)
सकल सिंगारु को सिंगारु स्रब थोक को । (२१३-६)
किंचत कटाछ क्रिपा तिलकी अतुल सोभा (२१३-७)
सुरसती कोट मान भंग धिआन कोक को ॥२१३॥ (२१३-८)

स्रीगुर दरस धिआन खट दरसन देखै (२१४-१)
सकल दरस सम दरस दिखाइे है । (२१४-२)
स्रीगुर सबद पंच सबद गिआन गंमि (२१४-३)
सरब सबद अनहद समझाइे है । (२१४-४)
मंत्र उपदेस परवेस कै अवेस रिदै (२१४-५)
आदि कउ आदेस कै ब्रहम ब्रहमाइे है । (२१४-६)
गिआन धिआन सिमरन प्रेमरस रसिक हुइि (२१४-७)
इेक अउ अनेक के बिबेक प्रगटाइे है ॥२१४॥ (२१४-८)

सति बिनु संजमु न पति बिनु पूजा होइि (२१५-१)
सच बिनु सोच न जनेऊ जतहीन है । (२१५-२)
बिनु गुरदीखिआ गिआन बिनु दरसन धिआन (२१५-३)
भाउ बिनु भगति न कथनी भै भीन है । (२१५-४)
साँति न संतोख बिनु सुखु न सहज बिनु (२१५-५)
सबद सुरति बिनु प्रेम न प्रबीन है । (२१५-६)
ब्रहम बिबेक बिनु हिरदै न इेक टेक (२१५-७)
बिनु साधसंगत न रंग लिव लीन है ॥२१५॥ (२१५-८)

चरन कमल मकरंद रस लुभित हुइि (२१६-१)
चरन कमल ताहि जग मधुकर है । (२१६-२)
स्रीगुर सबद धुनि सुनि गद गद होइि (२१६-३)
अंमृत बचन ताहि जगत उदरि है । (२१६-४)
किंचत कटाछ क्रिपा गुर दइिआ निधान (२१६-५)
सरब निधान दान दोख दुख हरि है । (२१६-६)
स्री गुर दासन दास दासन दासान दास (२१६-७)
तास न इिंद्रादि ब्रहमादि समसरि है ॥२१६॥ (२१६-८)

जब ते परम गुर चरन सरनि आइे (२१७-१)
चरन सरनि लिव सकल संसार है । (२१७-२)
चरन कमल मकरंद चरनामृत कै (२१७-३)
चाहत चरन रेन सकल अकार है । (२१७-४)
चरन कमल सुख संपट सहज घरि (२१७-५)
निहचल मति परमारथ बीचार है । (२१७-६)
चरन कमल गुर महिमा अगाधि बोधि (२१७-७)
नेत नेत नेत नमो कै नमसकार है ॥२१७॥ (२१७-८)

चरन कमल गुर जब ते रिदै बसाइे (२१८-१)
तब ते असथिरि चिति अनत न धावही । (२१८-२)
चरन कमल मकरंद चरनामृत कै (२१८-३)
प्रापति अमर पद सहजि समावही । (२१८-४)
चरन कमल सुख मन मै निवास कीए (२१८-५)

आन सुख तिआग हरि नाम लिव लावही । (२१८-६)
चरन कमल मकरंद वासना निवास (२१८-७)
आन वास फीकी भई हिरदै न भावई ॥२१८॥ (२१८-८)

बारी बहुनाइिक की नाइिका पिआरी केरी (२१६-१)
घेरी आनि प्रबल हुइि न्रिंदा नैन छाइिकै । (२१६-२)
प्रेमनी पतिब्रता चइिली पृआ अगम की (२१६-३)
निंद्रा को निरादर कै सोई न भै भाइि कै । (२१६-४)
सखी हुती सोत थी भई गई सुकदाइिक पै (२१६-५)
जहा के तही लै राखे संगम सुलाइि कै । (२१६-६)
सुपन चरित्र मै न मित्रहि मिलन दीनी (२१६-७)
जम रूप जामनी न निबरै बिहाइि कै ॥२१६॥ (२१६-८)

रूप हीन कुल हीन गुन हीन गिआन हीन (२२०-१)
सोभा हीन भाग हीन तप हीन बावरी । (२२०-२)
दृसटि दरस हीन सबद सुरति हीन (२२०-३)
बुधि बल हीन सूधे हसत न पावरी । (२२०-४)
प्रीत हीन रीति हीन भाइि भै प्रतीत हीन (२२०-५)
चित हीन बित हीन सहज सुभावरी । (२२०-६)
अंग अंगहीन दीनाधीन पराचीन लगि (२२०-७)
चरन सरनि कैसे प्रापत हुइि रावरी ॥२२०॥ (२२०-८)

जननी सुतहि बिखु देत हेतु कउन राखै (२२१-१)
घरु मुसै पाहरूआ कहो कैसे राखीऔ । (२२१-२)
करीआ जउ बोरै नाव कहो कैसे पावै पारु (२२१-३)
अगूआ ऊबाट पारै कापै दीनु भाखीऔ । (२२१-४)
खैते जउ खाइि बारि कउन धाइि राखनहारु (२२१-५)
चकवै करै अनिआउ पूछै कउनु साखीऔ । (२२१-६)
रोगीऔ जउ बैदु मारै मित्र जउ कमावै द्रोहु (२२१-७)
गुर न मुकतु का पै अभलाखीऔ ॥२२१॥ (२२१-८)

मन मधुकरि गति भ्रमत चतुर कुंट (२२२-१)
चरन कमल सुख संपट समाईऔ । (२२२-२)
सीतल सुगंध अति कोमल अनूप रूप (२२२-३)
मधु मकरंद तस अनत न धाईऔ । (२२२-४)
सहज समाधि उनमन जगमग जोति (२२२-५)
अनहद धुनि रुनझुन लिव लाईऔ । (२२२-६)
गुरमुखि बीस इिकईस सोह्म सोई जानै (२२२-७)
आपा अपरंपर परमपदु पाईऔ ॥२२२॥ (२२२-८)

मन मृग मृगमद अछत अंतरगति (२२३-१)

भूलिए भ्रम खोजत फिरत बन माही जी । (२२३-२)
दादर सरोज गति इेकै सरवर बिखै (२२३-३)
अंतरि दिसंतर हुइ समझै नाही जी । (२२३-४)
जैसे बिखिआधर तजै न बिखि बिखम कउ (२२३-५)
अहिनिसि बावन बिरख लपटाही जी । (२२३-६)
जैसे नरपति सुपनंतर भेखारी होइि (२२३-७)
गुरमुखि जगत मै भरम मिटाही जी ॥२२३॥ (२२३-८)

बाइि हुइि बघूला बाइि मंडल फिरै तउ कहा (२२४-१)
बासना की आगि जागि जुगति न जानीअै । (२२४-२)
कूप जलु गरो बाधे निकसै न हुइि समुंद्र (२२४-३)
चील हुइि उडै न खगपति उनमानीअै । (२२४-४)
मूसा बिल खोद न जोगीसुर गुफा कहावै (२२४-५)
सरप हुइि चिरंजीव बिखु न बलानीअै । (२२४-६)
गुरमुखि तृगुन अतीत चीत हुइि अतीत (२२४-७)
हउमै खोइि होइि रेन कामधेन मानीअै ॥२२४॥ (२२४-८)

सबद सुरति लिव गुर सिख संधि मिले (२२५-१)
आतम अवेस प्रमातम प्रबीन है । (२२५-२)
ततै मिलि तत सौँतबूंद मुकताहल हुइि (२२५-३)
पारस कै पारस परसपर कीन है । (२२५-४)
जोत मिलि जोति जैसे दीपकै दिपत दीप (२२५-५)
हीरै हीरा बेधीअत आपै आपा चीन है । (२२५-६)
चंदन बनासपती बासना सुबास गति (२२५-७)
चतर बरन जन कुल अकुलीन है ॥२२५॥ (२२५-८)

गुरमति सति रिदै सतिरूप देखे दृग (२२६-१)
सतिनाम जिहबा कै प्रेमरस पाइे है । (२२६-२)
सबद बिबेक सति स्रवन सुरति नाद (२२६-३)
नासका सुगंधि सति आघ्रन अघाइे है । (२२६-४)
संत चरनाम्रत हसत अवलंब सति (२२६-५)
पारस परसि होइि पारस दिखाइे है । (२२६-६)
सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (२२६-७)
गुर सिख संधि मिले अलख लखाइे है ॥२२६॥ (२२६-८)

आतमा तृबिधी जत्र कत्र सै इिकत्र भइे (२२७-१)
गुरमति सति निहचल मन माने है । (२२७-२)
जगजीवन जग जग जगजीवन मै (२२७-३)
पूरन ब्रहमगिआन धिआन उर आने है । (२२७-४)
सूखम सथूल मूल इेक ही अनेक मेक (२२७-५)
गोरस गोबंस गति प्रेम पहिचाने है । (२२७-६)

कारन मै कारन चितृ मै चितेरो (२२७-७)
जंत्र धुनि जंत्री जन कै जनक जाने है ॥२२७॥ (२२७-८)

नाइकु है इेकु अरु नाइका असट ताकै (२२८-१)
इेक इेक नाइका के पाँच पाँच पूत है । (२२८-२)
इेक इेक पूत गृह चारि चारि नाती (२२८-३)
इेकै इेकै नाती दोइि पतनी प्रसूत है । (२२८-४)
ताहू ते अनेक पुनि इेकै इेकै पाँच पाँच (२२८-५)
ताते चारि चारि सुति संतति संभूत है । (२२८-६)
ताते आठ आठ सुता सुता सुता आठ सुत (२२८-७)
अैसो परवारु कैसे होइि इेक सूत है ॥२२८॥ (२२८-८)

इेक मनु आठ खंड खंड पाँच टूक (२२९-१)
टूक टूक चारि फार फार दोइि फार है । (२२९-२)
ताहू ते पईसे अउ पईसा इेक पाँच टाँक (२२९-३)
टाँक टाँक मासे चारि अनिक प्रकार है । (२२९-४)
मासा इाक आठ रती रती आठ चावर की (२२९-५)
हाट हाट कनु कनु तोल तुलाधार है । (२२९-६)
पुर पुर पूरि रहे सकल संसार बिखै (२२९-७)
बसि आवै कैसे जाको इेतो बिसथार है ॥२२९॥ (२२९-८)

खगपति प्रबल पराक्रमी परमह्मस (२३०-१)
चातुर चतुर मुख चंचल चपल है । (२३०-२)
भुजबली असट भुजा ताके चालीस कर (२३०-३)
इेक सउ अर साठि पाउ चाल चला चल है । (२३०-४)
जाग्रत सुपन अहिनिसि दहिदिस धावै (२३०-५)
तृभवन प्रति होइि आवै इेक पल है । (२३०-६)
पिंजरी मै अछत उडत पहुचै न कोऊ (२३०-७)
पुर पुर पूर गिर तर थल जल है ॥२३०॥ (२३०-८)

जैसे पंछी उडत फिरत है अकासचारी (२३१-१)
जारि डारि पिंजरी मै राखीअति आनि कै । (२३१-२)
जैसे गजराज गहबर बन मै मदोन (२३१-३)
बसि हुइि महावत कै आकसहि मानि कै । (२३१-४)
जैसे बीखआधर बिखम बिल मै पताल (२३१-५)
गहे सापहेरा ताहि मंत्रन की कानि कै । (२३१-६)
तैसे तृभवन प्रति भ्रमत चंचल चित (२३१-७)
निहचल होत मति सतिगुर गिआन कै ॥२३१॥ (२३१-८)

रचना चरित्र चित्र बिसम बचित्रपन (२३२-१)
इेक मै अनेक भाँति अनिक प्रकार है । (२३२-२)

लोचन मै दृसटि स्रवन मै सुरति राखी (२३२-३)
नासका सुबास रस रसना उचार है । (२३२-४)
अंतर ही अंतर निरंतरीन सोत्रन मै (२३२-५)
काहू की न कोऊ जानै बिखम बीचार है । (२३२-६)
अगम चरित्र चित्र जानीऐ चितेरो कैसो (२३२-७)
नेत नेत नेत नमो नमो नमसकारि है ॥२३२॥ (२३२-८)

माइिआ छाइिआ पंचदूत भुत उदमाद ठट (२३३-१)
घट घट घटिका मै सागर अनेक है । (२३३-२)
अउध पल घटिका जुगादि परजंत आसा (२३३-३)
लहरि तरंग मै न तृसना की टेक है । (२३३-४)
मन मनसा प्रसंग धावत चतुरकुंट (२३३-५)
छिनक मै खंड ब्रहमंड जावदेक है । (२३३-६)
आधि कै बिआधि कै उपाधि कै असाध मन (२३३-७)
साधिबे कउ चरन सरनि गुर इेक है ॥२३३॥ (२३३-८)

जैसे मनु लागत है लेखक को लेखै बिखै (२३४-१)
हरि जसु लिखत न तैसो ठहिरावई । (२३४-२)
जैसे मन बनजु बिउहार के बिथार बिखै (२३४-३)
सबद सुरति अवगाहनु न भावई । (२३४-४)
जैसे मनु कनिक अउ कामनी सनेह बिखै (२३४-५)
साधसंग तैसे नेहु पल न लगावई । (२३४-६)
माइिआ बंध धंध बिखै आवध बिहाइि जाइि (२३४-७)
गुरउपदेस हीन पाछै पछुतावई ॥२३४॥ (२३४-८)

जैसे मनु धावै पर तन धन दूखना लउ (२३५-१)
स्रीगुर सरनि साधसंग लउ न आवई । (२३५-२)
जैसे मनु पराधीन हीन दीनता मै (२३५-३)
साधसंग सतिगुर सेवा न लगावई । (२३५-४)
जैसे मनु किरति बिरति मै मगनु होइि (२३५-५)
साधसंग कीरतन मै न ठहिरावई । (२३५-६)
कूकर जिउ चउव काढि चाकी चाटिबे कउ जाइि (२३५-७)
जाके मीठी लागी देखै ताही पाछै धावई ॥२३५॥ (२३५-८)

सरवर मै न जानी दादर कमल गति (२३६-१)
मृग मृगमद गति अंतर न जानी है । (२३६-२)
मनि महिमा न जानी अहि बिख्र बिखम कै (२३६-३)
सागर मै संख निधि हीन बक बानी है । (२३६-४)
चंदन समीप जैसे बाँस निरगंध कंध (२३६-५)
उलूऐ अलख दिन दिनकर धिआनी है । (२३६-६)
तैसे बाँझ बधू मम स्रीगुर पुरख भेट (२३६-७)

निहचल सेबल जिउ हउमै अभिमानी है ॥२३६॥ (२३६-८)

बरखा चतुरमास भिदो न पखान सिला (२३७-१)
निपजै न धान पान अनिक उपाव कै । (२३७-२)
उदित बसंत परफुलित बनासपती (२३७-३)
मउलै न करीरु आदि बंस के सुभाव कै । (२३७-४)
सिहजा संजोग भोग निहफल बाझ बधू (२३७-५)
हुइ न आधान दुखो दुबिधा दुराव कै । (२३७-६)
तैसे मम काग साधसंगति मराल सभा (२३७-७)
रहिए निराहार मुकताहल अपिआव कै ॥२३७॥ (२३७-८)

कपट सनेह जैसे ढोकली निवावै सीसु (२३८-१)
ताकै बसि होइ जलु बंधन मै आवई । (२३८-२)
डारि देत खेत हुइ प्रफुलित सफल ताते (२३८-३)
आपि निहफल पाछे बोझ उकतावई । (२३८-४)
अरध उरध हुइ अनुक्रम कै (२३८-५)
परउपकार अउ बिकार न मिटावई । (२३८-६)
तैसे ही असाध साध संगति सुभाव गति (२३८-७)
गुरमति दुरमति सुख दुख पावई ॥२३८॥ (२३८-८)

जैसे तउ कुचील पवित्रता अतीत माखी (२३९-१)
राखी न रहित जाइ बैठे इछाचारी है । (२३९-२)
पुनि जउ अहार सनबंध परवेसु करै (२३९-३)
जरै न अजर उकलेदु खेदु भारी है । (२३९-४)
बधिक बिधान जिउ उदिआन मै टाटी दिखाइ (२३९-५)
करै जीवघात अपराध अधिकारी है । (२३९-६)
हिरदै बिलाउ अरु नैन बग धिआनी प्रानी (२३९-७)
कपट सनेही देही अंत हुइ दुखारी है ॥२३९॥ (२३९-८)

गऊमुख बाघु जैसे बसै मृगमाल बिखै (२४०-१)
कंगन पहिरि जिउ बिलईआ खग मोहई । (२४०-२)
जैसे बग धिआन धारि करत अहार मीन (२४०-३)
गनिका सिंगार साजि बिबिचार जोहई । (२४०-४)
पंच बटवारो भेखधारी जिउ सघाती होइ (२४०-५)
अंति फासी डारि मारै द्रोह कर द्रोहई । (२४०-६)
कपट सनेह कै मिलत साधसंगति मै (२४०-७)
चंदन सुगंध बाँस गठीलो न बोहई ॥२४०॥ (२४०-८)

आदि ही अधान बिखै होइ निरमान प्रानी (२४१-१)
मास दस गनत ही गनत बिहात है । (२४१-२)
जनमत सुत स्रब कुटंब अनंदमई (२४१-३)

बालबुधि गनत बितीत निसि प्रात है । (२४१-४)
पढत बिहावीअत जोबन मै भोग बिखै (२४१-५)
बनज बिउहार के बिथार लपटात है । (२४१-६)
बढता बिआज काज गनत अवध बीती (२४१-७)
गुरउपदेस बिनु जमपुर जात है ॥२४१॥ (२४१-८)

जैसे चकई चकवा बंधिक इकत्र कीने (२४२-१)
पिंजरी मै बसे निसि दुख सुख माने है । (२४२-२)
कहत परसपर कोटि सुरजन वारउ (२४२-३)
एट दुरजन पर जाहि गहि आने है । (२४२-४)
सिमरन मात्र कोटि आपदा संपदा कोटि (२४२-५)
संपदा आपदा कोटि प्रभ बिसराने है । (२४२-६)
सतिरूप सतिनाम सतिगुर गिआन धिआन (२४२-७)
सतिगुर मति सति सति करि जाने है ॥२४२॥ (२४२-८)

पुनि कत पंचतत मेलु खेलु होइि कैसे (२४३-१)
भ्रमत अनेक जोनि कुटंब संजोग है । (२४३-२)
पुनि कत मानस जनंम निरमोलक हुइि (२४३-३)
दृसटि सबद सुरति रसकस भोग है । (२४३-४)
पुनि कत साधसंगु चरन सरनि गुर (२४३-५)
गिआन धिआन सिमरन प्रेम मधु प्रजोग है । (२४३-६)
सफलु जनमु गुरमुख सुखफल चाख (२४३-७)
जीवनमुकति होइि लोग मै अलोग है ॥२४३॥ (२४३-८)

रचन चरित्र चित्र बिसम बचितरपन (२४४-१)
चित्रहि चितै चितै चितेरा उर आनीऐ । (२४४-२)
बचन बिबेक टेक इेक ही अनेकमेक (२४४-३)
सुनि धुनि जंत्र जंत्रधारी उनमानीऐ । (२४४-४)
असन बसन धन सरब निधान दान (२४४-५)
करुनानिधान सुखदाई पहिचानीऐ । (२४४-६)
कथता बकता स्रोता दाता भ्रगता (२४४-७)
स्रबगि पूरनब्रहम गुर साधसंगि जानीऐ ॥२४४॥ (२४४-८)

लोचन स्रवन मुख नासका हसत पग (२४५-१)
चिहन अनेक मन मेक जैसे जानीऐ । (२४५-२)
अंग अंग पुसट तुसटमान होत जैसे (२४५-३)
इेक मुख स्राद रस अरपत मानीऐ । (२४५-४)
मूल अेक साखा परमाखा जल जिउ अनेक (२४५-५)
ब्रहमबिबेक जावदेकि उर आनीऐ । (२४५-६)
गुरमुखि दरपन देखीआत आपा आपु (२४५-७)
आतम अवेस परमातम गिआनीऐ ॥२४५॥ (२४५-८)

जत सत सिंघासन सहज संतोख मंत्री (२४६-१)
धरम धीरज धुजा अबिचल राज है । (२४६-२)
सिवनगरी निवास दइिआ दुलहनी मिली (२४६-३)
भाग तउ भंडारी भाउ भोजन सकाज है । (२४६-४)
अरथ बीचार परमारथ कै राजनीति (२४६-५)
छत्रपति छिमा छत्र छाइिआ छब छाब है । (२४६-६)
आनद समूह सुख साँति परजा प्रसन्न (२४६-७)
जगमग जोति अनहदि धुनि बाज है ॥२४६॥ (२४६-८)

पाँचोमुंद्रा चक्रखट भेदि चक्रवहि कहाइे (२४७-१)
उलुंघि तृबेनी तृकुटी तृकाल जाने है । (२४७-२)
नवघर जीति निजआसन सिंघासन मै (२४७-३)
नगर अगमपुर जाइि ठहराने है । (२४७-४)
आनसरि तिआगि मानसर निहचल ह्मसु (२४७-५)
परमनिधान बिसमाहि बिसमाने है । (२४७-६)
उनमन मगन गगन अनहद्धुनि (२४७-७)
बाजत नीसान गिआन धिआन बिसराने है ॥२४७॥ (२४७-८)

अवघटि उतरि सरोवरि मजनु करै (२४८-१)
जपत अजपाजापु अनभै अभिआसी है । (२४८-२)
निझर अपार धार बरखा अकास बास (२४८-३)
जगमग जोति अनहद अबिनासी है । (२४८-४)
आतम अवेस परमातम प्रवेस कै (२४८-५)
अधयातम गिआन रिधि सिधि निधि दासी है । (२४८-६)
जीवनमुकति जगजीवन जुगति जानी (२४८-७)
सलिल कमलगति माइिआ मै उदासी है ॥२४८॥ (२४८-८)

चरनकमल सरनि गुर कंचन भइे मनूर (२४६-१)
कंचन पारस भइे पारस परस कै । (२४६-२)
बाइिस भइे है ह्मस ह्मस ते परमह्मस (२४६-३)
चरनकमल चरनाम्रत सुरस कै । (२४६-४)
सेबल सकल फल सकल सुगंध बासु (२४६-५)
सूकरी सै कामधेन करुना बरस कै । (२४६-६)
स्रीगुर चरन रजु महिमा अगाध बोध (२४६-७)
लोग बेद गिआन कोटि बिसम नमस कै ॥२४६॥ (२४६-८)

कोटनि कोटानि असचरज असचरजमै (२५०-१)
कोटनि कोटानि बिसमादि बिसमाद है । (२५०-२)
अदभुत परमदभुत हुइि कोटानि कोटि (२५०-३)
गदगद होत कोटि अनहदनाद है । (२५०-४)

कोटनि कोटानि उनमनी गनी जात नही (२५०-५)
कोटनि कोटानि कोटि सुन्न मंडलादि है । (२५०-६)
गुरमुखि सबद सुरति लिव साधसंगि (२५०-७)
अंत कै अनंत प्रभु आदि परमादि है ॥२५०॥ (२५०-८)

गुरमुखि सबद सुरति लिव साधसंग (२५१-१)
उलटि पवन मन मीन की चपल है । (२५१-२)
सोह्म सो अजपा जापु चीनीअत आपा आप (२५१-३)
उनमनी जोति को उदोत हुइ प्रबल है । (२५१-४)
अनहदनाद बिसमाद रुनझुन सुनि (२५१-५)
निझर झरनि बरखा अंमृत जल है । (२५१-६)
अनभै अभिआस को प्रगास असचरजमै (२५१-७)
बिसम बिस्वास बास ब्रहम सथल है ॥२५१॥ (२५१-८)

दृसटि दरस समदरस धिआन दारि (२५२-१)
दुबिधा निवारि इेक टेक गहि लीजीऐ । (२५२-२)
सबद सुरति लिव असतुति निंदा छाडि (२५२-३)
अकथ कथा बीचारि मोनि ब्रत कीजीऐ । (२५२-४)
जगजीवन मै जग जग जगजीवन को (२५२-५)
जानीऐ जीवन मूल जुगु जुगु जीजीऐ। (२५२-६)
इेक ही अनेक अउ अनेक इेक सरब मै (२५२-७)
ब्रहम बिबेक टेक प्रेमरस पीजीऐ ॥२५२॥ (२५२-८)

अबिगिति गति कत आवत अंतरि गति (२५३-१)
अकथ कथा सुकहि कैसे कै सुनाईऐ । (२५३-२)
अलख अपार किधौ पाईअति पार कैसे (२५३-३)
दरसु अदरसु को कैसे कै दिखाईऐ । (२५३-४)
अगम अगोचरु अगहु गहीऐ धौ कैसे (२५३-५)
निरलंबु कउन अवलंब ठहिराईऐ । (२५३-६)
गुरमुखि संधि मिलै सोई जानै जामै बीतै (२५३-७)
बिसम बिदेह जल बूंद हुइ समाईऐ ॥२५३॥ (२५३-८)

गुरमुखि सबद सुरति साधसंगि मिलि (२५४-१)
पूरन ब्रहम प्रेम भगति बिबेक है । (२५४-२)
रूप कै अनूप रूप अति असचरजमै (२५४-३)
दृसटि दरस लिव टरत न इेक है । (२५४-४)
राग नाद बाद बिसमाद कीरतन समै (२५४-५)
सबद सुरति गिआन गोसटि अनेक है । (२५४-६)
भावनी भै भाइि चाइि चाह चरनाम्रत की (२५४-७)
आस पृआ सदीव अंग संग जावदेक है ॥२५४॥ (२५४-८)

होम जग नईबेद कै पूजा अनेक (२५५-१)
जप तप संजम अनेक पुन्न दान कै । (२५५-२)
जल थल गिर तर तीरथ भवन भूअ (२५५-३)
हिमाचल धारा अग्र अरपन प्रान कै । (२५५-४)
राग नाद बाद साअंगीत बेद पाठ बहु (२५५-५)
सहज समाधि साधि कोटि जोग धिआन कै । (२५५-६)
चरन सरनि गुर सिख साध संगि परि (२५५-७)
वारि डारउ निगह हठ जतन कोटानि कै ॥२५५॥ (२५५-८)

मधुर बचन समसरि न पुजस मध (२५६-१)
करक सबदि सरि बिख न बिखम है । (२५६-२)
मधुर बचन सीतलता मिसटान पान (२५६-३)
करक सबद सतपत कट कम है । (२५६-४)
मधुर बचन कै तृपति अउ संतोख साँति (२५६-५)
करक सबद असंतोख दोख स्रम है । (२५६-६)
मधुर बचन लगि अगम सुगम होइ (२५६-७)
करक सबद लगि सुगम अगम है ॥२५६ (२५६-८)

गुरमुखि सबद सुरति साधसंगि मिलि (२५७-१)
भान गिआन जोति को उदोत प्रगटाइए है । (२५७-२)
नाभ सरवर बिखै ब्रहम कमल दल (२५७-३)
होइ प्रफुलित बिमल जल छाइए है । (२५७-४)
मधु मकरंद रस प्रेम परपूरन कै (२५७-५)
मनु मधुकर सुख संपट समाइए है । (२५७-६)
अकथ कथा बिनोद मोद अमोद लिव (२५७-७)
उनमन हुइ मनोद अनत न धाइए है ॥२५७॥ (२५७-८)

जैसे काचो पारो महा बिखम खाइए न जाइ (२५८-१)
मारे निहकलंक हुइ कलंकन मिटावई । (२५८-२)
तैसे मन सबद बीचारि मारि हउमै मोटि (२५८-३)
परउपकारी हुइ बिकारन घटावई । (२५८-४)
साधुसंगि अधमु असाधु हुइ मिलत (२५८-५)
चूना जिउ तंबोल रसु रंगु प्रगटावई । (२५८-६)
तैसे ही चंचल चित भ्रमत चतुरकुंट (२५८-७)
चरन कमल सुख संपट समावई ॥२५८॥ (२५८-८)

गुरमुखि मारग हुइ धावत बरजि राखे (२५९-१)
सहज बिस्राम धाम निहचल बासु है । (२५९-२)
चरन सरनि रज रूप कै अनूप ऊप (२५९-३)
दरस दरसि समदरसि प्रगासु है । (२५९-४)
सबद सुरति लिव बजर कपाट खुले (२५९-५)

अनहदनाद बिसमाद को बिसवासु है । (२५६-६)
अंमृत बानी अलेख लेख के अलेख भइे (२५६-७)
परदछना कै सुख दासन के दास है ॥२५६॥ (२५६-८)

गुरसिख साध रूप रंग अंग अंग छबि (२६०-१)
देह कै बिदेह अउ संसारी निरंकारी है । (२६०-२)
दरस दरसि समदरस ब्रहम धिआन (२६०-३)
सबद सुरति गुर ब्रहम बीचारी है । (२६०-४)
गुर उपदेस परवेस लेख कै अलेख (२६०-५)
चरन सरनि कै बिकारी उपकारी है । (२६०-६)
परदछना कै ब्रहमादिक परिक्रिमादि (२६०-७)
पूरन ब्रहम अग्रभागि आगिआकारी है ॥२६०॥ (२६०-८)

गुरमुखि मारग हुइ भ्रमन को भ्रमु खोइए (२६१-१)
चरन सरनि गुर इेक टेक धारी है । (२६१-२)
दरस दरस समदरस धिआन धारि (२६१-३)
सबद सुरति कै संसारी निरंकारी है । (२६१-४)
सतिगुर सेवा करि सुरि नर सेवक है (२६१-५)
मानि गुर आगिआ सभि जगु आगिआकारी है । (२६१-६)
पूजा प्रान प्रानपति सरब निधान दान (२६१-७)
पारस परस गति परउपकारी है ॥२६१॥ (२६१-८)

पूरन ब्रहम गुर मिहमा कहै सु थोरी (२६२-१)
कथनी बदनी बादि नेत नेत नेत है । (२६२-२)
पूरन ब्रहम गुर पूरन सरबमई (२६२-३)
निंदा करीऐै सु काकी नमो नमो हेत है । (२६२-४)
ताही ते बिवरजत असुतति निंदा दोऊ (२६२-५)
अकथ कथा बीचारि मोनि ब्रत लेत है । (२६२-६)
बाल बुधि सुधि करि देह कै बिदेह भइे (२६२-७)
जीवनमुकति गति बिसम सुचेत है ॥२६२॥ (२६२-८)

गुरसिख संगति मिलाप को प्रताप अति (२६३-१)
प्रेम कै परसपर बिसम सथान है । (२६३-२)
दृसटि दरस कै दरस कै दृसटि हरी (२६३-३)
हेरत हिरात सुधि रहत न धिआन है । (२६३-४)
सबद कै सुरति सुरति कै सबद हरे (२६३-५)
कहत सुनत गति रहत न गिआन है । (२६३-६)
असन बसन तन मन बिसमरन हुइ (२६३-७)
देह कै बिदेह उनमत मधु पान है ॥२६३॥ (२६३-८)

जैसे लग मात्र हीन पड़त अउर कउ अउर (२६४-१)

पिता पूत पूत पिता समसरि जानीऐ । (२६४-२)
सुरति बिहून जैसे बावरो बखानीअत (२६४-३)
अउर कहे अउर कछे हिरदै मै आनीऐ । (२६४-४)
जैसे गुंग सभा मधि कहि न सकत बात (२६४-५)
बोलत हसाइ होइबिचन बिधानीऐ । (२६४-६)
गुरमुखि मारग मै मनमुख थकत हुइ (२६४-७)
लगन सगन माने कैसे मानीऐ ॥२६४॥ (२६४-८)

कोटनि कोटानि छबि रूप रंग सोभा निधि (२६५-१)
कोटनि कोटानि कोटि जगमग जोति कै । (२६५-२)
कोटनि कोटानि राजभाग प्रभता प्रतापु (२६५-३)
कोटनि कोटानि सुख अनंद उदोत कै । (२६५-४)
कोटनि कोटानि राग नादि बाद गिआन गुन (२६५-५)
कोटनि कोटानि जोग भोग एतपोति कै । (२६५-६)
कोटनि कोटानि तिल महिमा अगाधि बोधि (२६५-७)
नमो नमो दृसटि दरस सबद स्रोत कै ॥२६५॥ (२६५-८)

अहिनिसि भ्रमत कमल कुमुदनी को ससि (२६६-१)
मिलि बिछरत सोग हरख बिआपही । (२६६-२)
रवि ससि उलंघि सरनि सतिगुर गही (२६६-३)
चरनकमल सुख संपट मिलापही । (२६६-४)
सहज समाधि निज आसन सुबासन कै (२६६-५)
मधु मकरंद रसु लुभित अजापही । (२६६-६)
तृगुन अतीत हुइ बिस्राम निहकाम धाम (२६६-७)
उनमन मगन अनाहद अलापही ॥२६६॥ (२६६-८)

रवि ससि दरस कमल कुमुदनी हित (२६७-१)
भ्रमत भ्रमर मनु संजोगी बिएगी है । (२६७-२)
तृगुन अतीत गुरु चरनकमल रस (२६७-३)
मधु मकरंद रोग रहत अरोगी है । (२६७-४)
निहचल मकरंद सुख संपट सहज धुनि (२६७-५)
सबद अनाहद कै लोग मै अलोगी है । (२६७-६)
गुरमुखि सुखफल महिमा अगाधि बोध (२६७-७)
जोग भोग अलख निरंजन प्रजोगी है ॥२६७॥ (२६७-८)

जैसे दरपन बिखै बदनु बिलोकीअत (२६८-१)
ऐसे सरगुन साखी भूत गुर धिआन है । (२६८-२)
जैसे जंत्र धुनि बिखै बाजत बजंत्री को मनु (२६८-३)
तैसे घट घट गुर सबद गिआन है । (२६८-४)
मन बच क्रम जत्र कत्र सै इकत्र भइे (२६८-५)
पूरन प्रगास प्रेम परम निधान है । (२६८-६)

उनमन मगन गगन अनहद्‌धुनि (२६८-७)
सहज समाधि निरालंब निरबान है ॥२६८॥ (२६८-८)

कोटनि कोटानि धिआन दृसटि दरस मिलि (२६९-१)
अति असचरजमै हेरत हिराइे है । (२६९-२)
कोटनि कोटानि गिआन सबद सुरति मिलि (२६९-३)
महिमा महातम न अलख लखाइे है । (२६९-४)
तिल की अतुल सोभा तुलत न तुलाधार (२६९-५)
पार कै अपार न अनंत अंत पाइे है । (२६९-६)
कोटनि कोटानि चंद्र भान जोति को उदोतु (२६९-७)
होत बलि बलिहार बारंबार न अघाइे है ॥२६९॥ (२६९-८)

कोटि ब्रहमाँड जाके रोम रोम अग्रभागि (२७०-१)
पूरन प्रगास तास कहा धौ समावई । (२७०-२)
जाके इेक तिलको महातमु अगाधि बोध (२७०-३)
पूरन ब्रहम जोति कैसे कहि आवई । (२७०-४)
जाके एअंकार के बिथार की अपार गति (२७०-५)
सबद बिबेक इेक जीह कैसे गावई । (२७०-६)
पूरन ब्रहम गुर महिमा अकथ कथा (२७०-७)
नेत नेत नेत नमो नमो कै आवई ॥२७०॥ (२७०-८)

चरनकमल मकरंद रस लुभित हुइ (२७१-१)
मन मधुकर सुख संपट समाने है । (२७१-२)
परम सुगंध अति कोमल सीतलता कै (२७१-३)
बिमल सथल निहचल न डुलाने है । (२७१-४)
सहज समाधि अति अगम अगाधि लिव (२७१-५)
अनहद रुनझुन धुनि उर गाने है । (२७१-६)
पूरन परम जोति परम निधान दान (२७१-७)
आन गिआन धिआनु सिमरन बिसराने है ॥२७१॥ (२७१-८)

रज तम सत काम क्रोध लोभ मोह झकार (२७२-१)
हारि गुर गिआन बान क्राति निहक्राँति है । (२७२-२)
काम निहकाम निहकरम करम गति (२७२-३)
आसा कै निरास भइे भ्रात निहभ्राँति है । (२७२-४)
स्वाद निहस्वादु अरु बाद निहबाद भइे (२७२-५)
असप्रेह निसप्रेह गेह देह पाति है । (२७२-६)
गुरमुखि प्रेमरस बिसम बिदेह सिख (२७२-७)
माइिआ मै उदास बास इेकाकी इिकाँति है ॥२७२॥ (२७२-८)

प्रथम ही तिल बोइे धूरि मिलि बूटु बाँधै (२७३-१)
इेक सै अनेक होत प्रगट संसार मै । (२७३-२)

कोउ लै चबाइि कोऊ खाल काढै रेवरी कै (२७३-३)
कोऊ करै तिलवा मिलाइि गुर बारि मै । (२७३-४)
कोऊ उखली डारि कूटि तिलकुट करै कोऊ (२७३-५)
कोलू पीरि दीप दिपत अंध्यार मै । (२७३-६)
जाके इेक तिल को बीचारु न कहत आवै (२७३-७)
अबिगति गति कत आवत बीचार मै ॥२७३॥ (२७३-८)

रचना चरित्र चित्र बिसम बचित्रपन (२७४-१)
इेक चीटी को चरित्र कहत न आवही । (२७४-२)
प्रथम ही चीटी के मिलाप को प्रताप देखो (२७४-३)
सहस अनेक इेक बिल मै समावही । (२७४-४)
अग्रभागी पाछै इेकै मारग चलत जात (२७४-५)
पावत मिठास बासु तही मिलि धावही । (२७४-६)
भ्रिंगी मिलि तातकाल भ्रिंगी रूप हुइि दिखावै (२७४-७)
चीटी चीटी चित्र अलख चितेरै कत पावही ॥२७४॥ (२७४-८)

रचना चरित्र चित्र बिसम बचित्रपन (२७५-१)
घट घट इेक ही अनेक हुइि दिखाइि है । (२७५-२)
उत ते लिखत इित पढत अंतरगति (२७५-३)
इितहू ते लिखि प्रति उतर पठाइे है । (२७५-४)
उत ते सबद राग नाद को प्रसन्नु करि (२७५-५)
इित सुनि समझि कै उत समझाइे है । (२७५-६)
रतन परीख्यिा पेखि परमिति कै सुनावै (२७५-७)
गुरमुखि संधि मिले अलख लखाइे है ॥२७५। (२७५-८)

पूरन ब्रहम गुर पूरन क्रिपा कै दीनो (२७६-१)
साचु उपदेसु रिदै निहचल मति है । (२७६-२)
सबद सुरति लिव लीन जल मीन भइै (२७६-३)
पूरन सरबमई पै घ्रित जुगति है । (२७६-४)
साचु रिदै साचु देखै सुनै बोलै गंध रस (२७६-५)
सपूरन परसपर भावनी भगति है । (२७६-६)
पूरन ब्रहम द्रुमु साखा पत्र फूल फल (२७६-७)
इेक ही अनेकमेक सतिगुर सति है ॥२७६॥ (२७६-८)

पूरन ब्रहम गुर पूरन परमजोति (२७७-१)
एतिपोति सूत्र गति इेक ही अनेक है । (२७७-२)
लोचन स्रवन स्रोत इेक ही दरस सबद (२७७-३)
वार पार कूल गति सरिता बिबेक है । (२७७-४)
चंदन बनासपती कनिक अनिक धातु (२७७-५)
पारस परसि जानीअत जावदैक है । (२७७-६)
गिआन गुर अंजन निरंजन अंजन बिखै (२७७-७)

दुबिधा निवारि गुरमति इेक टेक है ॥२७७॥ (२७७-८)

दरस धिआन लिव दृसटि अचल भई (२७८-१)
सबद बिबेक स्रुति स्रवन अचल है । (२७८-२)
सिमरन मात्र सुधा जिहबा अचल भई (२७८-३)
गुरमति अचल उनमन असथल है । (२७८-४)
नासका सुबासु कर कोमल सीतलता कै (२७८-५)
पूजा परनाम परस चरनकमल है । (२७८-६)
गुरमुखि पंथ चर अचर हुइ अंग अंग (२७८-७)
पंग सरबंग बूंद सागर सलल है ॥२७८॥ (२७८-८)

दरसन सोभा दृग दृसटि गिआन गंमि (२७९-१)
दृसटि धिआन प्रभ दरस अतीत है । (२७९-२)
सबद सुरति परै सुरति सबद परै (२७९-३)
जास बासु अलख सुबासु नास रीत है । (२७९-४)
रस रसना रहित रसना रहित रस (२७९-५)
कर असपरस परसन कराजीत है । (२७९-६)
चरन गवन गंमि गवन चरन गंमि (२७९-७)
आस पिआस बिसम बिस्रास पृअ प्रीत है ॥२७९॥ (२७९-८)

गुरमुखि सबद सुरति हउमै मारि मरै (२८०-१)
जीवनमुकति जगजीवन कै जानीऐ । (२८०-२)
अंतरि निरंतरि अंतर पट घटि गइे (२८०-३)
अंतरजामी अंतरि गति उनमानीऐ । (२८०-४)
ब्रहममई है माइिआ माइिआमई है ब्रहम (२८०-५)
ब्रहम बिबेक टेक इेकै पहिचानीऐ । (२८०-६)
पिंड ब्रहमंड ब्रहमंड पिंड एतपोति (२८०-७)
जोती मिलि जोति गोत ब्रहम गिआनीऐ ॥२८०॥ (२८०-८)

चरन सरनि गुर धावत बरजि राखै (२८१-१)
निहचल चित सुख सहज निवास है । (२८१-२)
जीवन की आसा अरु मरन की चिंता मिटी (२८१-३)
जीवनमुकति गुरमति को प्रगास है । (२८१-४)
आपा खोइि होनहारु होइि सोई भलो मानै (२८१-५)
सेवा सरबातम कै दासन के दास है । (२८१-६)
स्रीगुर दरस सबद ब्रहम गिआन धिआन (२८१-७)
पूरन सरबमई ब्रहम बिस्रास है ॥२८१॥ (२८१-८)

गुरमुखि सुखफल काम निहकाम कीने (२८२-१)
गुरमुखि उदम निरउदम उकति है । (२८२-२)
गुरमुखि मारग हुइि दुबिधा भरम खोइे (२८२-३)

चरन सरनि गहे निहचल मति है । (२८२-४)
दरसन परसत आसा मनसा थकत (२८२-५)
सबद सुरति गिआन प्रान प्रानिप्रति है । (२८२-६)
रचना चरित्र चित्र बिसम बचित्रपन (२८२-७)
चित्र मै चितेग्रा को बसेरा सति सति है ॥२८२॥ (२८२-८)

स्रीगुर सबद सुनि स्रवन कपाट खुले (२८३-१)
नादै मिलि नाद अनहद लिव लाई है । (२८३-२)
गावत सबद रसु रसना रसाइिन कै (२८३-३)
निझर अपार धार भाठी कै चुआई है । (२८३-४)
हिरदै निवास गुरसबद निधान गिआन (२८३-५)
धावत बरजि उनमनि सुधि पाई है । (२८३-६)
सबद अवेस परमारथ प्रवेह धारि (२८३-७)
दिब देह दिबि जोति प्रगटाई है ॥२८३॥ (२८३-८)

गुरसिख संगति मिलाप को प्रताप अति (२८४-१)
प्रेम कै परसपर पूरन प्रगास है । (२८४-२)
दरस अनूप रूप रंग अंग अंग छबि (२८४-३)
हेरत हिराने दृग बिसम बिस्नास है । (२८४-४)
सबद निधान अनहद रुनझुन धुनि (२८४-५)
सुनत सुरति मति हरन अभिआस है । (२८४-६)
दृसटि दरस अरु सबद सुरति मिलि (२८४-७)
परमदभुत गति पूरन बिलास है ॥२८४॥ (२८४-८)

गुरमुखि संगति मिलाप को अति (२८५-१)
पूरन प्रगास प्रेम नेम कै परसपर है । (२८५-२)
चरन कमल रज बासना सुबास रासि (२८५-३)
सीतलता कोमल पूजा कोटानि समसरि है । (२८५-४)
रूप कै अनूप रूप अति असचरजमै (२८५-५)
नाना बिसमाद राग रागनी न पटतर है । (२८५-६)
निझर अपार धार अंमृत निधान पान (२८५-७)
परमदभुत गति आन नही समसरि है ॥२८५॥ (२८५-८)

नवन गवन जल सीतल अमल जैसे (२८६-१)
अगनि उरध मुख तपत मलीन है । (२८६-२)
बरन बरन मिलि सलिल बरन सोई (२८६-३)
सिआम अगनि स्रब बरन छबि छीन है । (२८६-४)
जल प्रतिबिंब पालक प्रफुलित बनासपती (२८६-५)
अगनि प्रदगध करत सुख हीन है । (२८६-६)
तैसे ही असाध साध संगम सुभाव गति (२८६-७)
गुरमति दुरमति सुख दुख हीन है ॥२८६॥ (२८६-८)

काम क्रोध लोभ मोह अह्मेव कै असाध (२८७-१)
साध सत धरम दइआ रथ संतोख कै । (२८७-२)
गुरमति साधसंग भावनी भगति भाइ (२८७-३)
दुरमति कै असाध संग दुख दोख कै । (२८७-४)
जनम मरन गुर चरन सरनि बिनु (२८७-५)
मोख पद चरन कमल चित चोख कै । (२८७-६)
गिआन अंस चित ह्मस गति गुरमुखि बंस बिखै (२८७-७)
दुक्रित सुक्रित खीर नीर सोख पोख कै ॥२८७॥ (२८७-८)

हारि मानी झगरो मिटत, रोस मारे सै रसाइन हुइ (२८८-१)
पोट डारे लागत न डंडु जग जानीऐ । (२८८-२)
हउमे अभिमान असथान ऊचे नाहि जलु (२८८-३)
निमत नवन थल जलु पहिचानीऐ । (२८८-४)
अंग सरबंग तर हर होत है चरन (२८८-५)
ताते चरनाम्रत चरन रेन मानीऐ । (२८८-६)
तैसे हरि भगत जगत मै निंमरीभूत (२८८-७)
जग पग लगि मसतकि परवानीऐ ॥२८८॥ (२८८-८)

पूजीऐ न सीसु ईसु ऊचौ देही मै कहावै (२८९-१)
पूजीऐ न लोचन दृसटि दृसटाँत कै । (२८९-२)
पूजीऐ न स्रवन दुरति सनबंध करि (२८९-३)
पूजीऐ न नासका सुबास स्वास काँत कै । (२८९-४)
पूजीऐ न मुख स्वाद सबद संजुगत कै (२८९-५)
पूजीऐ न हसत सकल अंग पाँत कै । (२८९-६)
दृसटि सबद सुरति गंध रस रहित हुइ (२८९-७)
पूजीऐ पदारबिंद नवन महाँत कै ॥२८९॥ (२८९-८)

नवन गवन जल निरमल सीतल है (२९०-१)
नवन बसुंधर सरब रस रासि है । (२९०-२)
उरध तपसिआ कै स्री खंड बासु बोहै बन (२९०-३)
नवन समुंद्र होत रतन प्रगास है । (२९०-४)
नवन गवन पग पूजीअत जगत मै (२९०-५)
चाहै चरनाम्रत चरन रज तास है । (२९०-६)
तैसे हरि भगत जगत मै निंमरीभूत (२९०-७)
काम निहकाम धाम बिसम बिस्वास है ॥२९०॥ (२९०-८)

सबद सुरति लिवलीन जल मीन गति (२९१-१)
सुखमना संगम हुइ उलटि पवन कै । (२९१-२)
बिसम बिस्वास बिखै अनभै अभिआस रस (२९१-३)
प्रेम मधु अपीउ पीऐ गुहजु गवन कै । (२९१-४)

सबद कै अनहद सुरति कै उनमनी (२६१-५)
प्रेम कै निझर धार सहज रवन कै । (२६१-६)
तृकुटी उलंघि सुख सागर संजोग भोग (२६१-७)
दसम सथल निहकेवलु भवन कै ॥२६१॥ (२६१-८)

जैसे जल जलज अउ जल दुध सील मीन (२६२-१)
चकई कमल दिनकरि प्रति प्रीत है । (२६२-२)
दीपक पतंग अलि कमल चकोर ससि (२६२-३)
मृग नाद बाद घन चातृक सुचीत है । (२६२-४)
नारि अउ भतारु सुत मात जल तृखावंत (२६२-५)
खुधिआरथी भोजन दारिद्र धन मीत है । (२६२-६)
माइिआ मोह द्रोह दुखदाई न सहाई होत (२६२-७)
गुर सिख संधि मिले तृगुन अतीत है ॥२६२॥ (२६२-८)

चरनकमल मकरंद रस लुभित हुइि (२६३-१)
अंग अंग बिसम स्रबंग मै समाने है । (२६३-२)
दृसटि दरस लिव दीपक पतंग संग (२६३-३)
सबद सुरति मृग नाद हुइि हिरने है । (२६३-४)
काम निहकाम क्रोधाक्रोध निरलोभ लोभ (२६३-५)
मोह निरमोह अह्मेव हू लजाने है । (२६३-६)
बिसमै बिसम असचरजै असचरजमै (२६३-७)
अदभुत परमदभुत असथाने है ॥२६३॥ (२६३-८)

दरसन जोति को उदोत सुख सागर मै (२६४-१)
कोटिक उसतत छबि तिल को प्रगास है । (२६४-२)
किंचत क्रिपा कोटिक कमला कलपतर (२६४-३)
मधुर बचन मधु कोटिक बिलास है । (२६४-४)
मंद मुसकानि बानि खानि है कोटानि ससि (२६४-५)
सोभा कोटि लोटपोट कुमदनी तासु है । (२६४-६)
मन मधुकर मकरंद रस लुभित हुइि (२६४-७)
सहज समाधि लिव बिसम बिस्रस है ॥२६४॥ (२६४-८)

चरन सरनि इज मजन मलीन मन (२६५-१)
दरपन मत गुरमति निहचल है । (२६५-२)
गिआन गुर अंजन दै चपल खंजन दृग (२६५-३)
अकुल निरंजन धिआन जल थल है । (२६५-४)
भंजन भै भ्रम अरि गंजन करम काल (२६५-५)
पाँच परपंच बलबंच निरदल है । (२६५-६)
सेवा करंजन सरबातम निरंजन भइे (२६५-७)
माइिआ मै उदास कलिमल निरमल है ॥२६५॥ (२६५-८)

चंद्रमा अछत रवि राह न सकत ग्रसि (२६६-१)
दृसटि अगोचरु हुइ सूरजग्रहन है । (२६६-२)
पछम उदोत होत चंद्रमै नमसकार (२६६-३)
पूरब संजोग ससि केत खेत हनि है । (२६६-४)
कासट मै अगनि मगन चिरंकाल रहै (२६६-५)
अगनि मै कासट परत ही दहन है । (२६६-६)
तैसे सिव सकत असाध साध संगम कै (२६६-७)
दुरमति गुरमति दुसह सहन है ॥२६६॥ (२६६-८)

साध की सुजनताई पाहन की रेख प्रीति (२६७-१)
बैर जल रेख हुइ बिसेख साध संग मै । (२६७-२)
दुरजनता असाध प्रीति जल रेख अरु (२६७-३)
बैरु तउ पाखान रेख सेख अंग अंग मै । (२६७-४)
कासट अगनि गति प्रीति बिपरीति (२६७-५)
सुरसरी जल बारुनी सरूप जल गंग मै । (२६७-६)
दुरमति गुरमति अजया सरप गति (२६७-७)
उपकारी अउ बिकारी ढंग ही कुढंग मै ॥२६७॥ (२६७-८)

दुरमति गुरमति संगति असाध साध (२६८-१)
कासट अगनि गति टेव न टरत है । (२६८-२)
अजया सरप जल गंग बारुनी बिधान (२६८-३)
सन अउ मजीठ खल पंडित लरत है । (२६८-४)
कंटक पुहप सैल घटिका सनाह ससत्र (२६८-५)
ह्मस काग बग बिआध मृग होइि निबरत है । (२६८-६)
लोसट कनिक सीप संख मधु कालकूट (२६८-७)
सुख दुखदाइिक संसार बिचरत है ॥२६८॥ (२६८-८)

दादर सरोज बास बावन मराल बग (२६९-१)
पारस बखान बिखु अंमृत संजोग है । (२६९-२)
मृग मृगमद अहिमनि मधुमाखी साखी (२६९-३)
बाझ बधू नाह नेह निहफल भोग है । (२६९-४)
दिनकर जोति उलू बरखै समै जवासो (२६९-५)
असन बसन जैसे बृथावंत रोग है । (२६९-६)
तैसे गुरमति बीज जमत न कालर मै (२६९-७)
अंकूर उदोत होत नाहिन बिएग है ॥२६९॥ (२६९-८)

संगम संजोग प्रेम नेम कउ पतंगु जानै (३००-१)
बिरह बिएग सोग मीन भल जानई । (३००-२)
इिक टक दीपक धिआन प्रान परहरै (३००-३)
सलिल बिएग मीन जीवन न मानई । (३००-४)
चरनकमल मिलि बिछुरै मधुप मनु (३००-५)

कपट सनेह ध्रिगु जनमु अगिआनई । (३००-६)
निहफल जीवन मरन गुर बिमुख हुइ (३००-७)
प्रेम अरु बिरह न दोऊ उर आनई ॥३००॥ (३००-८)

दृसटि दरस लिव देखै अउ दिखावै सोई (३०१-१)
सरब दरस इेक दरस कै जानीअै । (३०१-२)
सबद सुरति लिव कहत सुनत सोई (३०१-३)
सरब सबद इेक सबद कै मानीअै । (३०१-४)
कारन करन करतगि सरबगि सोई (३०१-५)
करम कतूति करतारु पहिचानीअै । (३०१-६)
सतिगुर गिआन धिआनु इेक ही अनेकमेक॥ (३०१-७)
ब्रहम बिबेक टेक इेकै उरि आनीअै ॥३०१॥ (३०१-८)

किंचत कटाछ माइिआ मोहे ब्रहमंड खंड॥ (३०२-१)
साधसंग रंग मै बिमोहत मगन है । (३०२-२)
जाके एअंकार कै अकार है नाना प्रकार॥ (३०२-३)
कीरतन समै साधसंग सो लगन है । (३०२-४)
सिव सनकादि ब्रहमादि आगिआकारी जाके॥ (३०२-५)
अग्रभाग साध संग गुननु अगन है । (३०२-६)
अगम अपार साध महिमा अपार बिखै॥ (३०२-७)
अति लिव लीन जल मीन अभगन है ॥३०२॥ (३०२-८)

निजघर मेरो साधसंगति नारदमुनि॥ (३०३-१)
दरसन साधसंग मेरो निज रूप है । (३०३-२)
साधसंगि मेरो माता पिता अउ कुटंब सखा॥ (३०३-३)
साधसंगि मेरो सुतु स्रेसट अनूपु है । (३०३-४)
साधसंग सरब निधानु प्रान जीवन मै॥ (३०३-५)
साधसंगि निजु पद सेवा दीप धूप है । (३०३-६)
साधसंगि रंग रस भोग सुख सहज मै॥ (३०३-७)
साधसंगि सोभा अति उपमा अउ ऊप है ॥३०३॥ (३०३-८)

अगम अपार देव अलख अभेव अति (३०४-१)
अनिक जतन करि निग्रह न पाईअै । (३०४-२)
पाईअै न जग भोग पाईअै न राज जोग (३०४-३)
नाद बाद बेद कै अगहु न गहाईअै । (३०४-४)
तीरथ पुरब देव देव सेवकै न पाईअै (३०४-५)
करम धरम ब्रत नेम लिव लाईअै । (३०४-६)
निहफळ अनिक प्रकार कै अचार सबै (३०४-७)
सावधान साधसंग हुइ सबद गाईअै ॥३०४॥ (३०४-८)

सुपन चरित्र चित्र जोई देखै सोई जानै (३०५-१)

दूसरो न देखै पावै कहौ कैसे जानीऐ । (३०५-२)
नाल बिखै बात कीइे सुनीअत कान दीइे (३०५-३)
बकता अउ स्रोता बिनु कापै उनमानीऐ । (३०५-४)
पघुला के मूल बिखै जैसे जल पान कीजै (३०५-५)
लीजीऐ जतन करि पीइे मन मानीऐ । (३०५-६)
गुर सिख संधि मिले गुहज कथा बिनोद (३०५-७)
गिआन धिआन प्रेमरस बिसम बिधानीऐ ॥३०५॥ (३०५-८)

नवन गवन जल सीतल अमल जैसे॥ (३०६-१)
अगनि उरध मुख तपत मलीन है । (३०६-२)
सफल हुइि आँब झके रहत है चिरंकाल (३०६-३)
निवै न अरडु ताँते आरबला छीन है । (३०६-४)
चंदन सुबास जैसे बासीऐ बनासपती (३०६-५)
बासु तउ बडाई बूडिए संग लिवलीन है । (३०६-६)
तैसे ही असाध साध अह्मबुधि निंम्रता कै (३०६-७)
सन अउ मजीठ गति पाप पुन्न कीन है ॥३०६॥ (३०६-८)

सकल बनासपती बिखै द्रुम दीरघ दुइि॥ (३०७-१)
निहफल भइे बूडे बहुत बडाई कै । (३०७-२)
चंदन सुबासना कै सेंबुल सुबास होत (३०७-३)
बाँसु निरगंध बहु गाँठनु ढिठाई कै। (३०७-४)
सेंबल के फल तूल खग मृग छाइिआ ताकै (३०७-५)
बाँसु तउ बरन दोखी जारत बुराई कै । (३०७-६)
तैसे ही असाध साध होति साधसंगति कै (३०७-७)
तृसटै न गुर गोपि द्रोह गुरभाई कै ॥३०७॥ (३०७-८)

बिरख बली मिलाप सफल सघन छाइिआ (३०८-१)
बासु तउ बरन देखी मिले जरै जारि है । (३०८-२)
सफल हुइि तरहर झुकति सकल तर॥ (३०८-३)
बाँसु तउ बडाई बूडिए आपा न संमार है । (३०८-४)
सकल बनासपती सुधि रिदै मोनि गहे (३०८-५)
बाँसु तउ रीतो ग़ठीलो बाजे धार मारि है । (३०८-६)
चंदन समीप ही अछत निरगंध रहे (३०८-७)
गुरसिख दोखी बज्र प्रानी न उधारि है ॥३०८॥ (३०८-८)

गुरसिख संगति मिलाप को प्रताप ऐसो॥ (३०९-१)
प्रेम कै परसिपर पग लपटावही । (३०९-२)
दृसटि दरस उरु सबद सुरति मिलि (३०९-३)
पूरन ब्रहम गिआन धिआन लिव लावही । (३०९-४)
इेक मिसटान पान लावत महाप्रसादि (३०९-५)
इेक गुरपुरब कै सिखनु बुलावही । (३०९-६)

सिव सनकादि बाछै तिनके उचिसट कउ (३०६-७)
साधन की दूखना कवन फल पावही ॥३०६॥ (३०६-८)

जैसे बोझ भरी नाव आँगुरी दुइ बाहरि हुइ (३१०-१)
पार परै पूर सबै कुसल बिहात है । (३१०-२)
जैसे इेकाहारी इेक घरी पाकसाला बैठि (३१०-३)
भोजन कै बिंजन स=छधादि के अघात है । (३१०-४)
जैसे राजदुआर जाइि करत जुहार जन (३१०-५)
इेक घरी पाछै देस भोगता हुइि खात है । (३१०-६)
आठ ही पहर साठि घरी मै जउ इेक घरी (३१०-७)
साध समागमु करै निज घर जात है ॥३१०॥ (३१०-८)

कारतक जैसे दीपमालका रजनी समै॥ (३११-१)
दीप जोति को उदोत होत ही बिलात है । (३११-२)
बरखा समै जैसे बुदबुदा कौ प्रगास (३११-३)
तास नाम पलक मै न तउ ठहिरात है । (३११-४)
ग्रीखम समै जैसे तउ मृग तृसना चरित्र॥ (३११-५)
झाई सी दिखाई देत उपजि समात है । (३११-६)
तैसे मोह माइिआ छाइिआ बिरख चपल छल॥ (३११-७)
छलै छैल स्रीगुर चरन लपटात है ॥३११॥ (३११-८)

जैसे तउ बसन अंग संग मिलि हुइि मलीन॥ (३१२-१)
सलिल साबुन मिलि निरमल होत है । (३१२-२)
जैसे तउ सरोवर सिवाल कै अछादिए जलु॥ (३१२-३)
झोलि पीइे निरमल देखीअै अछोत है । (३१२-४)
जैसे निध अंधकार तारका चमतकार॥ (३१२-५)
होत उजीआरो दिनकर के उदोत है । (३१२-६)
तैसे माइिआ मोह भ्रम होत है मलीन मति॥ (३१२-७)
सतिगुर गिआन धिआन जगमग जोति है ॥३१२॥ (३१२-८)

अंतर अछित ही दिसंतरि गवन करै॥ (३१३-१)
पाछै परे पहुचै न पाइिकु जउ धावई । (३१३-२)
पहुचै न रथु पहुचै न गमराजु बाजु॥ (३१३-३)
पहुचै न खग मृग फादत उडावई । (३१३-४)
पहुचै न पवन गवन तृभवन प्रति॥ (३१३-५)
अरध उरध अंतरीछ हुइि न पावई । (३१३-६)
पंच दूत भूत लगि अधमु असाधु मनु॥ (३१३-७)
गहे गुर गिआन साधसंगि बसि आवई ॥३१३॥ (३१३-८)

आँधरो कउ सबद सुरति कर चर टेक (३१४-१)
बहरै चरन कर दृसटि सबद है । (३१४-२)

गूंगै टेक चर कर दृसटि सबद सुरति लिव (३१४-३)
लूले टेक दृसटि सबद स्र ुति पद है । (३१४-४)
पागुरे कउ टेक दृसटि सबद सुरति कर टेक (३१४-५)
इेक इेक अंगहीन दीनता अछद है । (३१४-६)
अंध गुंग सुन्न पंग लुंज दुख पुंज मम (३१४-७)
अंतर के अंतरजामी परबीन सद है ॥३१४॥ (३१४-८)

आँधरे कउ सबद सुरति कर चर टेक (३१५-१)
अंध गुंग सबद सुरति कर चर है । (३१५-२)
अंध गुंग सुन्न कर चर अवलंब टेक॥ (३१५-३)
अंध गुंग सुन्न पंग टेक इेक कर है । (३१५-४)
अंद गुंग सुन्न पंग लुंज दुख पुंज मम॥ (३१५-५)
सरबंग हीन दीन दुखत अधर है । (३१५-६)
अंतर की अंतरजामी जानै अंतरगति॥ (३१५-७)
कैसे निरबाहु करै सरै नरहर है ॥३१५॥ (३१५-८)

चकई चकोर मृग मीन भ्रिंग अउ पतंग॥ (३१६-१)
प्रीति इिकअंगी बहुरंगी दुखदाई है । (३१६-२)
इेक इेक टेक सै टरत न मरत सबै॥ (३१६-३)
आदि अंति की चाल चली आई है । (३१६-४)
गुरसिख संगति मिलाप को प्रतापु अैसो॥ (३१६-५)
लोग परलोग सुखदाइिक सहाई है । (३१६-६)
गुरमति सुनि दुरमति न मिटत जाकी॥ (३१६-७)
अहि मिलि चंदन जिउ बिखु न मिटाई है ॥३१६॥ (३१६-८)

मीन कउ न सुरति जल कउ सबद गिआनु (३१७-१)
दुबिधा मिटाइि न सकत जलु मीन की । (३१७-२)
सर सरिता अथाह प्रबल प्रवाह बसै (३१७-३)
ग्रसै लोह राखि न सका मति हीन की । (३१७-४)
जलु बिनु तरफि तजत पृअ प्रान मीन (३१७-५)
जानत न पीर नीर दीनताई दीन की । (३१७-६)
दुखदाई पीति की प्रतीत मीन कुल दृड़ (३१७-७)
गुरसिख बंस ध्रिगु प्रीति परधीन की ॥३१७॥ (३१७-८)

दीपक पै आवत पतंग प्रीति रीति लगि॥ (३१८-१)
दीपकहि महा बिपरीत मिले जारि है । (३१८-२)
अलि चलि आवत कमल पै सनेह करि॥ (३१८-३)
कमल संपट बाँधि प्रान परहारि है । (३१८-४)
मन बच क्रम जल मीन लिवलीन गति (३१८-५)
बिछुरत राखि न सकत गहि डारि है । (३१८-६)
दुखदाई पीति की प्रतीति कै मरै न टरै (३१८-७)

गुरसिख सुखदाई प्रीति किउ बिसारि है ॥३१८॥ (३१८-८)

दीपक पतंग दिबि दृसटि दरस हीन (३१९-१)
स्रीगुर दरस धिआन तृभवन गंमिता । (३१९-२)
बासना लमल अलि भ्रमत न राखि सकै॥ (३१९-३)
चरन सरनि गुर अनत न रंमिता । (३१९-४)
मीन जल प्रेम नेम अंति न सहाई होत॥ (३१९-५)
गुर सुख सागर है इित उत संमिता । (३१९-६)
इेक इेक टेक से टरत नमरत सबै (३१९-७)
स्रीगुर स्रबंगी संगी महातम अंमृता ॥३१९॥ (३१९-८)

दीपक पतंग मिलि जरत न राखि सकै (३२०-१)
जरे मरे आगे न परमपद पाइे है । (३२०-२)
मधुप कमल मिलि भ्रमत न राखि सकै (३२०-३)
संपट मै मूइे सै न सहज समाइे है । (३२०-४)
जल मिलि मीन की न दुबिधा मिटाइि सकी (३२०-५)
बिछुरि मरत हरि लोक न पठाइे है । (३२०-६)
इित उत संगम सहाई सुखदाई गुर (३२०-७)
गिआन धिआन प्रेमरस औमृत पीआइे है ॥३२०॥ (३२०-८)

दीपक पतंग अलि कमल सलिल मीन॥ (३२१-१)
चकई चकोर मृग रवि ससि नाद है । (३२१-२)
प्रीति इिकअंगी बहुरंगी नही संगी कोऊ॥ (३२१-३)
सबै दुखदाई न सहाई अंति आदि है । (३२१-४)
जीवत न साधसंग मूइे न परमगति॥ (३२१-५)
गिआन धिआन प्रेमरस प्रीतम प्रसादि है । (३२१-६)
मानस जनमु पाइि स्रीगुर दइिआ निधान॥ (३२१-७)
चरन सरनि सुखफल बिसमाद है ॥३२१॥ (३२१-८)

गुरमुखि पंथ गुर धिआन सावधान रहे (३२२-१)
लहै निजुघर अरु सहज निवास जी । (३२२-२)
सबद बिबेक इेक टेक निहचल मति (३२२-३)
मधुर बचन गुर गिआन को प्रगास जी । (३२२-४)
चरनकमल चरनामृत निधान पान (३२२-५)
प्रेमरस बसि भइे बिसम बिस=छधास जी । (३२२-६)
गिआन धिआन प्रेम नेम पूरन प्रतीत चीति (३२२-७)
बन गृह समसरि माइिआ मै उदास जी ॥३२२॥ (३२२-८)

छधमारबे को त्रासु देखि चोर न तजत चोरी॥ (३२३-१)
बटवारा बटवारी संगि हुइि तकत है । (३२३-२)
बेस=छधारतु बृथा भइे मन मै ना संका मानै॥ (३२३-३)

जुआरी न सरबसु हारे सै थकत है । (३२३-४)
अमली न अमल तजत जिउ धिकार कीइे॥ (३२३-५)
दोख दुख लोग बेद सुनत छकत है । (३२३-६)
अधम असाध संग छाडत न अंगीकार (३२३-७)
गुरसिख साधसंग छाडि किउ सकत है ॥३२३॥ (३२३-८)

दमक दै दो दुखु अपजस लै असाध (३२४-१)
लोक परलोक मुख सिआमता लगावही । (३२४-२)
चोर जार अउ जूआर मधपानी दुक्रित सै (३२४-३)
कलह कलेस भेस दुबिधा कउ धावही । (३२४-४)
मति पति मान हानि कानि मै कनोडी सभा (३२४-५)
नाक कान खंड डंड होत न लजावही । (३२४-६)
सरब निधान दान दाइिक संगति साध (३२४-७)
गुरसिख साधूजन किउ न चलि आवही ॥३२४॥ (३२४-८)

जैसे तउ अकसमात बादर उदोत होत (३२५-१)
गगन घटा घमंड करत बिथार जी । (३२५-२)
ताही ते सबद धुनि घन गरजत अति॥ (३२५-३)
चंचल चरित्र दामनी चमतकार जी । (३२५-४)
बरखा अंमृत जल मुकता कपूर ताते (३२५-५)
अउखधी उपारजना अनिक प्रकार जी । (३२५-६)
दिबि देह साध जनम मरन रहित जग (३२५-७)
प्रगटत करबे कउ परउपकार जी ॥३२५॥ (३२५-८)

सफल बिरख फल देत जिउ पाखान मारे (३२६-१)
सिरि करवत सहि गहि पारि पारि है । (३२६-२)
सागर मै काढि मुखु फोरीअत सीप के जिउ (३२६-३)
देत मुकताहल अवगिआ न बीचारि है । (३२६-४)
जैसे खनवारा खानि खनत हनत घन (३२६-५)
मानक हीरा अमोल परउपकार है । (३२६-६)
ऊख मै पिऊख जिउ प्रगास होत कोलू पचै (३२६-७)
अवगुन कीइे गुन साधन कै दुआर है ॥३२६॥ (३२६-८)

साधुसंगि दरसन को है नितनेमु जाको (३२७-१)
सोई दरसनी समदरस धिआनी है । (३२७-२)
सबद बिबेक इेक टेक जाकै मनि बसै (३२७-३)
मानि गुरगिआन सोई ब्रहमगिआनी है । (३२७-४)
दृसटि दरस अरु सबद सुरति मिलि (३२७-५)
प्रेमी पृअ प्रेम उनमन उनमानी है । (३२७-६)
सहज समाधि साधसंगि इिकरंग जोई (३२७-७)
सोई गुरमुखि निरमल निरबानी है ॥३२७॥ (३२७-८)

दरस धिआन धिआनी सबद गिआन गिआनी (३२८-१)
चरन सरनि दृड़ माइिआ मै उ़ुदासी है । (३२८-२)
हउमै तिआगि तिआगी बिसमाद कै बैरागी भइे (३२८-३)
तृगुन अतीति चीत अनभै अभिआसी है । (३२८-४)
दुबिधा अपरस अउ साध इिंद्री निग्रहि कै (३२८-५)
आतम पूजा बिबेकी सुन्न मै संनिआसी है । (३२८-६)
सहजसुभाव करि जीवनमुकति भइे (३२८-७)
सेवा सरबातम कै ब्रहम बिस=छधासी है ॥३२८॥ (३२८-८)

जैसे जल अंतरि जुगंतर बसै पाखान॥ (३२९-१)
भिदै न रिदै कठोर बूडै बज्र भार कै । (३२९-२)
अठसठितीरथ मजन करै तोबरी तउ॥ (३२९-३)
मिटत न करवाई भोइे वार पार कै । (३२९-४)
अहिनिसि अहि लपटानो रहै चंदनहि॥ (३२९-५)
तजत न बिखु तऊ हउमै अह्मकार कै । (३२९-६)
कपट सनेह देह निहफल जगत मै (३२९-७)
संतन को है दोखी दुबिधा बिकार कै ॥३२९॥ (३२९-८)

जैसे निरमल दरपन मै न चित्र कछू (३३०-१)
सकल चरित्र चित्र देखत दिखावई । (३३०-२)
जैसे निरमल जल बरन अतीत रीत (३३०-३)
सकल बरन मिलि बरन बनावई । (३३०-४)
जैसे तउ बसुंधरा सुआद बासना रहित (३३०-५)
अउखधी अनेक रस गंध उपजावई । (३३०-६)
तैसे गुरदेव सेव अलख अभेव गति॥ (३३०-७)
जैसे जैसो भाउ तैसी कामना पुजावई ॥३३०॥ (३३०-८)

सुख दुख हानि मृत पूरब लिखत लेख (३३१-१)
जंत्र कै न बसि कछु जंत्री जगदीस है । (३३१-२)
भोगत बिवसि मेव करम किरत गति (३३१-३)
जसि करतो सिलेप कारन को ईस है । (३३१-४)
करता प्रधान किधौ करम किधौ है जीउ (३३१-५)
घाटि बाढि कउन कउन मतु बिस=छधाबीस है । (३३१-६)
असतुति निंदा कहा बिआपत हरख सोग (३३१-७)
होनहार कहौ कहाँ गारि अउ असीस है ॥३३१॥ (३३१-८)

मानसर पर जउ बैठाईअै ले जाइि बग॥ (३३२-१)
मुकता अमोल तजि मीठ बीनि खात है । (३३२-२)
असथन पान करबे कउ जउ लगाईअै जोक॥ (३३२-३)
पीअतन पै लै लोहू अचइे अघात है । (३३२-४)

परमसुगंध परि माखी न रहत राखी॥ (३३२-५)
महादुरगंध परि बेगि चलि जात है । (३३२-६)
जैसे गज मजन के डारत है छारु सिरि (३३२-७)
संतन कै दोखी संत संगु न सुहात है ॥३३२॥ (३३२-८)

गुरमति सति इेक टेक दुतीआ ना सति॥ (३३३-१)
सिव न सकत गति अनभै अभिआसी है । (३३३-२)
तृगुन अतीत जीत न हार न हरख सोग (३३३-३)
संजोग बिएग मेटि सहज निवासी है । (३३३-४)
चतुरबरन इिक बरन हुइि साधसंग (३३३-५)
पंच परपंच तिआगि बिसम बिस=छधासी है । (३३३-६)
खटदरसन परै पार हुइि सपतसर (३३३-७)
नवदुआर उलंघि दसमई उदासी है ॥३३३॥ (३३३-८)

नदी नाव को संजोग सुजन कुटंब लोगु (३३४-१)
मिलिए होइिगो सोई मिलै आगै जाइिकै । (३३४-२)
असन बसन धन संग न चलत चले॥ (३३४-३)
अरपे दीजै धरमसाला पहुचाइिकै । (३३४-४)
आठोजाम साठोघरी निहफल माइिआ मोह (३३४-५)
सफल पलक साधसंगति समाइिकै । (३३४-६)
मल मूत्र धारी अउ बिकारी निरंकारी होत॥ (३३४-७)
सबद सुरति साधसंग लिव लाइिकै ॥३३४॥ (३३४-८)

हउमै अभिमान असथान तजि बंझ बन (३३५-१)
चरनकमल गुर संपट समाइि है । (३३५-२)
अति ही अनूप रूप हेरत हिराने दृग (३३५-३)
अनहद गुंजत स्रवन हू सिराइे है । (३३५-४)
रसना बिसम अति मधु मकरंद रस (३३५-५)
नासिका चकत ही सुबासु महकाइे है । (३३५-६)
कोमलता सीतलता पंग सरबंग भइे॥ (३३५-७)
मनमधुकर पुनि अनत ना धाइे है ॥३३५॥ (३३५-८)

बाँसना को बासु दूत संगति बिनास काल (३३६-१)
चरनकमल गुर इेक टेक पाई है । (३३६-२)
भैजल भइिआनक लहरि न बिआपि सकै (३३६-३)
निजघर संपट कै दुबिधा मिटाई है । (३३६-४)
आन गिआन धिआन सिमरन सिमरन कै (३३६-५)
प्रेमरस बसि आसा मनसा न पाई है । (३३६-६)
दुतीआ नासति इेक टेक निहचल मति॥ (३३६-७)
सहज समाधि उनमन लिव लाई है ॥३३६॥ (३३६-८)

चरनकमल रज मसतकि लेपन कै (३३७-१)
भरम करम लेख सिआमता मिटाई है । (३३७-२)
चरनकमल चरनामृतमलीन मनि (३३७-३)
करि निरमल दूत दुबिधा मिटाई है । (३३७-४)
चरनकमल सुख संपट सहज घरि (३३७-५)
निहचल मति इेक टेक ठहराई है । (३३७-६)
चरनकमल गुर महिमा अगाधि बोधि (३३७-७)
सरब निधान अउ सकल फलदाई है ॥३३७॥ (३३७-८)

चरनकमल रज मजन कै दिबि देह (३३८-१)
महा मलमूत्रधारी निरंकारी कीने है । (३३८-२)
चरनकमल चरनामृत निधान पान (३३८-३)
तृगुन अतीत चीत आपा आप चीने है । (३३८-४)
चरनकमल निज आसन सिंघासन कै (३३८-५)
तृभवन अउ तृकाल गंम्मिता प्रबीने है । (३३८-६)
चरनकमल रस गंध रूप सीतलता (३३८-७)
दुतीआ नासति इेक टेक लिव लीने है ॥३३८॥ (३३८-८)

चरनकमल रज मजन प्रताप अति (३३९-१)
पुरब तीरथ कोटि छरन सरनि है । (३३९-२)
चरनकमल रज मजन प्रताप अति (३३९-३)
देवी देव सेवक हुइ पूजत चरन है । (३३९-४)
चरनकमल रज मजन प्रताप अति (३३९-५)
कारन अधीन हुते कीन कारन करन है । (३३९-६)
चरनकमल रज मजन प्रताप अति (३३९-७)
पतित पुनीत भइे तारन तरन है ॥३३९॥ (३३९-८)

मानसर ह्मस साधसंगति परमह्मस॥ (३४०-१)
धरमधुजा धरमसाला चल आवई । (३४०-२)
उत मुकताहल अहार दुतीआ नासति (३४०-३)
इित गुरसबद सुरति लिव लावही । (३४०-४)
उत खीर नीर निरवारो कै बखानीअत (३४०-५)
इित गुरमति दुरमति समझावही । (३४०-६)
उत बग ह्मस बंस दुबिधा न मेटि सकै (३४०-७)
इित काग पागि समरूप कै मिलावही ॥३४०॥ (३४०-८)

गुरसिख संगति मिलाप को प्रतापु छिन (३४१-१)
सिव सनकादि ब्रहमादिक न पावही । (३४१-२)
सिंमृति पुरान बेद सासत्र अउ नाद बाद॥ (३४१-३)
राग रागनी हू नेत नेत करि गावही । (३४१-४)
देवी देव सरब निधान अउ सकल फल॥ (३४१-५)

स=छधरग समूह सुख धिआन धर धिआवही । (३४१-६)
पूरन ब्रहम सतिगुर सावधान जानि (३४१-७)
गुरसिख सबद सुरति लिव लावही ॥३४१॥ (३४१-८)

रचना चरित्र चित्र बिसम बचित्रपन (३४२-१)
काहू सो न कोऊ कीने इेक ही अनेक है । (३४२-२)
निपट कपट घट घट नट वट नट (३४२-३)
गुपत प्रगट अटपट जावदेक है । (३४२-४)
दृसटि सी दृसटि न दरसन सो दरसु (३४२-५)
बचन सो बचन न सुरति समेक है । (३४२-६)
रूप रेख लेख भेख नाद बाद नाना बिधि (३४२-७)
अगम अगाधि बोध ब्रहम बिबेक है ॥३४२॥ (३४२-८)

सतिरूप सतिगुर पूरन ब्रहमधिआन॥ (३४३-१)
सतिनामु सतिगुर ते पारब्रहम है । (३४३-२)
सतिगुर सबद अनाहद ब्रहमगिआन॥ (३४३-३)
गुरमुखि पंथ सति गंमिता अगंम है । (३४३-४)
गुरसिख साधसंग ब्रहमसथान सति (३४३-५)
कीरतन समै हुइि सावधान सम है । (३४३-६)
गुरमुखि भावनी भगति भाउ चाउ सति (३४३-७)
सहज सुभाउ गुरमुखि नमो नम है ॥३४३॥ (३४३-८)

निरंकार निराधार निराहार निरबिकार (३४४-१)
अजोनी अकाल अपरंपर अभेव है । (३४४-२)
निरमोह निरबैर निरलेप निरदोख (३४४-३)
निरभै निरंजन अतह पर अतेव है । (३४४-४)
अबिगति अगम अगोचर अगाधि बोधि (३४४-५)
अचुत अलख अति अछल अछेव है । (३४४-६)
बिसमै बिसम असचरजै असचरजमै (३४४-७)
अदभुत परमदभुत गुरदेव है ॥३४४॥ (३४४-८)

कारतक मास रुति सरद पूरनमासी (३४५-१)
आठ जाम साठि घरी आजु तेरी बारी है । (३४५-२)
अउसर अभीच बहुनाइिक की नाइिका हुइि (३४५-३)
रूप गुन जोबन सिंगार अधिकारी है । (३४५-४)
चातिर चतुर पाठ सेवक सहेली साठि (३४५-५)
संपदा समग्री सुख सहज सचारी है । (३४५-६)
सुंदर मंदर सुभ लगन संजोग भोग (३४५-७)
जीवन जनम धंनि प्रीतम पिआरी है ॥३४५॥ (३४५-८)

दिनकर किरनि सुहात सुखदाई अंग (३४६-१)

रचत सिंगारअभरन सखी आइकै । (३४६-२)
पृथम उबटना कै सीस मै मलउनी मेलि (३४६-३)
मजन उसन जल निरमल भाइे कै । (३४६-४)
कुसम अवेस केस बासत फुलेल मेल (३४६-५)
अंग अरगजा लेप होत उपजाइकै । (३४६-६)
चीर चार दरपन मधि आपा आपु चीनि॥ (३४६-७)
बैठी परजंक परि धावरी न धाइकै ॥३४६॥ (३४६-८)

ककही दै माग उरझाइे सुरझाइे केस (३४७-१)
कुंकम चंदन को तिलक दे ललार मै । (३४७-२)
अंजन खंजन दृग बेसरि करन फूल॥ (३४७-३)
बारी सीस फूल दै तमोलरस मुख दुआर मै । (३४७-४)
कंठसरी कपोति मरकत अउ मुकताहल॥ (३४७-५)
बरन बरन फूल सोभा उर हार मै । (३४७-६)
चचरचरी कंकन मुंदिका मिहदी बनी, ॥ (३४७-७)
अंगीआ अनूप छुद्रपीठि कट धार मै ॥३४७॥ (३४७-८)

सोभित सरद निसि जगमग जोति ससि॥ (३४८-१)
प्रथम सहेली कहै प्रेमरसु चाखीअै । (३४८-२)
पूरन क्रिपा कै तेरै आइि है क्रिपानिधान ॥ (३४८-३)
मिलीअै निरंतर कै हुइि अंतरु न राखीअै । (३४८-४)
चरनकमल मकरंद रस लुभित हुइि॥ (३४८-५)
मन मधुकर सुख संपट भिलाखीअै । (३४८-६)
जोई लजाइि पाईअै न पुनि पदम दै॥ (३४८-७)
पलक अमोल पृअ संग मुख साखीअै ॥३४८॥ (३४८-८)

कंचन असुध जैसे भ्रमत कुठारी बिखै (३४९-१)
सुध भइे भ्रमत न पावक प्रगास है । (३४९-२)
जैसे कर कंकन अनेक मै प्रगट धुनि (३४९-३)
इेकै इेक टेक पुनि धुनि को बिनास है । (३४९-४)
खुधिआ कै बालक बिललात अकुलात अत॥ (३४९-५)
असथन पान करि सहजि निवास है । (३४९-६)
तैसे माइिआ भ्रमत भ्रमत चतुर कुंट धावै (३४९-७)
गुर उपदेस निहचल गृहि पद बास है ॥३४९॥ (३४९-८)

जैसे दीप दिपत भवन उजीआरो होत (३५०-१)
सगल समग्री गृहि प्रगट दिखात है । (३५०-२)
एतिपोत जोति होत कारज बाछत सिधि (३५०-३)
आनद बिनोद सुख सहजि बिहात है । (३५०-४)
लालच लुभाइिरसु लुबत नाना पतंग (३५०-५)
बुझत ही अंधकार भइे अकुलात है । (३५०-६)

तैसे बिदिमानि जानीऐ न महिमा महाँत (३५०-७)
अंतिरीछ भइे पाछै लोग पछुतात है ॥३५० (३५०-८)

जैसे दीप दिपत महातमै न जानै कोऊ (३५१-१)
बुझत ही अंधकार भटकत राति है । (३५१-२)
जैसे द्रुम आँगनि अछित महिमा न जानै (३५१-३)
काटत ही छाँहि बैठेबे कउ बिललात है । (३५१-४)
जैसे राजनीति बिखै चैन हुइि चतुरकुंट (३५१-५)
छत्र ढाला चाल भइे जंत्र कंत्र जात है । (३५१-६)
तैसे गुरसिख साध संगम जुगति जग (३५१-७)
अंतरीछ भइे पाछे लोग पछुतात है ॥३५१॥ (३५१-८)

जउ जानै अनूप रूप दृगन कै देखीअत (३५२-१)
लोचन अछत अंध काहे ते न पेखही । (३५२-२)
जउ जानै सबदुरस रसना बखानीअत (३५२-३)
जिहबा अछत कत गुंग न सरेख ही । (३५२-४)
जउपै जाने राग नाद सुनीअत स्रवन कै (३५२-५)
स्रवन सहत किउ बहरो बिसेख ही । (३५२-६)
नैन जिहबा स्रवन को न कछूऐ बसाइि (३५२-७)
सबद सुरति सो अलख अलेख ही ॥३५२॥ (३५२-८)

जननी जतन करि जुगवै जठर राखै (३५३-१)
तातेपिंड पूरन हुइि सुत जनमत है । (३५३-२)
बहुरिए अखादि खादि संजम सहिदि रहै (३५३-३)
ताही ते पै पीअत अरोगपन पत है । (३५३-४)
मलमूत्र धार को बिचार न बिचारै चित (३५३-५)
करै प्रतिपाल बालु तऊ तन गत है । (३५३-६)
तैसे अरभकु रूप सिख है संसार मधि (३५३-७)
सरीगुर दइिआल की दइिआ सन गत है ॥३५३॥ (३५३-८)

जैसे तउ जननी खान पान कउ संजमु करै (३५४-१)
ताते सुत रहै निरबिघन अरोग जी । (३५४-२)
जैसे राजनीति रीत चक्रवै चेतन्न रूप (३५४-३)
ताते निहचिंत निरभै बसत लोग जी । (३५४-४)
जैसे करीआ समुंद्र बोहथ मै सावधान (३५४-५)
ताते पारि पहुचत पथिक असोग जी । (३५४-६)
तैसे गुर पूरन ब्रहम गिआन धिआन लिव (३५४-७)
ताते निरदोख सिख निजपद जोग जी ॥३५४॥ (३५४-८)

जननी सुतहि जउ धिकार मारि पिआरु करै (३५५-१)
पिआर झिरकारु देखि सकत न आन को । (३५५-२)

जननी को पिआरु अउ धिकार उपकार हेत (३५५-३)
आन को धिकार पिआर है बिकार प्रान को । (३५५-४)
जैसे जल अगनि मै परै बूड मरै जरै (३५५-५)
तैसे क्रिपा कोप आनि बनिता अगिआन को । (३५५-६)
तैसे गुरसिखन कउ जुगवत जतन कै (३५५-७)
दुबिधा न बिआपै प्रेम परमनिधान को ॥३५५॥ (३५५-८)

जैसे कर गहत सरप सुत पेखि माता (३५६-१)
कहै न पुकार फुसलाइ उर मंड है । (३५६-२)
जैसे बेद रोगी प्रति कहै न बिथार बृथा (३५६-३)
संजम कै अउखद खवाइ रोग डंड है । (३५६-४)
जैसे भूलि चूकि चटीआ की न बीचारै पाधा (३५६-५)
कहि कहि सीखिआ मूरखत मति खंड है । (३५६-६)
तैसे पेखि अउगुन कहै न सतिगुर काहू (३५६-७)
पूरन बिबेक समझावत प्रचंड है ॥३५६॥ (३५६-८)

जैसे मिसटान पान पोखि तोखि बालकहि (३५७-१)
असथन पान बानि जननी मिटावई । (३५७-२)
मिसरी मिलाइ जैसे अउखद खवावै बैदु (३५७-३)
मीठो करि खात रोगी रोगहि घटावई । (३५७-४)
जैसे जलु सीचि सीचि धानहि क्रिसान पालै (३५७-५)
परपक भइे काटि घर मै लै आवई । (३५७-६)
तैसे गुर कामना पुजाइ निहकाम करि (३५७-७)
निजपद नामु धामु सिखै पहुचावई ॥३४७॥ (३५७-८)

गिआन धिआन प्रान सुत राखत जननी प्रति (३५८-१)
अवगुन गुन माता चित मै न चेत है । (३५८-२)
जैसे भरतारि भारि नारि उरहारि मानै (३५८-३)
ताते लालु ललना को मानु मनि लेत है । (३५८-४)
जैसे चटीआ सभीत सकुचत पाधा पेखि (३५८-५)
ताते भूलि चूकि पाधा छाडत न हेत है । (३५८-६)
मन बच क्रम गुर चरन सरनि सिखि (३५८-७)
ताते सतिगुर जमदूतहि न देत है ॥३५८॥ (३५८-८)

कोटनि कोटानि काम कटक हुइ कामारथी (३५९-१)
कोटनि कोटानि क्रोध क्रोधीवंत आहि जी । (३५९-२)
कोटनि कोटानि लोभ लोभी हुइ लालचु करै (३५९-३)
कोटनि कोटानि मोह मोहै अवगाहि जी । (३५९-४)
कोटनि कोटानि अह्मकार अह्मकारी हुइ (३५९-५)
रूप रिप संपै सुख बल छल चाहि जी । (३५९-६)
सतिगुर मिखन के रोमहि न चाँप सकै (३५९-७)

जाँपै गुर गिआन धिआन ससत्रन सनाहि जी ॥३५६॥ (३५६-८)

जैसे तउ सुमेर ऊच अचल अगम अति (३६०-१)
पावक पवन जल बिआप न सकत है । (३६०-२)
पावक प्रगास तास बानी चउगुनी चड़त (३६०-३)
पउन गौन धूरि दूरि होइ चमकति है । (३६०-४)
संगम सलल मलु धोइ निरमल करै (३६०-५)
हरै दुख देख सुनि सुजम बकति है । (३६०-६)
तैसे गुरसिख जोगी तृगुन अचीत चीत (३६०-७)
स्रीगुर सबद रस अंमृत छकति है ॥३६०॥ (३६०-८)

जैसे सुकदेव के जनम समै जाको जाको (३६१-१)
जनम भइिए ते सकल सिधि जानीऐ । (३६१-२)
स्वाँतबूंद जोई जोई परत समुंद्र बिखै (३६१-३)
सीप कै संजोग मुकताहल बखानीऐ । (३६१-४)
बावन सुगंध संबंध पउन गउन करै (३६१-५)
लागै जाही जाही द्रुम चंदन समानीऐ (३६१-६)
तैसे गुरसिख संग जो जो जागत अंमृत जोग (३६१-७)
सबदु प्रसादि मोख पद परवानीऐ ॥३६१॥ (३६१-८)

तीरथ जात्रा समै न इेक सै आवत सबै (३६२-१)
काहू साध पाछै पाप सबन के जात है । (३६२-२)
जैसे नृप सैना समसरि न सकल होत (३६२-३)
इेक इेक पाछे कई कोटि परे खात है । (३६२-४)
जैसे तउ समुंद्र जल बिमल बोहिथ बसै (३६२-५)
इेक इेक मै अनेक पारि पहुचात है । (३६२-६)
तैसे गुरसिख साखा अनिक संसार दुआर (३६२-७)
सनमुख एट गहे कोट बिआसात है ॥३६२॥ (३६२-८)

भाँजन कै जैसे कोऊ दीपकै दुराइे राखै (३६३-१)
मंदर मै अछत ही दूसरो न जानई । (३६३-२)
जउपै रखवईआ पुनि प्रगट प्रगास करै (३६३-३)
हरै तम तिमर उदोत जोत ठानई । (३६३-४)
सगल समग्री गृहि पेखिऐ प्रतछि रूप (३६३-५)
दीपक दिपईआ ततखन पहिचानई । (३६३-६)
तैसे अवघट घट गुपत जोती सरूप (३६३-७)
गुर उपदेस उनमानी उनमानई ॥३६३॥ (३६३-८)

जैसे बृथावंत जंत अउखद हिताइि रिदै (३६४-१)
बृथा बलु बिमुख होइि सहजि निवास है । (३६४-२)
जैसे आन धात मै तनक ही कलंक डारे (३६४-३)

अनक बरन मेटि कनकि प्रगास है । (३६४-४)
जैसे कोटि भारि कर कासटि इकत्रता मै (३६४-५)
रंचक ही आँच देत भसम उदास है । (३६४-६)
तैसे गुर उपदेस उर अंतर प्रवेस भइे (३६४-७)
जनम मरन दुख दोखन बिनास है ॥३६४॥ (३६४-८)

जैसे अनी बान की रहत टूटि देही बिखै (३६५-१)
चुंबक दिखाइे ततकाल निकसत है । (३६५-२)
जैसे जोक तोंबरी लगाईत रोगी तन (३६५-३)
अैच लेत रुधर बृथा समु खसत है । (३६५-४)
जैसे जुवतिन प्रति मरदन करै दाई (३६५-५)
गरभ सथंभन हुइि पीड़ा न ग्रसत है । (३६५-६)
तैसे पाँचो दूत भूत बिभरम हुइि भागि जाति (३६५-७)
सतिगुर मंत जंत रसना रसत है ॥३६५॥ (३६५-८)

जैसे तउ सफल बन बिखै बिरख बिबिधि (३६६-१)
जाको फलु मीठो खग तापो चलि जाति है । (३६६-२)
जैसे परबत बिखै देखीअै पाखान बहु (३६६-३)
जामै तो हीरा खोजी खोज खनवारा ललचात है । (३६६-४)
जैसे तउ जलधि मधि बसत अनंत जंत (३६६-५)
मुकता अमोल जामै ह्मस खोज खात है । (३६६-६)
तैसे गुर चरन सरनि है असंख सिख (३६६-७)
जामै गुर गिआन ताहि लोक लपटात है ॥३६६॥ (३६६-८)

फउरहा ३६७ सि मसिसनिग.

जैसे ससि जोति होत पूरन प्रगास तास (३६८-१)
चितवत चक्रत चकोर धिआन धार ही । (३६८-२)
जैसे अंधकार बिखै दीपही दिपत देखि (३६८-३)
अनिक पतंग एतपोति होइि गुंजार ही । (३६८-४)
जैसे मिसटान पान जान काज भाँजन मै (३६८-५)
राखत ही चीटी कोटि लोभ लुभत अपार ही । (३६८-६)
तैसे परमनिधान गुर गिआन परवान जामै (३६८-७)
सकल संसार तास चरन नमसकार ही ॥३६८॥ (३६८-८)

जैसे अहि अगनि कउ बालक बिलोक धावै (३६९-१)
गहि गहि राखै माता सुत बिललात है । (३६९-२)
बृखावंत जंत जैसे चाहत अखादि खादि (३६९-३)
जतन कै बेद जुगवत न सुहात है । (३६९-४)
जैसे पंथ अपंथ बिबेकहि न बूझै अंध (३६९-५)
कटि गहे अटपटी चाल चलिए जात है । (३६९-६)

तैसे कामना करत कनिक अउ कामनी की (३६६-७)
राखै निरलेप गुरसिख अकुलात है ॥३६६॥ (३६६-८)

जैसे माता पिता अनेक उपजात सुत (३७०-१)
पूंजी दै दै बनज बिउहारहि लगावही । (३७०-२)
किरत बिरत करि कोऊ मूलि खोवै रोवै (३७०-३)
कोऊ लाभ लभति कै चउगुनो बढावही । (३७०-४)
जैसो जैसो जोई कुला धरम है करम करै (३७०-५)
तैसो तैसो जसु अपजसु प्रगटावही । (३७०-६)
तैसे सतिगुर समदरसी पुहुप गत , (३७०-७)
सिख साखा बिबिधि बिरख फल पावही ॥३७०॥ (३७०-८)

जैसे नरपति बहु बनता बिवाह करै (३७१-१)
जाकै जनमत सुत वाही गृहि राज है । (३७१-२)
जैसे दधि मधि चहूं एर मै बोहथ चलै (३७१-३)
जोई पार पहुचै पूरन सब काज है । (३७१-४)
जैसे खानि खनत अनंत खनवारा खोजी (३७१-५)
हीरा हाथि चड़ै जाकै ताकै बाजु बाज है । (३७१-६)
तैसे गुरसिख नवतन अउ पुरातनादि (३७१-७)
का परि कटाछि क्रिपा ताकै छबि छाज है ॥३७१॥ (३७१-८)

बूंद बूंद बरख पनारे बहि चलै जलु (३७२-१)
बहुरिए उमगि बहै बीथी बीथी आइकै । (३७२-२)
ताते नोरा नोरा भरि चलत चतरकुंट (३७२-३)
सरिता सरिता प्रति मिलत है जाइकै । (३७२-४)
सरिता सकल जल प्रबल प्रवाह चलि (३७२-५)
संगम समुंद्र होत समत समाइकै । (३७२-६)
जामै जैसीऐ समाई तैसीऐ महिमा बडाई (३७२-७)
एछौ अउ गंभीर धीर बूझीऐ बुलाइकै ॥३७२॥ (३७२-८)

जैसे हीरा हाथ मै तनक सो दिखाई देत (३७३-१)
मोल कीइे दमकन भरत भंडार जी । (३७३-२)
जैसे बर बाधे हुंडी लागत न भार कछु (३७३-३)
आगै जाइ पाईअत लछमी अपार जी । (३७३-४)
जैसे बटि बीज अति सूखम सरूप होत (३७३-५)
बोइे सै बिबिधि करै बिरखा बिसथार जी । (३७३-६)
तैसे गुर बचन सचन गुरसिखन मै (३७३-७)
जानीऐ महातम गइे ही हरिदुआर जी ॥३७३॥ (३७३-८)

जैसे मद पीअत न जानीऐ मरंमु ताको (३७४-१)
पाछै मतवारो होइि छकै छक जाति है । (३७४-२)

जैसे ठारि भेटत भतारहि न भेदु जानहि (३७४-३)
उदित अधान आन चिहनि दिखात है । (३७४-४)
करि परि मानकु न लागत है भारी तोल (३७४-५)
मोल संखिआ दमकन हेरत हिराति है । (३७४-६)
तैसे गुर अंमृत बचन सुनि मानै सिख (३७४-७)
जानै महिमा जउ सुख सागर समात है ॥३७४॥ (३७४-८)

जैसे मछ कछ बग ह्मस मुकता पाखान (३७५-१)
अंमृत बिखै प्रगास उदधि सै जानीऐ । (३७५-२)
जैसे तारो तारी तउ आरसी सनाह ससत्र (३७५-३)
लोह इेक से अनेक रचना बखानीऐ । (३७५-४)
भाँजन बिबिधि जैसे होत इेक मिरतका सै (३७५-५)
खीर नीर बिंजनादि अउखद समानीऐ । (३७५-६)
तैसे दरसन बहु बरन आस्रम ध्रम (३७५-७)
सकल गृहसतु की साखा उनमानीऐ ॥३७५॥ (३७५-८)

जैसे सरि सरिता सकल मै समुंद्र बडो (३७६-१)
मेर मै सुमेर बडो जगतु बखान है । (३७६-२)
तरवर बिखै जैसे चंदन बिरखु बडो (३७६-३)
धात मै कनक अति उतम कै मान है ।॥ (३७६-४)
पंछीअन मै ह्मस मृग राजन मै सारदूल (३७६-५)
रागन मै सिरीरागु पारस पखान है । (३७६-६)
गिआँनन मै गिआनु अरु धिआनन मै धिआन गुर (३७६-७)
सकल धरम मै गृहसतु प्रधान है ॥३७६॥ (३७६-८)

तीरथ मजन करबै को है इिहै गुनाउ (३७७-१)
निरमल तन तृखा तपति निवारीऐ । (३७७-२)
दरपन दीप कर गहे को इिहै गुनाउ (३७७-३)
पेखत चिहन मग सुरति संमारीऐ । (३७७-४)
भेटत भतार नारि को इिहै गुनाउ (३७७-५)
स=छधाँतबूंद सीप गति लै गरब प्रतिपारीऐ । (३७७-६)
तैसे गुर चरनि सरनि को इिहै गुनाउ (३७७-७)
गुर उपदेस करि हारु उरिधारीऐ ॥३७७॥ (३७७-८)

जैसे माता पिता न बीचारत बिकार सुत॥ (३७८-१)
पोखत सप्रेम बिहसत बिहसाइिकै । (३७८-२)
जैसे बृथावंत जंत बैदहि बृताँत कहै (३७८-३)
परख परीखा उपचारत रसाइिकै । (३७८-४)
चटीआ अनेक जैसे इेक चटिसार बिखै॥ (३७८-५)
बिदिआवंत करै पाधा प्रीति सै पड़ाइिकै । (३७८-६)
तैसे गुरसिखन कै अउगुन अवगिआ मेटै॥ (३७८-७)

ब्रहम बिबेक सै सहज समझाइकै ॥३७८॥ (३७८-८)

जैसे तउ करत सुत अनिक इिआनपन॥ (३७९-१)
तऊ न जननी अतुगन उरि धारिए है । (३७९-२)
जैसे तउ सरनि सूरि पूरन परतगिआ राखै॥ (३७९-३)
अनिक अवगिआ कीड़े मारि न बिडारिए है । (३७९-४)
जैसे तउ सरिता जलु कासटहि न बोरत॥ (३७९-५)
करत चित लाज अपनोई प्रतिपारिए है । (३७९-६)
तैसे ही परम गुर पारस परस गति॥ (३७९-७)
सिखन को किरतु करमु कछू ना बिचारिए है ॥३७९॥ (३७९-८)

जोई कुला धरम करम कै सुचार चार॥ (३८०-१)
सोई परवारि बिखै स्रेसटु बखानीऐ । (३८०-२)
बनजु बिउहार साचो साह सनमुख सदा॥ (३८०-३)
सोई तउ बनउटा निहकपट कै मानीऐ । (३८०-४)
सुआम काम सावधान मानत नरेस आन॥ (३८०-५)
सोई स=छधाम कारजी प्रसिधि पहिचानीऐ । (३८०-६)
गुर उपदेस परवेस रिदि अंतरि है॥ (३८०-७)
सबद सुरति सोई सिख जग जानीऐ ॥३८०॥ (३८०-८)

जल कै धरन अरु धरन कै जैसे जलु॥ (३८१-१)
प्रीति कै परसपर संगमु समारि है । (३८१-२)
जैसे जल सीच कै तमालि प्रतिपालीअत॥ (३८१-३)
बोरत न कासटहि ज=छधाला मै न जारि है । (३८१-४)
लोसट कै जड़ि गड़ि बोहथि बनाईअत॥ (३८१-५)
लोसटहि सागर अपार पार पार है । (३८१-६)
प्रभ कै जानीजै जनु जन कै जानीजै प्रभ॥ (३८१-७)
ताते जन को न गुन अउगुन बीचारि है ॥३८१॥ (३८१-८)

बिआह समै जैसे दुहूं एर गाईअति गीत॥ (३८२-१)
इेकै हुइि लभति इेकै हानि कानि जानीऐ । (३८२-२)
दुहूं दल बिखै जैसे बाजत नीसान तान॥ (३८२-३)
काहू कउ जै काहू कउ पराजै पहिचानीऐ । (३८२-४)
जैसे दुहूं कूलि सरिता मै भरि नाउ चलै॥ (३८२-५)
कोऊ माझिधारि कोऊ पारि परवानीऐ । (३८२-६)
धरम अधरम करम कै असाध साध॥ (३८२-७)
ऊच नीच पद्वी प्रसिध उनमानीऐ ॥३८२॥ (३८२-८)

पाहन की रेख आदि अंति निरबाहु करै॥ (३८३-१)
टरै न सनेहु साध बिग्रहु असाध को । (३८३-२)
जैसे जल मैलकीर धीर न धरति तत (३८३-३)

अधम की प्रीति अउ बिरुध जुध साध को । (३८३-४)
थोहरि उखारी उपकारी अउ बिकारी॥ (३८३-५)
सहजि सुभाव साध अधम उपाध को॥ (३८३-६)
गुंजाफल मानक संसारि तुलाधारि बिखै॥ (३८३-७)
तोलि कै समानि मोल अलप अगाधि को ॥३८३॥ (३८३-८)

जैसे कुलाबधू अंग रचति सीगार खोड़ि॥ (३८४-१)
तई गनिका रचत सकल सिंगार जी । (३८४-२)
कुलाबधू सिहजा समै रमै भतार इेक॥ (३८४-३)
बेस=छधा तउ अनेक सै करत बिबचार जी । (३८४-४)
कुलाबधू संगमु सुजम निरदोख मोख॥ (३८४-५)
बेस=छधा परसत अपजदस हुइि बिकार जी । (३८४-६)
तैसे गुरसिखन कउ परम पवित्र माइिआ॥ (३८४-७)
सोई दुखदाइिक हुइि दहति संसार जी ॥३८४॥ (३८४-८)

सोई लोहा बिसु बिखै बिबिधि बंधन रूप॥ (३८५-१)
सोई तउ कंचन जोति पारस प्रसंग है । (३८५-२)
सोई तउ सिंगार अति सोभत पतिबृता कउ (३८५-३)
सोई अभरनु गनिका रचत अंग है । (३८५-४)
सोई स=छधाँतिबूंद मिल सागर मुकताफल (३८५-५)
सोई स=छधाँतबूंद बिख भेटत भुअंग है । (३८५-६)
तैसे माइिआ किरत बिरत है बिकार जग (३८५-७)
परउपकार गुरसिखन स्रबंग है ॥३८५॥ (३८५-८)

कऊआ जउ मराल सभा जाइि बैठे मानसर॥ (३८६-१)
दुचित उदास बास आस दुरगंध की । (३८६-२)
स=छधान जिउ बैठाईऐ सुभग प्रजंग पार॥ (३८६-३)
तिआगि जाइि चाकी चाटै हीन मत अंध की । (३८६-४)
गरधब अंग अरगजा जउ लेपन कीजै (३८६-५)
लोटत भसम संगि है कुटेव कंध की । (३८६-६)
तैसे ही असाध साधसंगति न प्रीति चीति॥ (३८६-७)
मनसा उपाध अपराध सनबंध की ॥३८६॥ (३८६-८)

निराधार को अधारु आसरो निरासन को॥ (३८७-१)
नाथु है अनाथन को दीन को दइिआलु है । (३८७-२)
असरनि सरनि अउ निरधन को है धन॥ (३८७-३)
टेक अंधरन की अउ क्रिपन क्रिपालु है । (३८७-४)
अक्रितघन के दातार पतति पावन प्रभ (३८७-५)
नरक निवारन प्रतगिआ प्रतिपालु है । (३८७-६)
अवगुन हरन करन करतगिआ स्वामी (३८७-७)
संगी सरबंगि रस रसकि रसालु है ॥३८७॥ (३८७-८)

कोइिला सीतल कर करत सिआम गहे॥ (३८८-१)
परस तपत परदगध करत है । (३८८-२)
कूकर के चाटत कलेवरहि लागै छोति॥ (३८८-३)
काटत सरीर पीर धीर न धरत है । (३८८-४)
फूटत जिउ गागरि परत ही पखान परि॥ (३८८-५)
पाहन परति पुनि गागरि हरत है । (३८८-६)
तैसे ही असाध संगि प्रीत हू बिरोध बुरो (३८८-७)
लोक परलोक दुख दोख न टरत है ॥३८८॥ (३८८-८)

छत्र के बदले जैसे बैठे छतना की छाँह (३८९-१)
हीरा अमोलक बदले फटक कउ पाईऔ । (३८९-२)
जैसे मन कंचन के बदले काचु गुंजाफलु (३८९-३)
काबरी पटंबर के बदले एढाईऔ । (३८९-४)
अंमृत मिसटान पान के बदले करीफल (३८९-५)
केसर कपूर जिउ कचूर लै लगाईऔ । (३८९-६)
भेटत असाध सुख सुक्रित सूखम होत (३८९-७)
सागर अथाह जैसे बेली मै समाईऔ ॥३८९॥ (३८९-८)

कंचन कलस जैसे बाको भइे सूधो होइि (३९०-१)
माटी को कलसु फूटो जुरै न जतन सै । (३९०-२)
बसन मलीन धोइे निरमल होत जैसे॥ (३९०-३)
ऊजरी न होत काँबरी पतन सै । (३९०-४)
जैसे लकुटी अगनि सेकत ही सूधी होइि (३९०-५)
स=छधान पूछि पटंतरो प्रगट मन तन सै । (३९०-६)
तैसे गुरसिखन सुभाउ जल मै न गति॥ (३९०-७)
साकत सुभाव लाख पाहुन गतन सै ॥३९०॥ (३९०-८)

कोऊ बेचै गड़ि गड़ि ससत्र धनख बान (३९१-१)
कोऊ बेचै गड़ि गड़ि बिबिधि सनाह जी । (३९१-२)
कोऊ बेचै गोरस दुगध दध घ्रित नित (३९१-३)
कोऊ बेचै बारुनी बिखम सम चाह जी । (३९१-४)
तैसे ही बिकारी उपकारी है असाध साध (३९१-५)
बिखिआ अंमृत बन देखे अवगाह जी । (३९१-६)
आतमा अचेत पंछी धावत चतुरकुंट (३९१-७)
जैसे ई बिरख बैठे चाखे फल ताह जी ॥३९१॥ (३९१-८)

जैसे इेक जननी कै होत है अनेक सुत॥ (३९२-१)
सबही मै अधिक पिआरो सुत गोद को । (३९२-२)
सिआने सुत बनज बिउहार के बीचार बिखै॥ (३९२-३)
गोद मै अचेतु हेतु संपै न सहोद को । (३९२-४)

पलना सुवाइि माइि गृहि काजि लागै जाइि (३६२-५)
सुनि सुत रुदन पै पीआवै मन मोद को । (३६२-६)
आपा खोइि जोई गुर चरनि सरनि गहे (३६२-७)
रहे निरदोख मोख अनद बिनोद को ॥३६२॥ (३६२-८)

करत न इछा कछु मित्र सत्रत न जानै (३६३-१)
बाल बुधि सुधि नाहि बालक अचेत कउ । (३६३-२)
असन बसन लीइे माता पाछै लागी डोलै (३६३-३)
बोलै मुख अंमृत बचन सुत हेत कउ । (३६३-४)
बालकै असीस दैनहारी अति पिआरी लागै (३६३-५)
गारि दैनहारी बलिहारी डारी सेत कउ । (३६३-६)
तैसे गुरसिख समदरसी अनंदमई॥ (३६३-७)
जैसी जगु मानै तैसी लागै फलु खेत कउ ॥३६३॥ (३६३-८)

जैसे दरपनि दिबि सूर सनमुख राखै (३६४-१)
पावक प्रगास होट किरन चरितृ कै । (३६४-२)
जैसे मेघ बरखत ही बसुंधरा बिराजै (३६४-३)
बिबिधि बनासपती सफल सुमित्र कै । (३६४-४)
भैटत भतारि नारि सोभत सिंगारि चारि (३६४-५)
पूरन अनंद सुत उदिति बचित कै । (३६४-६)
सतिगुर दरसि परसि बिगसत सिख (३६४-७)
प्रापत निधान गिआन पावन पवित्र कै ॥३६४॥ (३६४-८)

जैसे कुलाबधू बुधिवंत ससुरार बिखै (३६५-१)
सावधान चेतन रहै अचार चार कै । (३६५-२)
ससुर देवर जेठ सकल की सेवा करै (३६५-३)
खान पान गिआन जानि प्रिति परवारि कै । (३६५-४)
मधुर बचन गुरजन सै लजावान (३६५-५)
सिहिजा समै रस प्रेम पूरन भतार कै । (३६५-६)
तैसे गुरसिख सरबातम पूजा प्रबीन (३६५-७)
ब्रहम धिआन गुरमूरति अपार कै ॥३६५॥ (३६५-८)

तीरथ पुरब देव जात्रा जात है जगतु (३६६-१)
पुरब तीरथ सुर कोटनि कोटानि कै । (३६६-२)
मुकति बैकुंठ जोग जुगति बिबिध फल॥ (३६६-३)
बाँछत है साध रज कोटि गिआन धिआन कै । (३६६-४)
अगम अगाधि साधसंगति असंख सिख (३६६-५)
स्रीगुर बचन मिले रामरस आनि कै । (३६६-६)
सहज समाधि अपरंपर पुरख लिव (३६६-७)
पूरन ब्रहम सतिगुर सावधान कै ॥३६६॥ (३६६-८)

दृगन कउ जिहबा स्रवन जउ मिलहि (३९७-१)
जैसे देखै तैसो कहि सुनि गावही । (३९७-२)
स्रवन जिहबा अउ लोचन मिलै दिआल (३९७-३)
जैसो सुनै तैसो देखि कहि समझावही । (३९७-४)
जिहबा कउ लोचन स्रवन जउ मिलहि देव (३९७-५)
जैसो कहै तैसो सुनि देखि अउ दिखावही । (३९७-६)
नैन जीह स्रवन स्रवन लोचन जीह (३९७-७)
जिहबा न स्रवन लोचन ललचावही ॥३९७॥ (३९७-८)

आपनो सुअंनि जैसे लागत पिआरो जीअ (३९८-१)
जानीऐ वैसो ई पिआरो सकल संसार कउ । (३९८-२)
आपनो दरबु जैसे राखीऐ जतन करि (३९८-३)
वैसो ई समझि सभ काहू के बिउहार कउ । (३९८-४)
असतुति निंदा सुनि बिआपत हरख सोग (३९८-५)
वैसीऐ लगत जग अनिक प्रकार कउ । (३९८-६)
तैसे कुल धरमु करम जैसो जैसो काको (३९८-७)
उतम कै मानि जानि ब्रहम बृथार कउ ॥३९८॥ (३९८-८)

जैसे नैन बैन पंख सुंदर स्रबंग मोर (३९९-१)
ताके पग एर देखि दोख न बीचारीऐ । (३९९-२)
संदल सुगंध अति कोमल कमल जैसे॥ (३९९-३)
कंटकि बिलोक न अउगन उरधारीऐ । (३९९-४)
जैसे अंमृत फल मिसटि गुनादि स=छधाद (३९९-५)
बीज करवाई कै बुराई न समारीऐ । (३९९-६)
तैसे गुर गिआन दान सबहु सै मागि लीजै (३९९-७)
बंदना सकल भूत निंदा न तकारीऐ ॥३९९॥ (३९९-८)

सवैया (४००-१)
पारस परस दरस कत सजनी॥ (४००-२)
कत वै नैन बैन मन मोहन । (४००-३)
कत वै दसन हसन सोभा निधि (४००-४)
कत वै गवन भवन बन सोहन । (४००-५)
कत वै राग रंग सुख सागर (४००-६)
कत वै दइिआ मइिआ दुख जोहन । (४००-७)
कत वै जोग भोग रस लीला (४००-८)
कत वै संत सभा छबि गोहन ॥४००॥ (४००-९)

कब लागै मसतकि चरनन रज (४०१-१)
दरसु दइिआ दृगन कब देखउ । (४०१-२)
अंमृत बचन सुनउ कब स्रवनन॥ (४०१-३)
कब रसना बेनती बिसेखउ । (४०१-४)

कब कर करउ डंडउत बंद्ना॥ (४०१-५)
पगन परिक्रमादि पुन रेखउ । (४०१-६)
प्रेम भगत प्रतछि प्रानपति॥ (४०१-७)
गिआन धिआन जीवनपद लेखउ ॥४०१॥ (४०१-८)

कबित (४०२-१)
बिरखै बड़िआर लागै जैसे हहिराति पाति (४०२-२)
पंछी न धीरज करि ठउर ठहरात है । (४०२-३)
सरवर घाम लागै बारज बिलख मुख (४०२-४)
प्रान अंत ह्वात जल जंत अकुलात है । (४०२-५)
सारदूल देखै मृगमाल सुकचित बन (४०२-६)
वास मै न त्रास करि आस्रम सुहात है । (४०२-७)
तैसे गुर आँग स=छधाँगि भइे बै चकति सिख (४०२-८)
दुखति उदास बास अति बिललात है ॥४०२॥ (४०२-९)

एला बरखन करखन दामनी बजागि (४०३-१)
सागर लहरि बन जरत अगनि है । (४०३-२)
राजी बिराजी भूकंपका अंतर बृथा बल॥ (४०३-३)
बंद्साल सासना संकट मै मगनु है । (४०३-४)
आपदा अधीन दीन दूखना दरिद्र छिद्र (४०३-५)
भ्रमति उदासरिन दासनि नगन है । (४०३-६)
तैसे ही सृसटि को अदृसटु जउ आइि लागै (४०३-७)
जग मै भगतन के रोम न भघन है ॥४०३॥ (४०३-८)

जैसे चीटी क्रम क्रम कै बिरख चड़ै (४०४-१)
पंछी उडि जाइि बैसे निकटि ही फल कै । (४०४-२)
जैसे गाडी चलीजाति लीकन महि धीरज सै (४०४-३)
घोरो दउरि जाइि बाड़े दाहने सबल कै । (४०४-४)
जैसे कोस भरि चलि सकीअै न पाइिन कै (४०४-५)
आतमा चतुरकुंट धाइि आवै पल कै । (४०४-६)
तैसे लोग बेद भेद गिआन उनमान पछ (४०४-७)
गंम गुर चरन सरन असथल कै ॥४०४ (४०४-८)

जैसे बनराइि परफुलत फल नमिति (४०५-१)
लागत ही फल पत्र पुहप बिलात है । (४०५-२)
जैसे त्रीआ रचत सिंगार भरतार हेति (४०५-३)
भेटत भरतारउर हार न समात है । (४०५-४)
बालक अचेत जैसे करत लीला अनेक (४०५-५)
सुचित चिंतन भइे सभै बिसरात है । (४०५-६)
तैसे खट करम धरम स्रम गिआन काज (४०५-७)
गिआन भान उदै उड करम उडात है ॥४०५॥ (४०५-८)

जैसे ह्नस बोलत ही डाकन हरै करेजौ (४०६-१)
बालक ताही लौ धावै जानै गोदि लेत है । (४०६-२)
रोवत सुतहि जैसे अउखद पीआवै माता॥ (४०६-३)
बालकु जानत मोहि कालकूट देत है । (४०६-४)
हरन भरन गति सतिगुर जानीऐ न (४०६-५)
बालक जुगति मति जगत अचेत है । (४०६-६)
अकल कला अलख अति ही अगाध बोध (४०६-७)
आप ही जानत आप नेत नेत नेत है ॥४०६॥ (४०६-८)

दैत सुत भगत प्रगटि प्रहिलाद भइे (४०७-१)
देव सुत जग मै सनीचर बखानीऐ । (४०७-२)
मधुपुर बासी कंस अधम असुर भइे (४०७-३)
लंका बासी सेवक भभीखन पछानीऐ । (४०७-४)
सागर गंभीर बिखै बिखिआ प्रगास भई (४०७-५)
अहि मसतकि मन उदै उनमानीऐ । (४०७-६)
बरन सथान लघु दीरघ जतन परै (४०७-७)
अकथ कथा बिनोद बिसम न जानीऐ ॥४०७॥ (४०७-८)

चिंतामनि चितवत चिंता चित ते चुराई (४०८-१)
अजोनी अराधे जोनि संकटि कटाइे है । (४०८-२)
जपत अकाल काल कंटक कलेस नासे (४०८-३)
निरभै भजन भ्रम भै दल भजाइे है । (४०८-४)
सिमरत नाथ निरवैर बैर भाउ तिआगिए (४०८-५)
भागिए भेदु खेदु निरभेद गुन गाइे है । (४०८-६)
अकुल अंचल गहे कुल न बिचारै कोऊ (४०८-७)
अटल सरनि आवागवन मिटाइे है ॥४०८॥ (४०८-८)

बाछै न सुवरग बास मानै न नरक त्रास (४०९-१)
आसा न करत चित होनहार होइि है । (४०९-२)
संपत न हरख बिपत मै न सोग ताहि (४०९-३)
सुख दुख समसरि बिहस न रोइि है । (४०९-४)
जनम जीवन मृत मुकति न भेद खेद (४०९-५)
गंमिता तृकाल बाल बुधि अवलोइि है । (४०९-६)
गिआन गुर अंजन कै चीनत निरंजनहि (४०९-७)
बिरलो संसार प्रेम भगत मै कोइि है ॥४०९॥ (४०९-८)

जैसे तउ मिठाई राखीऐ छिपाइि जतन कै (४१०-१)
चीटी चलि जाइि चीनि ताहि लपटात है । (४१०-२)
दीपक जगाइि जैसे राखीऐ दुराइि गृहि (४१०-३)
प्रगट पतंग तामै सहजि समाति है । (४१०-४)

जैसे तउ बिमल जल कमल इकाँत बसै (४१०-५)
मधुकर मधु अचवन तह जात है । (४१०-६)
तैसे गुरमुखि जिह घट प्रगटत प्रेम (४१०-७)
सकल संसारु तिहि दुआर बिललात है ॥४१०॥ (४१०-८)

बाजत नीसान सुनीअत चहूं एर जैसे॥ (४११-१)
उदत प्रधान भान दुरै न दुराइे सै । (४११-२)
दीपक सै दावा भइे सकल संसारु जानै (४११-३)
घटका मै शिंध जैसे छिपै न छिपाइे सै । (४११-४)
जैसे चकवै न छानो रहत सिंघासन सै (४११-५)
देस मै दुहाई फेरे मिटे न मिटाइे सै । (४११-६)
तैसे गुरमुखि पृअ प्रेम को प्रगासु जासु (४११-७)
गुपतु न रहै मोनि बृत उपजाइे सै ॥४११॥ (४११-८)

जउपै देखि दीपक पतंग पछम नो ताकै (४१२-१)
जीवन जनमु कुल लाछन लगावई । (४१२-२)
जउपै नाद बाद सुनि मृग आन गिआन राचै (४१२-३)
प्रान सुख हुइि सबदबेधी न कहावई । (४१२-४)
जउपै जल सै निकस मीन सरजीव रहै (४१२-५)
सहै दुख दूखनि बिरहु बिलखावई । (४१२-६)
सेवा गुर गिआन धिआन तजै भजै दुबिधा कउ (४१२-७)
संगत मै गुरमुख पदवी न पावई ॥४१२॥ (४१२-८)

जैसे इेक चीटी पाछै कोट चीटी चली जाति॥ (४१३-१)
इिक टग पग डग मगि सावधान है । (४१३-२)
जैसे कूंज पाति भलीभाँति साँति सहज मै॥ (४१३-३)
उडत आकासचारी आगै अगवान है । (४१३-४)
जैसे मृगमाल चाल चलत टलत नाहि (४१३-५)
जत्रतत्र अग्रभागी रमत तत धिआन है । (४१३-६)
कीटी खग मृग सनमुख पाछै लागे जाहि (४१३-७)
प्रानी गुर पंथ छाड चलत अगिआन है ॥४१३॥ (४१३-८)

जैसे पृअ संगम सुजसु नाइिका बखानै॥ (४१४-१)
सुनि सुनि सजनी सगल बिगसात है । (४१४-२)
सिमरि सिमरि पृअ प्रेमरस बिसम हुइि (४१४-३)
सोभा देत मोनि गहे मन मुसकात है । (४१४-४)
पूरन अधान परसूत समै रुदन सै॥ (४१४-५)
गुरजन मुदित हुइि ताही लपटात है । (४१४-६)
तैसे गुरमुखि प्रेम भगत प्रगास जासु (४१४-७)
बोलत बैराग मोनि सबहु सुहात है ॥४१४॥ (४१४-८)

जैसे काछी फल हेत बिबिधि बिरख रोपै (४१५-१)
निहफल रहै बिरखै न काहू काज है । (४१५-२)
संतति नमिति नृप अनिक बिवाह करै (४१५-३)
संतति बिहून बनिता न गृह छाजि है । (४१५-४)
बिदिआ दान जान जैसे पाधा चटसार जोरै (४१५-५)
बिदिआ हीन दीन खल नाम उपराजि है । (४१५-६)
सतिगुर सिख साखा संग्रहै सुगिआन नमिति॥ (४१५-७)
बिन गुर गिआन ध्रिग जनम कउ लाजि है ॥४१५॥ (४१५-८)

सुरसरी सुरसती जमना गोदावरी (४१६-१)
गइिआ प्रागि सेत कुरखेत मानसर है । (४१६-२)
कासी काती दुआरावती माइिआ मथुरा अजुधिआ (४१६-३)
गोमती आवंतका केदार हिमधर है । (४१६-४)
नरबदा बिबिधि बन देवसथल कवलास (४१६-५)
नील मंद्राचल सुमेर गिरवर है । (४१६-६)
तीरथ अरथ सत धरम दइिआ संतोख (४१६-७)
स्रीगुर चरन रज तुल न सगर है ॥४१६॥ (४१६-८)

जैसे कुआर कंनिआ मिलि खेलत अनेक सखी (४१७-१)
सकल को इेकै दिन होत न बिवाह जी । (४१७-२)
जैसे बीर खेत बिखै जात है सुभट जेते (४१७-३)
सबै न मरत तेते ससत्रन सनाह जी । (४१७-४)
बावन समीप जैसे बिबिधि बनासपती (४१७-५)
इेकै बेर चंदन करत है न ताहि जी । (४१७-६)
तैसे गुर चरन सरनि जातु है जगत (४१७-७)
जीवनमुकति पद चाहित है जाहि जी ॥४१७॥ (४१७-८)

जैसे गुआर गाइिन चरावत जतन बन (४१८-१)
खेत न परत सबै चरत अघाइिकै । (४१८-२)
जैसे राजा धरम सरूप राजनीत बिखै (४१८-३)
ताके देस परजा बसत सुख पाइिकै । (४१८-४)
जैसे होत खेवट चेतंनि सावधान जामै (४१८-५)
लागै निरबिघन बोहथ पारि जाइिकै । (४१८-६)
तैसे गुर उनमुन मगन ब्रहम जोत (४१८-७)
जीवनमुकति करै सिख समझाइिकै ॥४१८॥ (४१८-८)

जैसे घाउ घाइिल को जतन कै नीको होत (४१९-१)
पीर मिटि जाइि लीक मिटत न पेखीऐ । (४१९-२)
जैसे फाटे अंबरो सीआइि पुनि एढीअत (४१९-३)
नागो तउ न होइि तऊ थेगरी परेखीऐ । (४१९-४)
जैसे टूटै बासनु सवार देत है ठठेरो (४१९-५)

गिरत न पानी पै गठीलो भेख भेखीऐ । (४१९-६)
तैसे गुर चरनि बिमुख दुख देखि पुनि (४१९-७)
सरन गहे पुनीत पै कलंकु लेख लेखीऐ ॥४१९॥ (४१९-८)

देखि देखि दृगन दरस महिमा न जानी (४२०-१)
सुन सुन सबदु महातम न जानिए है । (४२०-२)
गाइि गाइि गंमिता गुन गन गुन निधान (४२०-३)
हसि हसि प्रेम को प्रतापु न पछानिए है । (४२०-४)
रोइि रोइि बिरहा बिएग को न सोग जानिए (४२०-५)
मन गहि गहि मनु मुघटु न मानिए है । (४२०-६)
लोग बेद गिआन उनमान कै न जानि सकिए (४२०-७)
जनम जीवने ध्रिगु बिमुख बिहानिए है ॥४२०॥ (४२०-८)

कोटनि कोटानि मनि को चमतकार वारउ (४२१-१)
ससीअर सूर कोट कोटनि प्रगास जी । (४२१-२)
कोटनि कोटानि भागि पूरन प्रताप छबि (४२१-३)
जगिमगि जोति है सुजस निवास जी । (४२१-४)
सिव सनकादि ब्रहमादिक मनोरथ कै (४२१-५)
तीरथ कोटानि कोट बाछत है तास जी । (४२१-६)
मसतकि दरसन सोभा को महातम अगाधि बोध (४२१-७)
स्रीगुर चरन रज मात्र लागै जास जी ॥४२१॥ (४२१-८)

सवैया खग मृग मीन पतंग चराचर (४२२-१)
जोनि अनेक बिखै भ्रम आइिए । (४२२-२)
सुनि सुनि पाइि रसातल भूतल (४२२-३)
देवपुरी प्रत लउ बहु धाइिए । (४२२-४)
जोग हू भोग दुखादि सुखादिक (४२२-५)
धरम अधरम सु करम कमाइिए । (४२२-६)
हारि परिए सरनागत आइि॥ (४२२-७)
गुरूमुख देख गरू सुख पाइिए ॥४२२॥ (४२२-८)

कवितुचाहि चाहि चंद्र मुख चाइिकै चकोर चखि (४२३-१)
अंमृत किरन अचवत न अघाने है । (४२३-२)
सुनि सुनि अनहद सबद स्रवन मृग (४२३-३)
अनंदु उदोत करि साँति न समाने है । (४२३-४)
रसक रसाल जसु जंपत बासुर निस (४२३-५)
चात्रक जुगत जिहबा न तृपताने है । (४२३-६)
देखत सुनत अरु गावत पावत सुख (४२३-७)
प्रेमरस बस मन मगन हिराने है ॥४२३॥ (४२३-८)

सलिल निवास जैसे मीन की न घटै रुच (४२४-१)

दीपक प्रगास घटै प्रीति न पतंग की । (४२४-२)
कुसम सुबास जैसे तृपति न मधुप कउ (४२४-३)
उडत अकास आस घटै न बिह्मग की । (४२४-४)
घटा घनघोर मोर चात्रक रिदै उलास॥ (४२४-५)
नाद बाद सुनि रति घटै न कुरंग की । (४२४-६)
तैसे पृअ प्रेमरस रसक रसाल संत (४२४-७)
घटत न तृसना प्रबल अंग अंग की ॥४२४॥ (४२४-८)

सलिल सुभाव देखै बोरत न कासटहि॥ (४२५-१)
लाह गहै कहै अपनोई प्रतिपारिए है । (४२५-२)
जुगवत कासट रिदंतरि बैसंतरहि (४२५-३)
बैसंतर अंतरि लै कासटि प्रजारिए है । (४२५-४)
अगरहि जल बोरि काढै बाढै मोल ताको (४२५-५)
पावक प्रदगध कै अधिक अउटारिए है । (४२५-६)
तऊ ताको रुधरु चुड़ि चोआ होड़ि सलल मिल (४२५-७)
अउगनहि गुन मानै बिरदु बीचारिए है ॥४२५॥ (४२५-८)

सलिल सुभाव जैसे निवन गवन गुन (४२६-१)
सीचीअत उपबन बिरवा लगाइकै । (४२६-२)
जलि मिलि बिरखहि करत उरध तप (४२६-३)
साखा नइे सफल हुइ झख रहै आइकै । (४२६-४)
पाहन हनत फलदाई काटे होइ नउका (४२६-५)
लोसट कै छेदै भेदे बंधन बधाइ कै । (४२६-६)
प्रबल प्रवाह सुत सत्र गहि पारि परे (४२६-७)
सतिगुर सिख दोखी तारै समझाइकै ॥४२६॥ (४२६-८)

गुर उपदेस परवेस करि भै भवन (४२७-१)
भावनी भगति इइ चाइकै चईले है । (४२७-२)
संगम संजोग भोग सहज समाधि साध (४२७-३)
प्रेमरस अंमृत कै रसक रसीले है । (४२७-४)
ब्रहम बिबेक टेक इेक अउ अनेक लिव (४२७-५)
बिमल बैराग फबि छबि कै छबीले है । (४२७-६)
परमदभुत गति अति असचरजमै (४२७-७)
बिसम बिदेह उनमन उनमीले है ॥४२७॥ (४२७-८)

जउ लउ करि कामना कामारथी करम कीने (४२८-१)
पूरन मनोरथ भइिए न काहू काम को । (४२८-२)
जउ लउ करि आसा आसवंत हुइ आसरो गहिए (४२८-३)
बहिए फिरिए ठउर पाइिए न बिस्राम को । (४२८-४)
जउ लउ ममता ममत मूंड बोझ लीनो (४२८-५)
दीनो डंड खंड खंड खेम ठाम ठाम को । (४२८-६)

गुर उपदेस निहकाम अउ निरास भइे (४२८-७)
निम्रता सहज सुख निजपद नाम को ॥४२८॥ (४२८-८)

सतिगुर चरन कमल मकरंद रज॥ (४२९-१)
लुभत हुइि मन मधुकर लपटाने है । (४२९-२)
अंमृत निधान पान अहिनिसि रसकि हुइि (४२९-३)
अति उनमति आन गिआन बिसराने है । (४२९-४)
सहज सनेह गेह बिसम बिदेह रूप (४२९-५)
स=छधाँतबूंद गति सीप संपट समाने है । (४२९-६)
चरन सरन सुख सागर कटाछ करि (४२९-७)
मुकता महाँत हुइि अनूप रूप ठाने है ॥४२९॥ (४२९-८)

रोम रोम कोटि मुख मुख रसना अनंत॥ (४३०-१)
अनंक मनंतर लउ कहत न आवई । (४३०-२)
कोटि ब्रहमंड भार डार तुलाधार बिखै॥ (४३०-३)
तोलीऐ जउ बारि बारि तोल न समावई । (४३०-४)
चतुर पदारथ अउ सागर समूह सुख॥ (४३०-५)
बिबिधि बैकुंठ मोल महिमा न पावई । (४३०-६)
समझ न परै करै गउन कउन भउन मन॥ (४३०-७)
पूरन ब्रहम गुर सबद सुनावई ॥४३०॥ (४३०-८)

लोचन पतंग दीप दरस देखन गइे॥ (४३१-१)
जोती जोति मिलि पुन ऊतर न आने है । (४३१-२)
नाद बाद सुनबे कउ स्रवन हरिन गइे॥ (४३१-३)
सुनि धुनि थकत भइे न बहुराने है । (४३१-४)
चरनकमल मकरंद रसि रसकि हुइि॥ (४३१-५)
मन मधुकर सुख संपट समाने है । (४३१-६)
रूप गुन प्रेमरस पूरन परमपद (४३१-७)
आन गिआन धिआन रस भरम भुलाने है ॥४३१॥ (४३१-८)

प्रथम ही आन धिआन हानि कै पतंग बिधि॥ (४३२-१)
पाछै कै अनूप रूप दीपक दिखाइे है । (४३२-२)
प्रथम ही आन गिआन सुरति बसरजि कै॥ (४३२-३)
अनहद नाद मृग जुगति सुनाइे है । (४३२-४)
प्रथम ही बचन रचन हरि गुंग साजि (४३२-५)
पाछै कै अंमृत रस अपिए पीआइे है । (४३२-६)
पेख सुन अचवत ही भइे बिसम अति (४३२-७)
परमदभुत असचरज समाइे है ॥४३२॥ (४३२-८)

जाति सिहिजासन जउ कामनी जामनी समै (४३३-१)
गुरजन सुजन की बात न सुहात है । (४३३-२)

हिम करि उदित मुदति है चकोर चिति (४३३-३)
इक टक धिआन कै समारत न गात है । (४३३-४)
जैसे मधुकर मकरंद रस लुभत है॥ (४३३-५)
बिसम कमल दल संपट समात है । (४३३-६)
तैसे गुर चरन सरनि चलि जाति सिख (४३३-७)
दरस परस प्रेमरस मुसकाति है ॥४३३॥ (४३३-८)

आवत है जाकै भीख मागनि भिखारी दीन (४३४-१)
देखत अधीनहि निरासो न बिडार है । (४३४-२)
बैठत है जाकै दुआर आसा कै बिडार स=छधमानु (४३४-३)
अंत करुना कै तोरि टूकि ताहि डारि है । (४३४-४)
पाइन की पनही रहत परहरी परी (४३४-५)
ताहू काहू काजि उठि चलत समारि है । (४३४-६)
छाडि अह्मकार छार होइ गुरमारग मै (४३४-७)
कबहू कै दइिआ कै दइिआल पगि धारि है ॥४३४॥ (४३४-८)

द्रोपती कुपीन मात्र दई जउ मुनीसरहि (४३५-१)
ताते सभा मधि बहिए बसन प्रवाह जी । (४३५-२)
तनक तंदुल जगदीसहि दइे सुदामा (४३५-३)
ताँते पाइे चतर पदारथ अथाह जी । (४३५-४)
दुखत गजिंद अरबिंद गहि भेट राखै (४३५-५)
ताकै काजै चक्रपानि आनि ग्रसे ग्राह जी । (४३५-६)
कहाँ कोऊ करै कछु होत न काहू के कीइे॥ (४३५-७)
जाकी प्रभ मानि लेहि सबै सुख तहि जी ॥४३५॥ (४३५-८)

सरवन सेवा कीनी माता पिता की बिसेख (४३६-१)
ताते गाईअत जस जगत मै ताहू को । (४३६-२)
जन प्रहलादि आदि अंत लउ अविगिआ कीनी (४३६-३)
तात घात करि प्रभ राखिए प्रनु वाहू को । (४३६-४)
दुआदस बरख सुक जननी दुखत करी (४३६-५)
सिधि भइे तत खनि जनमु है जाहू को । (४३६-६)
अकथ कथा बिसम जानीऐ न जाइि कछु (४३६-७)
पहुचै न गिआन उनमानु आन काहू को ॥४३६॥ (४३६-८)

खाँड खाँड कहै जिहबा न स=छधादु मीठो आवै॥ (४३७-१)
अगनि अगनि कहै सीत न बिनास है । (४३७-२)
बैद बैद कहै रोग मिटत न काहू को॥ (४३७-३)
दरब दरब कहै कोऊ दरबहि न बिलास है । (४३७-४)
चंदन चंदन कहत प्रगटै न सुबासु बासु (४३७-५)
चंद्र चंद्र कहै उजीआरो न प्रगास है । (४३७-६)
तैसे गिआन गोसटि कहत न रहत पावै॥ (४३७-७)

करनी प्रधान भान उदति अकास है ॥४३७॥ (४३७-८)

हसत हसत पूछै हसि हसि कै हसाइि (४३८-१)
रोवत रोवत पूछै रोइि अउ रुवाइि कै । (४३८-२)
बैठै बैठै पूछै बैठि बैठि कै निकटि जाइि (४३८-३)
चालत चालत पूछै दहदिस धाइि कै । (४३८-४)
लोग पूछे लोगाचार बेद पूछै बिधि॥ (४३८-५)
जोगी भोगी जोग भोग जुगति जुगाइि कै । (४३८-६)
जनम मरन भ्रम काहू न मिटाइे साकिए (४३८-७)
निहिचल भइे गुर चरन समाइि कै ॥४३८॥ (४३८-८)

पूछत पथकि तिह मारग न धारै पगि॥ (४३६-१)
प्रीतम कै देस कैसे बातनु के जाईअै । (४३६-२)
पूछत है बैद खात अउखद न संजम सै (४३६-३)
कैसे मिटै रोग सुख सहज समाईअै । (४३६-४)
पूछत सुहागन करम है दुहागनि कै (४३६-५)
रिदै बिबिचार कत सिहजा बुलाईअै । (४३६-६)
गाइे सुने आँखे मीचै पाईअै न परमपदु॥ (४३६-७)
गुर उपदेसु गहि जउ लउ न कमाईअै ॥४३६॥ (४३६-८)

खोजी खोजि देखि चलिए जाइि पहुचे ठिकाने॥ (४४०-१)
अलिस बिलंब कीइे खोजि मिट जात है । (४४०-२)
सिहजा समै रमै भरतार बर नारि सोई॥ (४४०-३)
करै जउ अगिआन मानु प्रगटत प्रात है । (४४०-४)
बरखत मेघ जल चात्रक तृपति पीइे॥ (४४०-५)
मोन गहे बरखा बितीते बिललात है । (४४०-६)
सिख सोई सुनि गुरसबद रहत रहै॥ (४४०-७)
कपट सनेह कीइे पाछे पछुतात है ॥४४०॥ (४४०-८)

जैसे बछुरा बिछुर परै आन गाइि थन॥ (४४१-१)
दुगध न पान करै मारत है लात की । (४४१-२)
जैसे मानसर तिआगि ह्मस आनसर जात॥ (४४१-३)
खात न मुकताफल भुगत जुगात की । (४४१-४)
जैसे राजदुआर तजि आन दुआर जात जन॥ (४४१-५)
होत मानु भंगु महिमा न काहू बात की । (४४१-६)
तैसे गुरसिख आन देव की सरन जाहि॥ (४४१-७)
रहिए न परत राखि सकत न पात की ॥४४१॥ (४४१-८)

जैसे घनघोर मोर चात्रक सनेह गति॥ (४४२-१)
बरखत मेह असनेह कै दिखावही । (४४२-२)
जैसे तउ कमल जल अंतरि दिसंतरि हुइि॥ (४४२-३)

मधुकर दिनकर हेत उपजावही । (४४२-४)
दादर निरादर हुइ जीअति पवन भखि (४४२-५)
जल तजि मारत न प्रेमहि लजावही । (४४२-६)
कपट सनेही तैसे आन देव सेवकु है॥ (४४२-७)
गुरसिख मीन जल हेत ठहरावही ॥४४२॥ (४४२-८)

पुरख निपुंसक न जाने बनिता बिलास॥ (४४३-१)
बाँझ कहा जाने सुख संतत सनेह कउ । (४४३-२)
गनिका संतान को बखान कहा गोतचार॥ (४४३-३)
नाह उपचार कछु कुसटी की देह कउ । (४४३-४)
आँधरो न जानै रूप रंग न दसन छबि॥ (४४३-५)
जानत न बहरो प्रसन्न असप्रेह कउ । (४४३-६)
आन देव सेवक न जाने गुरदेव सेव॥ (४४३-७)
जैसे तउ जवासो नही चाहत है मेह कउ ॥४४३॥ (४४३-८)

जैसे भूलि बछुरा परत आन गाइ थन॥ (४४४-१)
बहुरिए मिलत मात बात न समार है । (४४४-२)
जैसे आनसर भ्रम आवै मानसर ह्मस॥ (४४४-३)
देत मुकता अमोल दोख न बीचारि है । (४४४-४)
जैसे नृप सेवक जउ आन दुआर हार आवै (४४४-५)
चउगनो बढावै न अवगिआ उरधार है । (४४४-६)
सतिगुर असरनि सरनि दइिआल देव॥ (४४४-७)
सिखन को भूलिबो भगति मै बिआर है ॥४४४॥ (४४४-८)

बाँझ बधू पुरखु निपुंसक न संतत हुइ (४४५-१)
सलल बिलोइि कत माखन प्रगास है । (४४५-२)
फन गहि दुगध पीआइे न मिटत बिखु (४४५-३)
मूरी खाइे मुख सै न प्रगटेसुबास है । (४४५-४)
मानसर पर बैठे बाइिसु उदास बास (४४५-५)
अरगजा लेपु खर भसम निवास है । (४४५-६)
आँन देव सेवक न जानै गुरदेव सेव (४४५-७)
कठन कुटेव न मिटत देवदास है ॥४४५॥ (४४५-८)

जैसे तउ गगन घटा घमंड बिलोकीअति (४४६-१)
गरजि गरजि बिनु बरखा बिलात है । (४४६-२)
जैसे तउ हिमाचलि कठोर अउ सीतल अति (४४६-३)
सकीअै न खाइि तृखा न मिटात है । (४४६-४)
जैसे एसु परत करत है सजल देही (४४६-५)
राखीअै चिरंकाल न ठउर ठहराति है । (४४६-६)
तैसे आन देव सेव तृबिधि चपल फल (४४६-७)
सतिगुर अंमृत प्रवाह निस प्रात है ॥४४६॥ (४४६-८)

बैसनो अनंनि ब्रहमंनि सालग्राम सेवा (४४७-१)
गीता भागवत स्रोता इेकाकी कहावई । (४४७-२)
तीरथ धरम देव जात्रा कउ पंडित पूछि (४४७-३)
करत गवन सु महूरत सोधावई । (४४७-४)
बाहरि निकसि गरधब सु=छधान सगनु कै (४४७-५)
संका उपराजि बहुरि घरि आवही । (४४७-६)
पतिब्रत गहि रहि सकत न इेका टेक (४४७-७)
दुबधा अछित न परंम पदु पावही ॥४४७॥ (४४७-८)

गुरसिख संगति मिलाप को प्रताप अैसो (४४८-१)
पतब्रत इेक टेक दुबिधा निवारी है । (४४८-२)
पूछत न जोतक अउ बेद थिति बार कछु॥ (४४८-३)
गृह अउ नखत्र की न संका उरधारी है । (४४८-४)
जानत न सगन लगन आन देव सेव (४४८-५)
सबद सुरति लिव नेहु निरंकारी है । (४४८-६)
सिख संत बालक स्रीगर प्रतिपालक हुइि॥ (४४८-७)
जीवनमकति गति ब्रहम बिचारी है ॥४४८॥ (४४८-८)

नार कै भतार कै सनेह पतब्रता हुइि (४४९-१)
गुरसिख इेक टेक पतब्रत लीन है । (४४९-२)
राग नाद बाद अउ संबाद पतब्रत हुइि (४४९-३)
बिनु गुरसबद न कान सिख दीन है । (४४९-४)
रूप रंग अंग सरबंग हेरे पतब्रति (४४९-५)
आन देव सेवक न दरसन कीन है । (४४९-६)
सुजन कुटंब गृहि गउन करै पतिब्रता (४४९-७)
आनदेव सथान जैसे जलि बिनु मीन है ॥४४९॥ (४४९-८)

अैसी नाइिका मै कुआर पात्र ही सुपात्र भली॥ (४५०-१)
आस पिआसी माता पिता इेकै काह देत है । (४५०-२)
अैसी नाइिका मै दीनता कै दुहागन भली॥ (४५०-३)
पतित पावन पृअ पाइि लाइि लेत है । (४५०-४)
अैसी नाइिका मै भलो बिरह बिएग सोग (४५०-५)
लगन सगन सोधे सरधा सहेत है । (४५०-६)
अैसी नाइिका मात गरभ ही गली भली॥ (४५०-७)
कपट सनेह दुबिधा जिउ राह केत है ॥४५०॥ (४५०-८)

जैसे जल कूप निकसत जतन कीइे (४५१-१)
सीचीअत खेत इेकै पहुचत न आन कउ । (४५१-२)
पथिक पपीहा पिआसे आस लगि ढिग बैठि (४५१-३)
बिनु गुनु भाँजन तृपति कत प्रान कउ । (४५१-४)

तैसे ही सकल देव टेव सै टरत नाहि (४५१-५)
सेवा कीड़े देत फल कामना समानि कउ । (४५१-६)
पूरन ब्रहम गुर बरखा अंमृत हिति (४५१-७)
बरख हरखि देत सरब निधान कउ ॥४५१॥ (४५१-८)

जैसे उलू दिन समै काहूऐ न देखिए भावै (४५२-१)
तैसे साधसंगति मै आन देव सेवकै । (४५२-२)
जैसे कऊआ बिदिआमान बोलत न काहू भावै (४५२-३)
आन देव सेवक जउ बोलै अह्ममेव कै । (४५२-४)
कटत चटत स्वान प्रीति बिप्रीति जैसे (४५२-५)
आन देव सेवक सुहाइ न कटेव कै । (४५२-६)
जैसे मराल माल सोभत न बगु ठगु (४५२-७)
काढीऐ पकरि करि आन देव सेवकै ॥४५२॥ (४५२-८)

जैसे उलू आदित उद्योति जोति कउ न जाने (४५३-१)
आन देव सेवकै न सूझै साधसंग मै । (४५३-२)
मरकट मन मानिक महिमा न जाने (४५३-३)
आन देव सेवक न सबदु प्रसंग मै । (४५३-४)
जैसे तउ फनिंद्र पै पाठ महातमै न जानै (४५३-५)
आन देव सेवक महाप्रसादि अंग मै । (४५३-६)
बिनु ह्मस बंस बग ठग न सकत टिक (४५३-७)
अगम अगाधि सुख सागर तरंग मै ॥४५३॥ (४५३-८)

जैसे तउ नगर इेक होत है अनेक हाटै (४५४-१)
गाहक असंख आवै बेचन अरु लैन कउ । (४५४-२)
जापै कछु बेचै अरु बनजु न मागै पावै (४५४-३)
आन पै बिसाहै जाइ देखै सुख नैन कउ । (४५४-४)
जाकी हाट सकल समग्री पावै अउ बिकावै (४५४-५)
बेचत बिसाहत चाहत चित चैन कउ । (४५४-६)
आन देव सेव जाहि सतिगुर पूरे साह (४५४-७)
सरब निधान जाकै लैन अरु दैन कउ ॥४५४॥ (४५४-८)

बनज बिउहार बिखै रतन पारख होइ (४५५-१)
रतन जनम की परीखिआ नही पाई है । (४५५-२)
लेखे चित्रगुपत से लेखकि लिखारी भइे (४५५-३)
जनम मरन की असंका न मिटाई है । (४५५-४)
बीर बिदिआ महाबली भइे है धनखधारी (४५५-५)
हउमै मारि सकी न सहजि लिव लाई है । (४५५-६)
पूरन ब्रहम गुरदेव सेव कली काल (४५५-७)
माइआ मै उदासी गुरसिखन जताई है ॥४५५॥ (४५५-८)

जैसे आन बिरख सफल होत समै पाइि (४५६-१)
स्रबदा फलंते सदा फल सु स्नादि है । (४५६-२)
जैसे कूप जल निकसत है जतन कीइे (४५६-३)
गंगा जल मुकति प्रवाह प्रसादि है । (४५६-४)
मृतका अगनि तूल तेल मेल दीप दिपै (४५६-५)
जगमग जोति ससीअर बिसमाद है । (४५६-६)
तैसे आन देव सेव कीइे फलु देत जेत (४५६-७)
सतिगुर दरस न सासन जमाद है ॥४५६॥ (४५६-८)

पंच परपंच कै भइे है महाँभारथ से (४५७-१)
पंच मारि काहूअै न दुबिधा निवारी है । (४५७-२)
गृह तजि नविनाथ सिधि जोगीसुर हुइि न (४५७-३)
तृगुन अतीत निजआसन मै तारी है । (४५७-४)
बेद पाठ पड़ि पड़ि पंडत परबोधै जगु (४५७-५)
सके न समोध मन तृसना न हारी है । (४५७-६)
पूरन ब्रहम गुरदेव सेव साधसंग (४५७-७)
सबद सुरति लिव ब्रहम बीचारी है ॥४५७॥ (४५७-८)

पूरन ब्रहम सम देखि समदरसी हुइि (४५८-१)
अकथ कथा बीचार हारि मोनिधारी है । (४५८-२)
होनहार होइि ताँते आसा ते निरास भइे (४५८-३)
कारन करन प्रभ जानि हउमै मारी है । (४५८-४)
सूखम सथूल एअंकार कै अकार हुइि (४५८-५)
ब्रहम बिबेक बुध भइे ब्रहमचारी है । (४५८-६)
बट बीज को बिथार ब्रहम कै माइिआ छाइिआ (४५८-७)
गुरमुखि इेक टेक दुबिधा निवारी है ।४५८॥ (४५८-८)

जैसे तउ सकल द्रुम आपनी आपनी भाँति (४५९-१)
चंदन चंदन करै सरब तमाल कउ (४५९-२)
ताँबा ही सै होत जैसे कंचन कलंकु डारै (४५९-३)
पारस परसु धातु सकल उजाल कउ । (४५९-४)
सरिता अनेक जैसे बिबिधि प्रवाह गति (४५९-५)
सुरसरी संगम सम जनम सुढाल कउ। (४५९-६)
तैसे ही सकल देव टेव सै टरत नाहि (४५९-७)
सतिगुर असरन सरनि अकाल कउ ॥४५९॥ (४५९-८)

गिरगिट कै रंग कमल समेह बहु (४६०-१)
बनु बनु डोलै कउआ कहा धउ सवान है । (४६०-२)
घर घर फिरत मंजार अहार पावै (४६०-३)
बेस्वा बिसनी अनेक सती न समान है । (४६०-४)
सर सर भ्रमत न मिलत मराल माल (४६०-५)

जीव घात करत न मोनी बगु धिआन है । (४६०-६)
बिनु गुरदेव सेव आन देव सेवक हुइ (४६०-७)
माखी तिआगि चंदन दुरगंध असथान है ॥४६०॥ (४६०-८)

आन हाटके हटुआ लेत है घटाइ मोल (४६१-१)
देत है चड़ाइ डहकत जोई आवै जी । (४६१-२)
तिन सै बनज कीइे बिड़ता न पावै कोऊ (४६१-३)
टोटा को बनज पेखि पेखि पछुतावै जी । (४६१-४)
काठ की है इेकै बारि बहुरिए न जाइि कोऊ (४६१-५)
कपट बिउहार कीइे आपहि लखावै जी । (४६१-६)
सतिगुर साह गुन बेच अवगुन लेत (४६१-७)
सुनि सुनि सुजस जगत उठि धावै जी ॥४६१॥ (४६१-८)

पूरन ब्रहम समसरि दुतीआ नासति (४६२-१)
प्रतिमा अनेक होइि कैसे बनि आवई । (४६२-२)
घटि घटि पूरन ब्रहम देखै सुनै बोलै (४६२-३)
प्रतिमा मै काहे न प्रगटि हुइि दिखावई । (४६२-४)
घर घर घरनि अनेक इेक रूप हुते (४६२-५)
प्रतिमा सकल देवसथल हुइि न सुहावई । (४६२-६)
सतिगुर पूरन ब्रहम सावधान सोई (४६२-७)
इेकजोति मूरति जुगल हुइि पुजावई ॥४६२॥ (४६२-८)

मानसर तिआगि आनसर जाइि बैठे ह्मसु (४६३-१)
खाइि जलजंत ह्मस बंसहि लजावई । (४६३-२)
सलिल बिछोह भइे जीअत रहै जउ मीन (४६३-३)
कपट सनेह कै सनेही न कहावई । (४६३-४)
बिनु घन बूंद जउ अनत जल पान करै (४६३-५)
चातृक समतान बिखै लछनु लगावई । (४६३-६)
चरन कमल अलि गुरसिख मोख हुइि (४६३-७)
आनदेव सेवक हुइि मुकति न पावई ॥४६३॥ (४६३-८)

जउ कोऊ मवास साधि भूमीआ मिलावै आनि (४६४-१)
तापरि प्रसन्न होत निरख नरिंद जी । (४६४-२)
जउ कोऊ नृपति भ्रिति भागि भूमीआ पै जाइि (४६४-३)
धाइि मारै भूमीआ सहिति ही रजिंद जी । (४६४-४)
आन को सेवक राजदुआर जाइि सोभा पावै (४६४-५)
सेवक नरेस आन दुआर जात निंद जी । (४६४-६)
तैसे गुरसिख आन अनत सरनि गुर (४६४-७)
आन न समरथ गुरसिख प्रतिबिंद जी ॥४६४॥ (४६४-८)

जैसे उपबन आँब सेंबल है ऊच नीच (४६५-१)

निहफल सफल प्रगट पहचानीऐ । (४६५-२)
चंदन समीप जैसे बाँस अउ बनासपती (४६५-३)
गंध निरगंध सिव सकति कै जानीऐ । (४६५-४)
सीप संख दोऊ जैसे रहत समुंद्र बिखै (४६५-५)
स्वाँतबूंद संतति न समत बिधानीऐ । (४६५-६)
तैसे गुरदेव आन देव सेवकन भेद (४६५-७)
अह्मबुधि निंम्रता अमान जग मानीऐ ॥४६५॥ (४६५-८)

जैसे पतिब्रता पर पुरखै न देखीए चाहै (४६६-१)
पूरन पतब्रता कै पुत ही कै धिआन है । (४६६-२)
सर सरिता समुंद्र चातृक न चाहै काहू (४६६-३)
आस घन बूंद पृअ पृअ गुन गिआन है । (४६६-४)
दिनकर एर भोर चाहत नही चकोर (४६६-५)
मन बच क्रम हिम कर पृअ प्रान है । (४६६-६)
तैसे गुरसिख आन देव सेव रहति पै (४६६-७)
सहज सुभाव न अवगिआ अभमानु है ॥४६६॥ (४६६-८)

दोइ दरपन देखै इेक मै अनेक रूप (४६७-१)
दोइ नाव पाव धरै पहुचै न पारि है । (४६७-२)
दोइ दिसा गहे गहाइे सै हाथ पाउ टूटे (४६७-३)
दुराहे दुचित होइ धूल पगु धारि है । (४६७-४)
दोइ भूप ताको गाउ परजा न सुखी होत (४६७-५)
दोइ पुरखन की न कुलाबधू नारि है । (४६७-६)
गुरसिख होइ आन देव सेव टेव गहै (४६७-७)
सहै जम डंड ध्रिग जीवनु संसार है ॥४६७॥ (४६७-८)

जैसे तउ बिरख मूल सीचिऐ सलिल ताते (४६८-१)
साखा साखा पत्र पत्र करि हरिए होइ है । (४६८-२)
जैसे पतिब्रता पतिब्रति सति सावधान (४६८-३)
सकल कुटंब सुप्रसंनि धंनि सोइ है । (४६८-४)
जैसे मुख दुआर मिसटान पान भोजन कै (४६८-५)
अंग अंग तुसट पुसटि अविलोइ है । (४६८-६)
तैसे गुरदेव सेव इेक टेक जाहि ताहि (४६८-७)
सुरि नर ब्रंमब्र ूह कोट मधे कोइ है ॥४६८॥ (४६८-८)

सोई पारो खाति गाति बिबिधि बिकार होत (४६९-१)
सोई पारो खात गात होइ उपचार है । (४६९-२)
सोई पारो परसत कंचनहि सोख लेत (४६९-३)
सोई पारो परस ताँबो कनिक धारि है । (४६९-४)
सोई पारो अगहु न हाथन कै गहिए जाइ (४६९-५)
सोई पारो गुटका हुइ सिध नमसकार है । (४६९-६)

मानस जनमु पाइ जैसीऐ संगति मिलै (४६९-७)
तैसी पावै पदवी प्रताप अधिकार है ॥४६९॥ (४६९-८)

कूआ को मेढकु निधि जानै कहा सागर की (४७०-१)
स्वाँतबूंद महिमा न संख जानई । (४७०-२)
दिनकरि जोति को उदोत कहा जानै उलू (४७०-३)
सेंबल सै कहा खाइ सूहा हित ठानई । (४७०-४)
बाइिस न जानत मराल माल संगति (४७०-५)
मरकट मानकु हीरा न पहिचानई । (४७०-६)
आन देव सेवक न जानै गुरदेव सेव (४७०-७)
गूंगे बहरे न कहि सुनि मनु मानई ॥४७०॥ (४७०-८)

जैसे घाम तीखन तपति अति बिखम (४७१-१)
बैसंतरि बिहून सिधि करित न ग्रास कउ । (४७१-२)
जैसे निस एस कै सजल होत मेर तिन (४७१-३)
बिनु जल पान न निवारत पिआस कउ । (४७१-४)
जैसे ही ग्रीखम रुत प्रगटै प्रसेद अंग (४७१-५)
मिटत न फूके बिनु पवनु प्रगास कउ । (४७१-६)
तैसे आवागौन न मिटत न आन देव सेव (४७१-७)
गुरमुख पावै निजपद के निवास कउ ॥४७१॥ (४७१-८)

आँबन की साध कत मिटत अएबली खाइे (४७२-१)
पिता को पिआर न परोसी पहि पाईऐ । (४७२-२)
सागर की निधि कत पाईअत पोखर सै (४७२-३)
दिनकरि सरि दीप जोति न पुजाईऐ । (४७२-४)
इंद्र बरखा समान पुजस न कूप जल (४७२-५)
चंदन सुबास न पलास महिकाईऐ । (४७२-६)
स्रीगुर दइिआल की दइिआ न आन देव मै जउ (४७२-७)
खंड ब्रहमंड उदै असत लउ धाईऐ ॥४७२॥ (४७२-८)

गिरत अकास ते परत पृथी पर जउ (४७३-१)
गहै आसरो पवन कवनहि काजि है । (४७३-२)
जरत बैसंतर जउ धाइि धाइि धूम गहै (४७३-३)
निकसिए न जाइि खल बुध उपराज है । (४७३-४)
सागर अपार धार बूडत जउ फेन गहै (४७३-५)
अनिथा बीचार पार जैबे को न साज है । (४७३-६)
तैसे आवागवन दुखत आन देव सेव (४७३-७)
बिनु गुर सरनि न मोख पदु राज है ॥४७३॥ (४७३-८)

जैसे रूप रंग बिधि पूछै अंधु अंध प्रति (४७४-१)
आप ही न देखै ताहि कैसे समझावई । (४७४-२)

राग नाद बाद पूछै बहरो जउ बहरा पै (४७४-३)
समझै न आप तहि कैसे समझावई । (४७४-४)
जैसे गुंग गुंग पहि बचन बिबेक पूछे (४७४-५)
चाहे बोलि न सकत कैसे सबदु न सुनावई । (४७४-६)
बिनु सतिगुर खोजै ब्रहम गिआन धिआन (४७४-७)
अनिथा अगिआन मत आन पै न पावई ।४७४॥ (४७४-८)

अंबर बोचन जाइि देस दिगंबरन के (४७५-१)
प्रापत न होइि लाभ सहसो है मूलि को । (४७५-२)
रतन परीखिआ सीखिआ चाहै जउ आँधन पै (४७५-३)
रंकन पै राजु माँगै मिथिआ भ्रम भूल को । (४७५-४)
गुंगा पै पड़न जाइि जोतक बैदक बिदिआ (४७५-५)
बहरा पै राग नाद अनिथा अभूलि को । (४७५-६)
तैसे आन देव सेव दोख मेटि मोख चाहै (४७५-७)
बिनु सतिगुर दुख सहै जमसूल को ॥४७५॥ (४७५-८)

बीज बोइि कालर मै निपजै न धान पान (४७६-१)
मूल खोइि रोवै पुन राजु डंड लागई । (४७६-२)
सलिल बिलोइे जैसे निकसत नाहि घ्रिति (४७६-३)
मटुकी मथनीआ हू फेरि तोरि भागई । (४७६-४)
भूतन पै पूत मागै होत न सपूती कोऊ (४७६-५)
जीअ को परत संसो तिआगे हू न तिआगई । (४७६-६)
बिनु गुरदेव आन सेव दुखदाइिक है॥ (४७६-७)
लोक परलोक सोकि जाहि अनरागई ॥४७६॥ (४७६-८)

जैसे मृगराज तन जंबुक अधीन होत (४७७-१)
खग पत सुत जाइि जुहारत काग है । (४७७-२)
जैसे राह केत बस गृहन मै सुरितर (४७७-३)
सोभ न अरक बन रवि ससि लागि है । (४७७-४)
जैसे कामधेन सुत सुकरी सथन पान॥ (४७७-५)
अैरापत सुत गरधभ अग्रभाग है । (४७७-६)
तैसे गुरसिख सुत आन देव सेवक हुइि॥ (४७७-७)
निहफल जनमु जिउ बंस मै बजागि है ॥४७७॥ (४७७-८)

जउ पै तूंबरी न बूडे सरत परवाह बिखै (४७८-१)
बिख मै तऊ न तजत है मन ते । (४७८-२)
जउ पै लपटै पाखान पावक जरै सूत्र (४७८-३)
जल मै लै बोरित रिदै कठोरपन ते । (४७८-४)
जउ पै गुडी उडी देखीअत है आकासचारी (४७८-५)
बरकत मेह बाचीअै न बालकन ते । (४७८-६)
तैसे रिधि सिधि भाउ दुतीआ तृगुन खेल (४७८-७)

गुरमुख सुखफल नाहि कितघनि ते ॥४७८॥ (४७८-८)

कउडा पैसा रुपईआ सुनईआ को बनज करै (४७९-१)
रतन पारखु होइि जउहरी कहावई । (४७९-२)
जउहरी कहाइि पुन कउडा को बनजु करै (४७९-३)
पंच परवान मै पतसिटा घटावई । (४७९-४)
आन देव सेव गुरदेव को सेवक हुइि (४७९-५)
निहफल जनमु कपूत हुइि हसावई ॥४७९॥ (४७९-६)

मन बच क्रम कै पतब्रत करै जउ नारि (४८०-१)
ताहि मन बच क्रम चाहत भतार है । (४८०-२)
अभरन सिंगार चार सिहजा संजोग भोग (४८०-३)
सकल कुटंब ही मै ताको जैकारु है । (४८०-४)
सहज आनंद सुख मंगल सुहाग भाग (४८०-५)
सुंदर मंदर छबि सोभत सुचारु है ।॥ (४८०-६)
सतिगुर सिखन कउ राखत गृसति मै सावधान (४८०-७)
आनदेवसेव भाउ दुबिधा निवार है ॥४८०॥ (४८०-८)

जैसे तउ पतिबृता पतिबृति मै सावधान॥ (४८१-१)
ताही ते गृहेसुर हुइि नाइिका कहावई । (४८१-२)
असन बसन धन धाम कामना पुजावै (४८१-३)
सोभति सिंगार चारि सिहजा समावई । (४८१-४)
सतिगुर सिखन कउ राखत गृहसत मै॥ (४८१-५)
संपदा समूह सुख लुडे ते लडावई । (४८१-६)
असन बसन धन धाम कामना पवित्र ॥ (४८१-७)
आन देव सेव भाउ दुतीआ मिटावई ॥४८१॥ (४८१-८)

लोग बेद गिआन उपदेस है पतिबृता कउ (४८२-१)
मन बच क्रम स=छधामी सेवा अधिकारि है । (४८२-२)
नाम इिसनान दान संजम न जाप ताप॥ (४८२-३)
तीरथ बरत पूजा नेम ना तकार है । (४८२-४)
होम जग भोग नईबेद नही देवी देव सेव॥ (४८२-५)
राग नाद बाद न संबाद आन दुआर है । (४८२-६)
तैसे गुरसिखन मै इेक टेक ही प्रधान॥ (४८२-७)
आन गिआन धिआन सिमरन बिबचार है ॥४८२॥ (४८२-८)

जैसे पतिब्रताकउ पवित्र घरि वात नात (४८३-१)
असन बसन धन धाम लोगचार है । (४८३-२)
तात मात भ्रात सुत सुजन कुटंब सखा॥ (४८३-३)
सेवा गुरजन सुख अभरन सिंगार है । (४८३-४)
किरत बिरत परसूत मल मूत्रधारी॥ (४८३-५)

सकल पवित्र जोई बिबिधि अचार है । (४८३-६)
तैसे गुरसिखन कउ लेपु न गृहसत मै (४८३-७)
आन देव सेव ध्रिगु जनमु संसार है ॥४८३॥ (४८३-८)

आदित अउ सोम भोम बुध हूं ब्रहसपत॥ (४८४-१)
सुकर सनीचर सातो बार बाँट लीने है । (४८४-२)
थिति पॅछ मास रुति लोगन मै लोगचार॥ (४८४-३)
इेक इेकंकार कउ न कोऊ दिन दीने है । (४८४-४)
जनम असटमी रामनउमी इेकादसी भई॥ (४८४-५)
दुआदसी चतुरदसी जनमु इे कीने है । (४८४-६)
परजा उपारजन को न कोऊ पावै दिन॥ (४८४-७)
अजोनी जनमु दिनु कहौ कैसे चीने है ॥४८४॥ (४८४-८)

जाको नामु है अजोनी कैसे कै जनमु लै॥ (४८५-१)
कहा जान ब्रत जनमासटमी को कीनो है । (४८५-२)
जाको जगजीवन अकाल अबिनासी नामु॥ (४८५-३)
कैसे कै बधिक मारिए अपजसु लीनो है । (४८५-४)
निरमल निरोख मोखपदु जाके नामि (४८५-५)
गोपीनाथ कैसे हुइि बिरह दुख दीनो है । (४८५-६)
पाहन की प्रतिमा के अंध कंध है पुजारी॥ (४८५-७)
अंतरि अगिआन मत गिआन गुर हीनो है ॥४८५॥ (४८५-८)

सूरज प्रगास नास उडगन अगनित जउ॥ (४८६-१)
आन देव सेव गुरदेव के धिआन कै । (४८६-२)
हाट बाट घाट ठाठु घटै घटै निस दिनु॥ (४८६-३)
तैसो लोग बेद भेद सतिगुर गिआन कै । (४८६-४)
चोर जार अउ जूआर मोह द्रोह अंधकार॥ (४८६-५)
प्रात समै सोभा नाम दान इिसनान कै । (४८६-६)
आन सर मेडुक सिवाल घोघा मानसर॥ (४८६-७)
पूरनब्रहम गुर सरब निधान कै ॥४८६॥ (४८६-८)

निस दिन अंतर जिउ अंतरु बखानीअत । (४८७-१)
तैसे आन देव गुरदेव सेव जानीऐ । (४८७-२)
निस अंधकार बहु तारका चमितकार (४८७-३)
दिनु दिनुकर इेकंकार पहिचानीऐ । (४८७-४)
निस अंधिआरी मै बिकारी है बिकार हेतु (४८७-५)
प्रात समै नेहु निरंकारी उनमानीऐ । (४८७-६)
रैन सैन समै ठग चोर जार होइि अनीत॥ (४८७-७)
राजुनीति रीति प्रीति बासुर बखानीऐ ॥४८७॥ (४८७-८)

निस दुरिमति हुइि अधरमु करमु हेतु (४८८-१)

गुरमति बासुर सु धरम करम है । (४८८-२)
दिनकरि जोति के उदोत सभ किछ सूझै (४८८-३)
निस अंधिआरी भूले भ्रमत भरम है । (४८८-४)
गुरमुखि सुखफल दिभि देह दृसटि हुइ (४८८-५)
आन देव सेवक हुइ दृसटि चरम है । (४८८-६)
संशारी संशारी सौगि अंध अंध कंध लागै (४८८-७)
गुरमुखि संध परमारथ मरमु है ॥४८८॥ (४८८-८)

जैसे जल मिलि बहु बरन बनासपती (४८९-१)
चंदन सुगंध बन चंचल करत है । (४८९-२)
जैसे अगनि अगनि धात जोई सोई देखीअति (४८९-३)
पारस परस जोति कंचन धरत है । (४८९-४)
तैसे आन देव सेव मिटत नही कुटेव (४८९-५)
सतिगुर देव सेव भैजल तरत है । (४८९-६)
गुरमुखि सुख फल महातम अगाधि बोध (४८९-७)
नेत नेत नेत नमो नमो उचरत है ॥४८९॥ (४८९-८)

प्रगटि संसार बिबिचार करै गनिका पै (४९०-१)
ताहि लोग बेद अरु गिआन की न कानि है । (४९०-२)
कुलाबधू छाडि भरतार आन दुआर जाइ (४९०-३)
लाछनु लगावै कुल अंकुस न मानि है । (४९०-४)
कपट सनेही बग धिआन आन सर फिरै (४९०-५)
मानसर छाडै ह्मसु बंसु मै अगिआन है । (४९०-६)
गुरमुखि मनमुख दुरमति गुरमति (४९०-७)
पर तन धन लेप निरलेपु धिआन है ॥४९०॥ (४९०-८)

पान कपूर लउंग चर कागै आगै राखै (४९१-१)
बिसटा बिगंधखात अधिक सियान कै । (४९१-२)
बार बार स=छधानजउ पै गंगा इसनानु करै (४९१-३)
टरै न कुटेव देव होत न अगिआन कै । (४९१-४)
सापहि पै पान मिसटान महाँ अंमृत कै (४९१-५)
उगलत कालकूट हउमै अभिमान कै । (४९१-६)
तैसे मानसर साधसंगति मराल सभा (४९१-७)
आन देव सेवक तकत बगु धिआन कै ॥४९१॥ (४९१-८)

चकई चकोर अहिनिसि ससि भान धिआन (४९२-१)
जाही जाही रंग रचिए ताही ताही चाहै जी । (४९२-२)
मीन अउ पतंग जल पावक प्रसंगि हेत (४९२-३)
टारी न टरत टेव एर निरबाहै जी । (४९२-४)
मानसर आन सर ह्मसु बगु प्रीति रीति (४९२-५)
उतम अउ नीच न समान समता है जी । (४९२-६)

तैसे गुरदेव आन देव सेवक न भेद (४६२-७)
समसर होत न समुंद्र सरता है जी ॥४६२॥ (४६२-८)

प्रीति भाइ पेखै प्रतिबिंब चकई जिउं निस (४६३-१)
गुरमति आपा आप चीन पहिचानीऐ । (४६३-२)
बैर भाइ पेखि परछाई कूपंतरि परै (४६३-३)
सिंघु दुरमति लगि दुबिधा कै जानीऐ । (४६३-४)
गऊ सूत अनेक इेक संग हिलि मिलि रहै (४६३-५)
स=छधान आन देखत बिरुध जुध ठानीऐ । (४६३-६)
गुरमुखि मनमुख चंदन अउबाँस बिधि (४६३-७)
बरन के दोखी बिकारी उपकारी उनमानीऐ ॥४६३॥ (४६३-८)

जउ कोऊ बुलावै कहि स=छधान मृग सरप कै॥ (४६४-१)
सुनत रिजाइ धाइ गारि मारि दीजीऐ । (४६४-२)
स=छधान स=छधाम काम लागि जामनी जाग्रत रहै॥ (४६४-३)
नादहि सुनाइ मृग प्रान हानि कीजीऐ । (४६४-४)
धुन्न मंत्र पड़ै सरप अरप देत तन मन॥ (४६४-५)
दंत ह्यत होत गोत लाजि गहि लीजीऐ । (४६४-६)
मोह न भगत भाव सबद सुरति हीनि॥ (४६४-७)
गुर उपदेस बिनु ध्रिगु जगु जीजीऐ ॥४६४॥ (४६४-८)

जैसे घरि लागै आगि जागि कूआ खोदीए चाहै॥ (४६५-१)
कारज न सिधि होइ रोइ पछुताईऐ । (४६५-२)
जैसे तउ संग्राम समै सीखिए चाहै बीर बिदिआ॥ (४६५-३)
अनिथा उदम जैत पदवी न पाईऐ । (४६५-४)
जैसे निसि सोवत संघाती चलि जाति पाछे (४६५-५)
भोर भइे भार बाध चले कत जाईऐ । (४६५-६)
तैसे माइिआ धंध अंध अविध बिहाइि जाइि॥ (४६५-७)
अंतकाल कैसे हरिनाम लिव लाईऐ ॥४६५॥ (४६५-८)

जैसे तउ चपल जल अंतर न देखीअति॥ (४६६-१)
पूरनु प्रगास प्रतिबिंब रवि ससि को । (४६६-२)
जैसे तउ मलीन दरपन मै न देखीअति॥ (४६६-३)
निरमल बदन सरूप उरबस को । (४६६-४)
जैसे बिन दीप न समीप को बिलोकीअतु । (४६६-५)
भवन भइिआन अंधकार त्रास तस को । (४६६-६)
तैसे माइिआ धरम अधम अछादिए मनु (४६६-७)
सतिगुर धिआन सुख नान प्रेमरस को ॥४६६॥ (४६६-८)

जैसे इेक समै द्रुम सफल सपत्र पुन (४६७-१)
इेक समै फूल फल पत्र गिरजात है । (४६७-२)

सरिता सलिलि जैसे कबहूं समान बहै॥ (४६७-३)
कबहूं अथाह अत प्रबलि दिखात है । (४६७-४)
इेक समै जैसे हीरा होत जीरनाँबर मै॥ (४६७-५)
इेक समै कंचन जड़े जगमगात है । (४६७-६)
तैसे गुरसिख राजकुमार जोगीसुर है॥ (४६७-७)
माइिआधारी भारी जोग जुगत जुगात है ॥४६७॥ (४६७-८)

असन बसन संग लीने अउ बचन कीने॥ (४६८-१)
जनम लै साधसंगि स्रीगुर अराधि है । (४६८-२)
ईहाँ आइे दाता बिसराइे दासी लपटाइे (४६८-३)
पंच दूत भूत भ्रम भ्रमत असाधि है । (४६८-४)
साचु मरनो बिसार जीवन मिथिआ संसार॥ (४६८-५)
समझै न जीतु हारु सुपन समाधि है । (४६८-६)
अउसर हुइि है बितीति लीजीअै जनमु जीति (४६८-७)
कीजीइे साधसंगि प्रीति अगम अगाधि है ॥४६८॥ (४६८-८)

सफल जनंमु गुर चरन सरनि लिव॥ (४६९-१)
सफल दृसट गुर दरस अलोईअै । (४६९-२)
सफल सुरति गुर सबद सुनत नित॥ (४६९-३)
जिहबा सफल गुननिधि गुन गोईअै । (४६९-४)
सफल हसत गुर चरन पूजा प्रनाम॥ (४६९-५)
सफल चरन परदछना कै पोईअै । (४६९-६)
संगम सफल साधसंगति सहज घर (४६९-७)
हिरदा सफल गुरमति कै समोईअै ॥४६९॥ (४६९-८)

कत पुन मानस जनम कत साधसंगु॥ (५००-१)
निस दिन कीरतन समै चलि जाईअै । (५००-२)
कत पुन दृसटि दरस हुइि परसपर॥ (५००-३)
भावनी भगति भाइि सेवा लिवलाईअै । (५००-४)
कत पुन राग नाद बाद संगीत रीत (५००-५)
स्रीगुर सबद लिखि निजपदु पाईअै ॥५००॥ (५००-६)

जैसे तउ पलास पत्र नागबेल मेल भइे (५०१-१)
पहुचत करि नरपत जग जानीअै । (५०१-२)
जैसे तउ कुचील नील बरन बरनु बिखै (५०१-३)
हीर चीर संगि निरदोख उनमानीअै । (५०१-४)
सालग्राम सेवा समै महा अपवित्र संख (५०१-५)
परम पवित्र जग भोग बिखै आनीअै । (५०१-६)
तैसे मम काग साधसंगति मराल माल (५०१-७)
मार न उठावत गावत गुर बानीअै ॥५०१॥ (५०१-८)

जैसे जल मधि मीन महिमा न जानै पुनि (५०२-१)
जल बिन तलफ तलफ मरि जाति है । (५०२-२)
जैसे बन बसत महातमै न जानै पुनि । (५०२-३)
पर बस भइे खग मृग अकुलात है । (५०२-४)
जैसे पृअ संगम कै सुखहि न जानै तृआ (५०२-५)
बिछुरत बिरह बृथा कै बिललात है । (५०२-६)
तैसे गुर चरन सरनि आतमा अचेत (५०२-७)
अंतर परत सिमरत पछुतात है ॥५०२॥ (५०२-८)

भगतवछल सुनि होत हो निरास रिदै (५०३-१)
पतित पावन सुनि आसा उरधारि हौं । (५०३-२)
अंतरजामी सुनि कंपत हौ अंतरगति (५०३-३)
दीन को दइिआल सुनि भै भ्रम टार हौं (५०३-४)
जलधर संगम कै अफल सेंबल द्रुम (५०३-५)
चंदन सुगंध सनबंध मैलगार हौं । (५०३-६)
अपनी करनी करि नरक हूं न पावउ ठउर (५०३-७)
तुमरे बिरदु करि आसरो समार हौं ॥५०३॥ (५०३-८)

जउ हम अधम करम कै पतित भइे (५०४-१)
पतित पावन प्रभ नाम प्रगटाइिए है । (५०४-२)
जउ भइे दुखित अरु दीन परचीन लगि (५०४-३)
दीन दुख भंजन बिरदु बिरदाइिए है । (५०४-४)
जउ ग्रसे अरक सुत नरक निवासी भइे (५०४-५)
नरक निवारन जगत जसु गाइिए है । (५०४-६)
गुन कीइे गुन सब कोऊ करै क्रिपानिधान (५०४-७)
अवगुन कीइे गुन तोही बनि आइिए है ॥५०४॥ (५०४-८)

जैसे तउ अरोग भोग भोगवै नाना प्रकार (५०५-१)
बृथावंत खानि पान रिदै न हितावई । (५०५-२)
जैसे महखी सहनसील कै धीरजु धुजा (५०५-३)
अजिआ मै तनक कलेजो न समावई । (५०५-४)
जैसे जउहरी बिसाहै वेचे हीरा मानकादि (५०५-५)
रंक पै न राखिए परै जोग न जुगावई । (५०५-६)
तैसे गुर परचै पवित्र है पूजा प्रसादि (५०५-७)
परच अपरचे दुसहि दुख पावई ॥५०५॥ (५०५-८)

जैसे बिख तनक ही खात मरि जाति तात (५०६-१)
गाति मुरझात प्रतिपाली बरखन की । (५०६-२)
महिखी दुहाइि दूध राखीअै भाँजन भरि (५०६-३)
परति काँजी की बूंद बादि न रखन की । (५०६-४)
जैसे कोटि भारि तूलि रंचक चिनग परे (५०६-५)

होत भसमात छिन मै अकरखन की । (५०६-६)
तैसे पर तन धन दूखना बिकार कीइे (५०६-७)
हरै निधि सुक्रत सहज हरखन की ॥५०६॥ (५०६-८)

चंदन समीप बसि बाँस महिमा न जानी (५०७-१)
आन द्रुम दूरह भइे बासन कै बोहे है । (५०७-२)
दादर सरोवर मै जानी न कमल गति (५०७-३)
मधुकर मन मकरंद कै बिमोहे है । (५०७-४)
तीरथ बसत बगु मरमु न जानिए कछु (५०७-५)
सरधा कै जात्रा हेत जात्री जन सोहे है । (५०७-६)
निकटि बसत मम गुर उपदेस हीन (५०७-७)
दूरंतरि सिखि उरि अंतरि लै पोहे है ॥५०७॥ (५०७-८)

जैसे परदारा को दरसु दृग देखिए चाहै (५०८-१)
तैसे गुर दरसन् देखत है न चाह कै । (५०८-२)
जैसे परनिंदा सुनै सावधान सुरति कै (५०८-३)
तैसो गुर सबदुसुनै न उतसाह कै । (५०८-४)
जैसे पर दरब हरन कउ चरन धावै (५०८-५)
तैसे कीरतन साधसंगति न उमाह कै । (५०८-६)
उलू काग नागि धिआन खान पान कउ न जानै (५०८-७)
ऊच पदु पावै नही नीच पदु गाह कै ॥५०८॥ (५०८-८)

जैसे रैनि समै सब लोग मै संजोग भोग (५०९-१)
चकई बिएग सोग भागहीनु जानीऔ । (५०९-२)
जैसे दिनकरि कै उदोति जोति जगमग (५०९-३)
उलू अंध कंध परचीन उनमानीऔ । (५०९-४)
सरवर सरिता समुंद्र जल पूरन है (५०९-५)
तृखावंत चात्रक रहत बकबानीऔ । (५०९-६)
तैसे मिलि साधसंगि सकल संसार तरिए (५०९-७)
मोहि अपराधी अपराधनु बिहानीऔ ॥५०९॥ (५०९-८)

जैसे फल फूलहि लै जाइ बनराइ प्रति (५१०-१)
करै अभिमानु कहो कैसे बनि आवै जी । (५१०-२)
जैसे मुकताहल समुंद्रहि दिखावै जाइ (५१०-३)
बार बार ही सराहै सोभा तउ न पावै जी । (५१०-४)
जैसे कनी कंचन सुमेर सनमुख राखि (५१०-५)
मन मै गरबु करै बावरो कहावै जी । (५१०-६)
तैसे गिआन धिआन ठान प्रान दै रीझाइिए चाहै (५१०-७)
प्रानपति सतिगुर कैसे कै रीझावै जी ॥५१०॥ (५१०-८)

जैसे चोआ चंदनु अउ धान पान बेचन कउ (५११-१)

पूरबि दिसा लै जाइ कैसे बनि आवै जी । (५११-२)
पछम दिसा दाख दारम लै जाइ जैसे (५११-३)
मृग मद केसुर लै उतरहि धावै जी । (५११-४)
दखन दिसा लै जाइ लाइची लवंग लादि (५११-५)
बादि आसा उदम है बिड़तो न पावै जी । (५११-६)
तैसे गुन निधि गुर सागर कै बिदिमान (५११-७)
गिआन गुन प्रगटि कै बावरो कहावै जी ॥५११॥ (५११-८)

चलनी मै जैसे देखीअत है अनेक छिद्र (५१२-१)
करै करवा की निंदा कैसे बनि आवै जी । (५१२-२)
बिरख बिथूर भरपूर बहु सूरन सै (५१२-३)
कमलै कटीलो कहै कहू न सुहावै जी । (५१२-४)
जैसे उपहासु करै बाइिसु मराल प्रति (५१२-५)
छाडि मुकताहल द्रु गंध लिव लावै जी । (५१२-६)
तैसे हउ महा अपराधी अपराधि भरिए (५१२-७)
सकल संसार को बिकार मोहि भावै जी ॥५१२॥ (५१२-८)

आपदा अधीन जैसे दुखत दुहागन कउ (५१३-१)
सहजि सुहाग न सुहागन को भावई । (५१३-२)
बिरहनी बिरह दिएग मै संजोगनि को (५१३-३)
सुंदर सिंगारि अधिकारु न सुहावई । (५१३-४)
जैसे तन माँझि बाँझि रोग सोग संसो स्रम (५१३-५)
सउत के सुतहि पेखि महाँ दुख पावई । (५१३-६)
तैसे पर तन धन दूखन तृदोख मम (५१३-७)
साधन को सुकृत न हिरदै हितावई ॥५१३॥ (५१३-८)

जल सै निकास मीनु राखीऐ पटंबरि मै (५१४-१)
मिनु जल तलफ तजत पृअ प्रान है । (५१४-२)
बन सै पकर पंछी पिंजरी मै राखीऐ तउ (५१४-३)
बिनु बन मन एनमनो उनमान है । (५१४-४)
भामनी भतारि बिछुरत अति छीन दीन (५१४-५)
बिलख बदन ताहि भवन भइिआन है । (५१४-६)
तैसे गुरसिख बिछुरति साधसंगति सै (५१४-७)
जीवन जतन बिनु संगत न आन है ॥५१४॥ (५१४-८)

जैसे टूटे नागबेल सै बिदेस जाति (५१५-१)
सललि संजोग चिरंकाल जुगवत है । (५१५-२)
जैसे कूंज बचरा तिआग दिसंतरि जाति (५१५-३)
सिमरन चिति निरबिघन रहत है । (५१५-४)
गंगोदिक जैसे भरि भाँजन लै जाति जात्री (५१५-५)
सुजसु अधार निरमल निबहत है । (५१५-६)

तैसे गुर चरन सरनि अंतरि सिख (५१५-७)
सबदु संगति गुर धिआन कै जीअत है ॥५१५॥ (५१५-८)

जैसे बिनु पवनु कवन गुन चंदन सै (५१६-१)
बिनु मलिआगर पवन कत बासि है । (५१६-२)
जैसे बिनु बैद अवखद गुन गोपि होत (५१६-३)
अवखद बिनु बैद रोगहि न ग्रास है । (५१६-४)
जैसे बिनु बोहिथन पारि परै खेवट सै (५१६-५)
खेवट बिहून्न कत बोहिथ बिस=छधासु है । (५१६-६)
तैसे गुर नामु बिनु गंम न परमपदु (५१६-७)
बिनु गुर नाम निहकाम न प्रगास है ॥५१६॥ (५१६-८)

जैसे काचो पारो खात उपजै बिकार गाति (५१७-१)
रोम रोम कै पिराति महा दुख पाईऐ । (५१७-२)
जैसे तउ लसन खाइे मोनि कै सभा मै बैठे (५१७-३)
प्रगटै दुरगंध नाहि दुरत दुराईऐ । (५१७-४)
जैसे मिसटान पानि संगम कै माखी लीले (५१७-५)
होत उकलेद खेदु संकट सहाईऐ । (५१७-६)
तैसे ही अपरचे पिंड सिखन की भिखिआ खाइे (५१७-७)
अंतकाल भारी होइि जमलोक जाईऐ ॥५१७॥ (५१७-८)

जैसे मेघ बरखत हरखति है किसानि (५१८-१)
बिलख बदन लोधा लोन गरि जात है । (५१८-२)
जैसे परफुलत हुइि सकल बनासपती (५१८-३)
सुकत जवासो आक मूल मुरझात है । (५१८-४)
जैसे खेत सरवर पूरन किरख जल (५१८-५)
ऊच थल कालर न जल फलनात है । (५१८-६)
गुर उपदेस परवेस गुरसिख रिदै (५१८-७)
साकत सकति मति सुनि सकुचात है ॥५१८॥ (५१८-८)

जैसे राजा रवत अनेक रवनी सहेत (५१९-१)
सकल सपैती इेक बाँझ न संतान है । (५१९-२)
सीचत सलिल जैसे सफल सकल द्रुम (५१९-३)
निहफल सेंबल सलिल निरबानि है । (५१९-४)
दादर कमल जैसे इेक सरवर बिखै (५१९-५)
उतम अउ नीच कीच दिनकरि धिआन है । (५१९-६)
तैसे गुर चरन सरनि है सकल जगु (५१९-७)
चंदन बनासपती बाँस उनमान है ॥५१९॥ (५१९-८)

जैसे बछुरा बिललात मात मिलबे कउ (५२०-१)
बंधन कै बसि कछु बसु न बसात है । (५२०-२)

जैसे तउ बिगारी चाहै भवन गवन कीए (५२०-३)
पर बसि परे चितवत ही बिहात है । (५२०-४)
जैसे बिरहनी पृअ संगम सनेहु चाहे (५२०-५)
लाज कुल अंकस कै दुरबल गात है । (५२०-६)
तैसे गुर चरन सरनि सुख चाहै सिखु (५२०-७)
आगिआ बध रहत बिदेस अकुलात है ॥५२०॥ (५२०-८)

पर धन पर तन पर अपवाद बाद (५२१-१)
बलछल बंच परपंच ही कमात है । (५२१-२)
मित्र गुर स=छधाम द्रोह काम क्रोध लोभ मोह (५२१-३)
गोबध बधू बिस=छधास बंस बिप्र घात है । (५२१-४)
रोग सोग हुइ बिएग आपदा दरिद्र छिद्र (५२१-५)
जनमु मरन जमलोक बिललात है । (५२१-६)
क्रितघन बिसिख बिखिआदी कोटि दोखी दीन (५२१-७)
अधम असंख मम रोम न पुजात है ॥५२१॥ (५२१-८)

बेस=छधा के सिंगार बिबिचार को न पारु पाईऔ (५२२-१)
बिनु भरतार काकी नार कै बुलाईऔ । (५२२-२)
बगु सेती जीव घात करि खात केते को (५२२-३)
मोनि गहि धिआन धरे जुगत न पाईऔ । (५२२-४)
भाँड की भंडाई बुरवाई न कहत आवै (५२२-५)
अति ही ढिठाई सुकचत न लजाईऔ । (५२२-६)
तैसे पर तन धन दूखन तृदोख मम (५२२-७)
अधम अनेक इेक रोम न पुजाईऔ ॥५२२॥ (५२२-८)

जैसे चोर चाहीऔ चड़ाइिए सूरी चउबटा मै (५२३-१)
चुहटी लगाइि छाडीऔ तउ कहा मार है । (५२३-२)
खोटसारीए निकारिए चाहीऔ नगर हूं सै (५२३-३)
ताकी एर मोर मुख बैठे कहा आर है । (५२३-४)
महाँ बज्र भारु डारिए चाहीऔ जउ हाथी पर (५२३-५)
ताहि सिर छार के उडाइे कहाँ भार है । (५२३-६)
तैसे ही पतति पति कोट न पासंग भरि (५२३-७)
मोहि जमडंड अउ नरक उपकार है ॥५२३॥ (५२३-८)

जउ पै चोरु चोरी कै बतावै ह्रास मानसर (५२४-१)
छूटि कै न जाइि घरि सूरी चाड़ि मारीऔ । (५२४-२)
बाट मार बटवारो बगु मीन जउ बतावै (५२४-३)
ततखन तातकाल मूंड काटि डारीऔ । (५२४-४)
जउ पै परदारा भजि मृगन बतावै (५२४-५)
बिटुकान नाक खंड डंड नगर निकारीऔ । (५२४-६)
चोरी बटवारी परनारी कै तृदोख मम (५२४-७)

नरक अरकसुत डंड देत हारीऐ ॥५२४॥ (५२४-८)

जात है जगत्र जैसे तीरथ जात्रा नमित (५२५-१)
माझ ही बसत बग महिमा न जानी है । (५२५-२)
पूरन प्रगास भासकरि जगमग जोत (५२५-३)
उलू अंध कंध बुरी करनी कमानी है । (५२५-४)
जैसे तउ बसंत समै सफल बनासपती (५२५-५)
निहफल सैंबल बडाई उर आनी है । (५२५-६)
मोह गुर सागर मै चाखिए नही प्रेमरसु (५२५-७)
तृखावंत चात्रिकिजुगत बकबानी है ॥५२५॥ (५२५-८)

जैसे गजराज गाजि मारत मनुख सिरि (५२६-१)
डारत है छार ताहि कहत अरोग जी । (५२६-२)
सूआ जिउ पिंजर मै कहत बनाइि बातै (५२६-३)
पेख सुन कहै ताहि राज गृहि जोग जी । (५२६-४)
तैसे सुख संपति माइिआ मदोन पाप करै (५२६-५)
ताहि कहै सुखीआ रमत रस भोग जी । (५२६-६)
जती सती अउ संतोखी साधन की निंदा करै (५२६-७)
उलटोई गिआन धिआन है अगिआन लोग जी ॥५२६॥ (५२६-८)

सवैया जउ गरबै बहु बूंद चितंतरि (५२७-१)
सनमुख सिंध सोभ नही पावै । (५२७-२)
जउ बहु उडै खगधार महाबल (५२७-३)
पेख अकास रिदै सुकचावै । (५२७-४)
जिउ ब्रहमंड प्रचंड बिलोकत (५२७-५)
गूलर जंत उडंत लजावै । (५२७-६)
तूं करता हम कीइे तिहारे जी (५२७-७)
तो पहि बोलन किउ बनि आवै ॥५२७॥ (५२७-८)

तोसो न नाथु अनाथ न मोसरि (५२८-१)
तोसो न दानी न मो सो भिखारी । (५२८-२)
मोसो न दीन दइिआलु न तोसरि (५२८-३)
मोसो अगिआनु न तोसो बिचारी । (५२८-४)
मोसो न पतति न पावन तोसरि (५२८-५)
मोसो बिकारी न तोसो उपकारी । (५२८-६)
मेरे है अवगुन तू गुन सागर (५२८-७)
जात रसातल एट तिहारी ॥५२८॥ (५२८-८)

कवितु उलटि पवन मन मीन की चपल गति (५२९-१)
दसम दुआर पार अगम निवास है । (५२९-२)
तह न पावक पवन जल पृथमी अकास (५२९-३)

नाहि ससि सूर उतपति न बिनास है । (५२६-४)
नाहि परकिरति बिरति पिंड प्रान गिआन (५२६-५)
सबद सुरति नहि दृसटि न प्रगास है । (५२६-६)
छधामी ना सेवक उनमान अनहद परै (५२६-७)
निरालंब सुन्न मै न बिसम बिस=छधास है ॥५२६॥ (५२६-८)

जैसे अहिनिसि मदि रहत भाँजन बिखै (५३०-१)
जानत न मरमु किधउ कवन प्रकारी है । (५३०-२)
जैसे बेली भरि भरि बाँटि दीजीअत सभा (५३०-३)
पावत न भेदु कछु बिधि न बीचारी है । (५३०-४)
जैसे दिनप्रति मदु बेचत कलाल बैठे (५३०-५)
महिमा न जानई दरब हितकारी है । (५३०-६)
तैसे गुरसबद के लिखि पड़ि गावत है (५३०-७)
बिरलो अंमृतरसु पदु अधिकारी है ॥५३०॥ (५३०-८)

तिनु तिनु मेलि जैसे छानि छाईअत पुन (५३१-१)
अगनि प्रगास तास भसम करत है । (५३१-२)
सिंध के कनार बालू गृहि बालक रचत जैसे (५३१-३)
लहरि उमगि भइे धीर न धरत है । (५३१-४)
जैसे बन बिखै मिल बैठत अनेक मृग (५३१-५)
इेक मृगराज गाजे रहिए न परत है । (५३१-६)
दृसटि सबदु अरु सुरति धिआन गिआन (५३१-७)
प्रगटे पूरन प्रेम सगल रहत है ॥५३१॥ (५३१-८)

चंदन की बारि जैसे दीजीअत बबूर द्रुम (५३२-१)
कंचन संपट मधि काचु गहि राखीअै । (५३२-२)
जैसे ह्मस पासि बैठि बाइिसु गरब करै (५३२-३)
मृग पति भवनु मै जंबक भलाखीअै । (५३२-४)
जैसे गरधब गज प्रति उपहास करै (५३२-५)
चकवै को चोर डाँडे दूध मद माखीअै । (५३२-६)
साधन दुराइिकै असाध अपराध करै (५३२-७)
उलटीअै चाल कलीकाल भ्रम भाखीअै ॥५३२॥ (५३२-८)

जैसे बिनु लोचन बिलोकीअै न रूप रंगि (५३३-१)
स्रवन बिहून्न राग नाद न सुनीजीअै। (५३३-२)
जैसे बिनु जिहबा न उचरै बचन अर (५३३-३)
नासका बिहून्न बास बासना न लीजीअै। (५३३-४)
जैसे बिनु कर करि सकै न किरत क्रम (५३३-५)
चरन बिहून्न भउेन गउन कत कीजीअै । (५३३-६)
असन बसन बिनु धीरजु न धरै देह (५३३-७)
बिनु गुरसबद न प्रेमरसु पीजीअै ॥५३३॥ (५३३-८)

जैसे फल सै बिरख बिरखु सै होत फल (५३४-१)
अतिभुति गति कछु कहन न आवै जी । (५३४-२)
जैसे बासु बावन मै बावन है बासु बिखै (५३४-३)
बिसम चरित्र कोऊ मरमु न पावै जी । (५३४-४)
कासटि मै अगनि अगनि मै कासटि है (५३४-५)
अति असचरजु है कउतक कहावै जी । (५३४-६)
सतिगुर मै सबद सबद मै सतिगुर है (५३४-७)
निरगुन गिआन धिआन समझावै जी ॥५३४॥ (५३४-८)

जैसे तिलि बासु बासु लीजीअति कुसम सै (५३५-१)
ताँते होत है फुलेलि जतन कै जानीऔ । (५३५-२)
जैसे तउ अउटाइि दूध जावन जमाइि मथि (५३५-३)
संजम सहति घ्रिति प्रगटि कै मानीऔ । (५३५-४)
जैसे कूआ खोद कै बसुधा धसाइि कौरी (५३५-५)
लाजु कै बहाइि डोलि काढि जलु आनीऔ । (५३५-६)
गुर उपदेस तैसे भावनी भगति भाइि (५३५-७)
घटि घटि पूरन ब्रहम पहिचानीऔ ॥५३५॥ (५३५-८)

जैसे तउ सरिता जलु कासटहि न बोरत (५३६-१)
करत चित लाज अपनोई प्रतिपारिए है । (५३६-२)
जैसे तउ करत सुत अनिक इिआनपन (५३६-३)
तऊ न जननी अवगुन उरधारिए है । (५३६-४)
जैसे तउ सरन्न सूर पूरन परतगिआ राखै (५३६-५)
लख अपराध कीइे मारि न बिडारिए है । (५३६-६)
तैसे ही परम गुर पारस परस गति (५३६-७)
सिखन को किरत करमु कछू न बीचारिए है ॥५३६॥ (५३६-८)

जैसे जल धोइे बिनु अंबर मलीन होत (५३७-१)
बिनु तेल मेले जैसे केस हूं भइिआन है । (५३७-२)
जैसे बिनु माँजे दरपन जोतिहीन होत (५३७-३)
बरखा बिहून्न जैसे खेत मै न धान है । (५३७-४)
जैसे बिनु दीपकु भवन अंधकार होत (५३७-५)
लोने घ्रिति बिनु जैसे भोजन समान है । (५३७-६)
तैसे बिनु साधसंगति जनम मरन दुख (५३७-७)
मिटत न भै भरम बिनु गुर गिआन है ॥५३७॥ (५३७-८)

जैसे माँझ बैठे बिनु बोहिथा न पार परै (५३८-१)
पारस परसै बिनु धात न कनिक है । (५३८-२)
जैसे बिनु गंगा न पावन आन जलु है (५३८-३)
नार न भतारि बिनु सुत न अनिक है । (५३८-४)

जैसे बिनु बीज बोइे निपजै न धान धारा (५३८-५)
सीप स=छधाँतबूंद बिनु मुकता न मानक है । (५३८-६)
तैसे गुर चरन सरनि गुर भेटे बिनु (५३८-७)
जनम मरन मेटि जन न जन कहै ॥५३८॥ (५३८-८)

जैसे तउ कहै मंजार करउ न अहार मास (५३९-१)
मूसा देखि पाछै दउरे धीर न धरत है । (५३९-२)
जैसे कऊआ रीस कै मराल सभा जाइि बैठे (५३९-३)
छाडि मुकताहल दुरगंध सिमरत है । (५३९-४)
जैसे मोनि गहि सिआर करत अनेक जतन (५३९-५)
सुनत सिआर भाखिआ रहिए न परत है । (५३९-६)
तैसे पर तन पर धनदूख न तृदोख मन (५३९-७)
कहत कै छाडिए चाहै टेव न टरत है ॥५३९॥ (५३९-८)

सिंमृति पुरान कोटानि बखान बहु (५४०-१)
भागवत बेद बिआकरन गीता । (५४०-२)
सेस मरजेस अखलेस सुर महेस मुन (५४०-३)
जगतु अर भगति सुर नर अतीता । (५४०-४)
गिआन अर धिआन उनमान उनमन उकति (५४०-५)
राग नादि दिज सुरमति नीता । (५४०-६)
अरध लग मात्र गुरसबद अखर मेक (५४०-७)
अगम अति अगम अगाधि मीता ॥५४०॥ (५४०-८)

दरसनु देखिए सकल संसारु कहै (५४१-१)
कवन दृसटि सउ मन दरस समाईअै । (५४१-२)
गुर उपदेस सुनिए सुनिए सभ कोऊ कहै (५४१-३)
कवन सुरति सुनि अनत न धाईअै । (५४१-४)
जै जैकार जपत जगत गुरमंत्र जीह (५४१-५)
कवन जुगत जोती जोति लिव लाईअै । (५४१-६)
दृसटि सुरत गिआन धिआन सरबंग हीन (५४१-७)
पतत पावन गुर मूड़ समझाईअै ॥५४१॥ (५४१-८)

जैसे खाँड खाँड कहै मुखि नही मीठा होइि (५४२-१)
जब लग जीभ स=छधाद खाँडु नहीं खाईअै । (५४२-२)
जैसे रात अंधेरी मै दीपक दीपक कहै (५४२-३)
तिमर न जाई जब लग न जराईअै । (५४२-४)
जैसे गिआन गिआन कहै गिआन हूं न होत कछु (५४२-५)
जब लगु गुर गिआन अंतरि न पाईअै । (५४२-६)
तैसे गुर कहै गुरधिआन हू न पावत (५४२-७)
तब लगु गुर दरस जाइि न समाईअै ॥५४२॥ (५४२-८)

सिंमृति पुरान बेद सासत्र बिरंच बिआस (५४३-१)
नेत नेत नेत सुक सेख जस गाइिए है । (५४३-२)
सिउ सनकादि नारदाइिक रखीसुरादि (५४३-३)
सुर नर नाथ जोग धिआन मै न आँइिए है । (५४३-४)
गिर तर तीरथ गवन पुन्न दान ब्रत (५४३-५)
होम जग भोग नईबेद कै न पाइिए है । (५४३-६)
अस वडभागि माइिआ मध गुरसिखन कउ (५४३-७)
पूरनब्रहम गुर रूप हुइि दिखाइिए है ॥५४३॥ (५४३-८)

बाहर की अगनि बूझत जल सरता कै (५४४-१)
नाउ मै जउ अगनि लागै कैसे कै बुझाईऐ । (५४४-२)
बाहर सै भागि एट लीजीअत कोट गड़ (५४४-३)
गड़ मै जउ लूटि लीजै कहो कत जाईऐ । (५४४-४)
चोरन कै त्रास जाइि सरनि गहै नरिंद (५४४-५)
मारै महीपति जीउ कैसे कै बचाईऐ । (५४४-६)
माइिआ डर डरपत हार गुरदुअरै जावै (५४४-७)
तहा जउ माइिआ बिआपै कहा ठहराईऐ ॥५४४॥ (५४४-८)

सरप कै त्रास सरनि गहै खरपति जाइि (५४५-१)
तहा जउ सरप ग्रासै कहो कैसे जीजीऐ । (५४५-२)
जंबक सै भागि मृगराज की सरनि गहै (५४५-३)
तहाँ जउ जंबक हरै कहो कहाँ कीजीऐ । (५४५-४)
दारिद्र कै चाँपै जाइि समर समेर सिंध (५४५-५)
तहाँ जउ दारिद्र दहै काहि दोसु दीजीऐ । (५४५-६)
करम भरम कै सरनि गुरदेव गहै (५४५-७)
तहाँ न मिटै करमु कउन एट लीजीऐ ॥५४५॥ (५४५-८)

जैसे तउ सकल निधि पूरन समुंद्र बिखै (५४६-१)
ह्रास मरजीवा निहचै प्रसादु पावही । (५४६-२)
जैसे परबत हीरा मानक पारस सिध (५४६-३)
खनवारा खनि जगि प्रगटावही । (५४६-४)
जैसे बन बिखै मलिआगर सौधा कपूर (५४६-५)
सोध कै सुबासी सुबास बिहसावही । (५४६-६)
तैसे गुरबानी बिखै सकल पदारथ है (५४६-७)
जोई जोई खोजै सोई सोई निपजावही ॥५४६॥ (५४६-८)

पर तृअ दीरघ समानि लघु जावदेक (५४७-१)
जननी भगनी सुता रूप कै निहारीऐ । (५४७-२)
पर दरबाँ सहि गऊ मास तुलि जानि रिदै (५४७-३)
कीजै न सपरसु अपरस सिधारीऐ । (५४७-४)
घटि घटि पूरनब्रहम जोति एतिपोति (५४७-५)

अवगुनु गुन काहू को न बीचारीऐ । (५४७-६)
गुर उपदेस मन धावत बरजि (५४७-७)
पर धन पर तन पर दूख न निवारीऐ ॥५४७॥ (५४७-८)

जैसे प्रात समै खगे जात उडि बिरख सै (५४८-१)
बहुरि आइ बैठत बिरख ही मै आइकै । (५४८-२)
चीटी चीटा बिल सै निकसि धर गवन कै (५४८-३)
बहुरिए पैसत जैसे बिल ही मै जाइकै । (५४८-४)
लरकै लरिका रूठि जात तात मात सन (५४८-५)
भूख लागै तिआगै हठ आवै पछुताइ कै । (५४८-६)
तैसे गृह तिआगि भागि जात उदास बास (५४८-७)
आसरो तकत पुनि गृहसत को धाइकै ॥५४८॥ (५४८-८)

काहू दसाके पवन गवन कै बरखा है (५४९-१)
काहू दसाके पवन बादर बिलात है । (५४९-२)
काहू जल पान कीइे रहत अरोग दोही (५४९-३)
काहू जल पान बिआपे बृथा बिललात है । (५४९-४)
काहू गृह की अगनि पाक साक सिधि करै (५४९-५)
काहू गृह की अगनि भवनु जगत है । (५४९-६)
काहू की संगत मिलि जीवन मुकति हुइि (५४९-७)
काहू की संगति मिलि जमुपुरि जात है ॥५४९॥ (५४९-८)

प्रीतम के मेल खेल प्रेम नेम कै पतंगु (५५०-१)
दीपक प्रगास जोती जोति हू समावई । (५५०-२)
सहज संजोग अरु बिरह बिएग बिखै (५५०-३)
जल मिलि बिछुरत मीन हुइि दिखावई । (५५०-४)
सबद सुरति लिव थकति चकत होइि (५५०-५)
सबदबेधी कुरंहग जुगति जतावई । (५५०-६)
मिलि बिछुरत अरु सबद सुरति लिव (५५०-७)
कपट सनेह सनोही न कहावई ॥५५०॥ (५५०-८)

दरसन दीप देखि होइि न मिलै पतंगु (५५१-१)
परचा बिहून्न गुरसिख न कहावई । (५५१-२)
सुनत सबद धुनि होइि न मिलत मृग (५५१-३)
सबदसुरति हीनु जनमु लजावई । (५५१-४)
गुर चरनामृत कै चातृकु न होइि मिलै (५५१-५)
रिदै न बिसवासु गुरदास हुइि न झसावई । (५५१-६)
सतिरूप सतिनामु सतिगुर गिआन धिआन (५५१-७)
इेक टेक सिख जल मीन हुइि दिखावई ॥५५१॥ (५५१-८)

उतम मधिम अरु अधम तृबिधि जगु (५५२-१)

आपनो सुअन्नु काहू बुरो तउ न लागि है । (५५२-२)
सभ कोऊ बनजु करत लाभ लभत कउ (५५२-३)
आपनो बिउहारु भलो जानि अनरागि है । (५५२-४)
तैसे अपने अपने इसटै चाहत सभै (५५२-५)
अपने पहरे सभ जगतु सुजागि है । (५५२-६)
सुअन्नु समरथ भइे बनजु बिकाने जानै (५५२-७)
इसट प्रतापु अंतिकालि अग्रभागि है ॥५५२॥ (५५२-८)

आपनो सुअन्नु सभ काहूऐ सुंदर लागै (५५३-१)
सफलु सुंदरता संसार मै सराहीऐ । (५५३-२)
आपनो बनजु बुरो लागत न काहू रिदै (५५३-३)
जाइि जगु भलो कहै सोई तउ बिसाहीऐ । (५५३-४)
आपने करमु कुला धरम करत सभै (५५३-५)
उतमु करमु लोग बेद अवगाहीऐ । (५५३-६)
गुर बिनु मुकति न होइि सब कोऊ कहै (५५३-७)
माइिआ मै उदासु राखै सोई गुर चाहीऐ ॥५५३॥ (५५३-८)

स=छधैया=०६बेद बिरंचि बिचारु न पावत (५५४-१)
चक्रित सेख सिवादि भइे है । (५५४-२)
जोग समाधि अराधत नारद (५५४-३)
सारद सुक्र सनात नइे है । (५५४-४)
आदि अनादि अगादि अगोचर (५५४-५)
नाम निरंजन जाप जइे है । (५५४-६)
स्री गुरदेव सुमेव सुसंगति । (५५४-७)
पैरी पइे भाई पैरी पइे है ॥५५४॥ (५५४-८)

कबितुजैसे मधुमाखी सीचि सीचि कै इिकत्र करै (५५५-१)
हरै मधू आइि ताके मुखि छारे डारि कै । (५५५-२)
जैसे बछ हेत गऊ संचत है खीरु ताहि । (५५५-३)
लेत है अहीरु दुहि बछुरे खलारे बिडार कै । (५५५-४)
जैसे धर खोदि खोदि करि बिल साजै मूसा (५५५-५)
पैसत सरपु धाइि खाइि ताहि मारि कै । (५५५-६)
तैसे कोट पाप करि माइिआ जोरि जोरि मूड़ (५५५-७)
अंतकालि छाडि चलै दोनो करि झारि कै ॥५५५॥ (५५५-८)

जैसे अनिक फनंग फनग्र भार धरन धारी (५५६-१)
ताही गिरवरधर कहै कउन बडाई है । (५५६-२)
जाको इेक बावरो बिसु नामु नाथु कहावै (५५६-३)
ताहि बृजनाथ कहे कउन अधिकाई है । (५५६-४)
अनिक अकार एअंकार के बृथारे (५५६-५)
ताहि नंद नंदन कहे कउन बडाई है । (५५६-६)

जानत उसतति करत निंदिआ अंध मूड़ (५५६-७)
अैसे अराधबे ते मोनि सुखदाई है ॥५५६॥ (५५६-८)

कबि्तजैसे तौ कंचनै पारो परसत सोख लेत (५५७-१)
अगनि मै डारे पुन पारो उड जात है । (५५७-२)
जैसे मल मूत्र लग अंबर मलीन होत । (५५७-३)
साबन सलिल मिलि निरमल गात है । (५५७-४)
जैसे अहि ग्रसे बिख ब=छएापत सगल अंग (५५७-५)
मंत्र कै बिखै बिकार सभ सु बिलात है । (५५७-६)
तैसे माया मोह कै बिमोहत मगन मन (५५७-७)
गुर उपदेस माया मूल मुरझात है ॥५५७॥ (५५७-८)

जैसे पाट चाकी के न मूंड के उठाइे जात (५५८-१)
कला कीइे लीइे जात अैंचत अचिंत ही । (५५८-२)
जैसे गज केहर न बल कीइे बस होत (५५८-३)
जतन कै आनीअत समत समत ही । (५५८-४)
जैसे सरिता प्रबल देखत भयान रूप (५५८-५)
करदम चढ्ह पार उतरै तुरत ही । (५५८-६)
तैसे दुख सुख बहु बिखम संसार बिखै (५५८-७)
गुर उपदेस जल जल जाइि कत ही ॥५५८॥ (५५८-८)

जैसे तौ मराल माल बैठत है मानसर (५५९-१)
मुकता अमोल खाइि खाइि बिगसात है । (५५९-२)
जैसे तौ सुजन मिलि बैठत है पाकसाल (५५९-३)
अनिक प्रकार बिंजनादि रस खात है । (५५९-४)
जैसे द्रुम छाया मिल बैठत अनेक पंछी (५५९-५)
खाइि फल मधुर बचन कै सुहात है । (५५९-६)
तैसे गुरसिख मिल बैठत धरमसाल (५५९-७)
सहज सबदरस अंमृत अघात है । (५५९-८)

जैसे बनत बचित्र अभरन सिंगार सजि (५६०-१)
भेटत भतार चित बिमल अनंद है । (५६०-२)
जैसे सरुवर परिफुलत कमल दल । (५६०-३)
मधुकर मुदत मगन मकरंद है । (५६०-४)
जैसे चित चाहतचकोर देख धआन धरै (५६०-५)
अंमृत किरन अचवत हित चंद है । (५६०-६)
तैसे गायबो सुनायबो सुसबद संगत मैं (५६०-७)
मानो दान कुरखेत्र पाप मूल कंद है॥५६०॥ (५६०-८)

जैसे किरतास गर जात जल बूंद परी (५६१-१)
घ्रित सनबंध जल मध सावधान है । (५६१-२)

जैसे कोट भारतूल तनक चिनग जरै (५६१-३)
तेल मेल दीपक मैं बाती बिद्मान है । (५६१-४)
जैसे लोहो बूड जात सलल मैं डारत ही । (५६१-५)
कासट प्रसंग गंग सागर न मान है । (५६१-६)
तैसे जम काल ब=छएाल सगल संसार ग्रासै । (५६१-७)
सतिगुर भेटत ही दासन दसान है ॥५६१॥ (५६१-८)

जैसे खाँड चून घ्रित होत घर बिखै पै (५६२-१)
पाहुना कै आइे पूरी कै खुवाइि खाईअै । (५६२-२)
जैसे चीर हार मुकता कनक आभरन पै । (५६२-३)
ब=छएाहु काजसाजि तन सुजन दिखाईअै । (५६२-४)
जैसे हीरा मानिक अमोल होत हाट ही मैं । (५६२-५)
गाहकै दिखाइि बिड़ता बिसेख पाईअै । (५६२-६)
तैसे गुरबानी लिख पोथी बाँधि राखीअत । (५६२-७)
मिल गुरसि्ख पड़ि सुनि लिव लाईअै ॥५६२॥ (५६२-८)

जैसे नरपति बनिता अनेक ब=छएाहत है । (५६३-१)
जाके सुत जनम ह=छधै ताँही गृह राज है । (५६३-२)
जैसे दध बोह्थ बहाइि देत चहूं एर । (५६३-३)
जोई पार पह्चै पूरन सभ काज है । (५६३-४)
जैसे खान खनत अनंत खनवारो खोजै । (५६३-५)
हीरा हाथ आवै जाकै ताँके बाजु बाज है । (५६३-६)
तैसे गुरसिख नवतन अउ पुरातन पै । (५६३-७)
जाँ पर क्रिपा कटाछ ताँकै छबि छाज है ॥५६३॥ (५६३-८)

जैसे बीराराधी मिसटान पान आन कहु (५६४-१)
खुवावत मंगाइि माँगै आप नही खात है । (५६४-२)
जैसे द्रुम सफल फलत फल खात नाँहि (५६४-३)
पथक पखेरू तोर तोर ले जात हैं । (५६४-४)
जैसे तौ समुंद्र निधि पूरन सकल बिध (५६४-५)
ह्मस मरजीवा हेव काधत सुगात है । (५६४-६)
तैसे निहकाम साध सोभत संसार बिखै (५६४-७)
परउपकार हेत सुंदर सुगात है ॥५६४॥ (५६४-८)

जैसे दीप जोत लिव लागै चले जात सुख (५६५-१)
गहे दुचितु है=छध भटका से भेट है । (५६५-२)
जैसे दध कूल बैठ मुकता चुनत ह्मस (५६५-३)
पैरत न पावै पार लहर लपेट है । (५६५-४)
जैसे नृख अगनि कै मध=छए भाव सिध होत (५६५-५)
निकट बिकट दुख सहसा न मेट है । (५६५-६)
तैसे गुरसबद सनेह कै परमपद (५६५-७)

मूरत समीप सिंघ साप की अखेट है ॥५६५॥ (५६५-८)

स=छधामि काज लाग सेवा करत सेवक जैसे । (५६६-१)
नरपति निरख सनेह उपजावही । (५६६-२)
जैसे पूत चोचला करत बिद=छएमान (५६६-३)
देखि देखि सुनि सुनि आनंद बढावही । (५६६-४)
जैसे पाकसाला मधि बिंजन परोसै नारि (५६६-५)
पति खात प=छएार कै परम सुख पावही । (५६६-६)
तैसे गुरसबद सुनत स्रोता सावधान (५६६-७)
गावै रीझ गायन सहज लिव लावही ॥५६६॥ (५६६-८)

जैसे पेखै स=छएाम घटा गगन घमंड घोर (५६७-१)
मोर औ पपीहा सुभ सबद सुनावही । (५६७-२)
जैसे तौ बसंत समै मौलत अनेक आँब (५६७-३)
कोकला मधुर धुनि बचन सुनावही । (५६७-४)
जैसे परफुलत कमल सरवरु विखै (५६७-५)
मधुप गुंजारत अनंद उपजावही । (५६७-६)
तैसे पेख स्रोता सावधानह गाइन गावै (५६७-७)
प्रगटै पूरन प्रेम सहजि समावही ॥५६७॥ (५६७-८)

जैसे अहि निस अंधिआरी मणि काढ राखै (५६८-१)
क्रीड़ा कै दुरावै पुन काहू न दिखावही । (५६८-२)
जैसे बर नार कर सिहजा संजोग भोग (५६८-३)
होत परभात तन छादन छुपावही । (५६८-४)
जैसे अल कमल संपट अचवत मध (५६८-५)
भोर भइे जात उड नातो न जनावही । (५६८-६)
तैसे गुरसिख उठ बैठत अंमृत जोग (५६८-७)
सभ सुधा रस चाख सुख तृपतावही ॥५६८॥ (५६८-८)

सिहजा संजोग पृय प्रेमरस खेल जैसे । (५६९-१)
पाछै बधू जनन सै गरभ समावही । (५६९-२)
पूरन अधान भइे सोवै गुरजन बिखै (५६९-३)
जागै परसूत समै सभन जगावही । (५६९-४)
जनमत सुत संम्रथ ह=छधै सुखह दिखावही । (५६९-५)
तैसे गुर भेटत भै भाइि सिख सेवा करै (५६९-६)
अलप अहार निंद्रा सबद कमावही ॥५६९॥ (५६९-७)

जैसे अनचर नरपत की पछानैं भाखा (५७०-१)
बोलत बचन खिन बूझ बिन देख ही । (५७०-२)
जैसे जौहरी परख जानत है रतन की (५७०-३)
देखत ही कहै खरौ खोटो रूप रेख ही । (५७०-४)

जैसे खीर नीर को निबेरो करि जानै ह्मस (५७०-५)
राखीअै मिलाइि भिन्न भिन्न कै सरेख ही । (५७०-६)
तैसे गुरसबद् सुनत पहिचानै सिख (५७०-७)
आन बानी कितमी न गनत है लेख ही ॥५७०॥ (५७०-८)

बायस उडह बल जाउ बेग मिलौ पीय (५७१-१)
मिटै दुख रोग सोग बिरह बियोग को । (५७१-२)
अवध बिकट कटै कपट अंतर पट (५७१-३)
देखउ दिन प्रेमरस सहज संजोग को । (५७१-४)
लाल न आवत शुभ लगन सगन भले (५७१-५)
होइि न बिलंब कछु भेद् बेद् लोक को । (५७१-६)
अतिहि आतुर भई अधिक औसेर लागी (५७१-७)
धीरज न धरौ खोजौ धारि भेख जोग को ॥५७१॥ (५७१-८)

अगनि जरत, जल बूडत, सरप ग्रसहि (५७२-१)
ससत्र अेंक रोम रोम करि घात है । (५७२-२)
बिरथा अनेक अपदा अधीन दीन गति । (५७२-३)
ग्रीखम औ सीत बरख माहि निस प्रात है । (५७२-४)
गो, दि=छधज, बधू बिस=छधास, बंस, कोटि हतया (५७२-५)
तृसना अनेक दुख दोख बस गात है । (५७२-६)
अनिक प्रकार जोर सकल संसार सोध (५७२-७)
पीय के बिछोह पल इेक न पुजात है ।५७२॥ (५७२-८)

पूरनि सरद् ससि सकल संसार कहै (५७३-१)
मेरे जाने बर बैसंतर की ऊक है । (५७३-२)
अगन अगन तन मधय चिनगारी छाडै (५७३-३)
बिरह उसास मानो फन्नग की फूक है । (५७३-४)
परसत पावक पखान फूट टूट जात । (५७३-५)
छाती अति बरजन होइि दोइि टूक है । (५७३-६)
पीय के सिधारे भारी जीवन मरन भइे (५७३-७)
जनम लजायो प्रेम नेम चित चूक है ॥५७३॥ (५७३-८)

बिन पृय सिहजा भवन आन रूप रंग (५७४-१)
देखीअै सकल जमदूत भै भयान है । (५७४-२)
बिन पृय राग नाद् बाद् ग=छएान आन कथा (५७४-३)
लागै तन तीछन दुसह उर बान है । (५७४-४)
बिन पृय असन बसन अंग अंग सुख (५७४-५)
बिखया बिखमु औ बैसंतर समान है । (५७४-६)
बिन पृय मानो मीन सलल अंतरगत । (५७४-७)
जीवन जतन बिन प्रीतम न आन है ॥५७४॥ (५७४-८)

पाइि लाग लाग दूती बेनती करत हती (५७५-१)
मान मती होइि काहै मुख न लगावती । (५७५-२)
सजनी सकल कहि मधुर बचन नित (५७५-३)
सीख देति हुती प्रति उतर नसावती । (५७५-४)
आपन मनाइि पृआ टेरत है पृआ पृआ (५७५-५)
सुन सुन मोन गहि नायक कहावती । (५७५-६)
बिरह बिछोह लग पूछत न बात कोऊ (५७५-७)
बृथा न सुनत ठाढी द=छधारि बिललावती ॥५७५॥ (५७५-८)

याही मसतक पेख रीझत को प्रान नाथ (५७६-१)
हाथ आपनै बनाइि तिलक दिखावते । (५७६-२)
याही मसतक धारि हसत कमल पृय (५७६-३)
प्रेम कथि कथि कहि मानन मनावते । (५७६-४)
याही मसतक नाही नाही करि भागती ही (५७६-५)
धाइि धाइि हेत करि उरहि लगावते । (५७६-६)
सोई मसतक धुनि धुनि पुन रोइि उठौं (५७६-७)
स=छधपने हू नाथ नाहि दरस दिखावते ॥५७६॥ (५७६-८)

जैसे तौ प्रसूत समै सत्र्‌ करि पृअै (५७७-१)
जनमत सुत पुन रचत सिंगारै जी । (५७७-२)
जैसे बंदसाला बिखै भूपत की निंदा करै (५७७-३)
छूटत ही वाही स=छधामि कामहि सम्ारै जी । (५७७-४)
जैसे हर हाइि गाइि सासना सहत नित (५७७-५)
कबहूं न समझै कुटेवहि न डारै जी । (५७७-६)
तैसे दुख दोख पापी पापहि त=छएागि=छएो चाहै (५७७-७)
संकट मिटत पुन पापहि बीचारै जी ॥५७७॥ (५७७-८)

जैसे बैल तेली को जानत कई कोस चल=छएो (५७८-१)
नैन उघरत वाही ठेर ही ठिकानो है । (५७८-२)
जैसे जेवरी बटत आँधरो अचिंत चिंत (५७८-३)
खात जात बछुरो टटेरो पछुतानो है । (५७८-४)
जैसे मृग तृसना लौ धावै मृग तृखावंत । (५७८-५)
आवत न साँति भ्रम भ्रमत हिरानो है । (५७८-६)
तैसे स=छधपनंतरु दिसंतर बिहाय गई (५७८-७)
पहुंच न सक=छएो तहाँ जहाँ मोहि जानो है ॥५७८॥ (५७८-८)

सुतन के पिता अर भ्रातन के भ्राता भइे (५७९-१)
भामन भतार हेत जननी के बारे हैं । (५७९-२)
बालक कै बाल बुधि , तरुन सै तरुनाई (५७९-३)
बृध सै बृध बिवसथा बिसथारे हैं । (५७९-४)
दृसट के रूप रंग, सुरत कै नाद बाद (५७९-५)

नासका सुगंधि , रस रसना उचारे हैं । (५७६-६)
घटि अवघटि नट वट अद्भुत गति (५७६-७)
पूरन सकल भूत, सभ ही तै न=छएारे है ॥५७६॥ (५७६-८)

जैसे तिल पीड़ तेल काढीअत कसटु कै (५८०-१)
ताँते होइि दीपक जराइे उजियारो जी । (५८०-२)
जैसे रोम रोम करि काटीऐ अजा को तन (५८०-३)
ताँकी तात बाजै राग रागनी सो पयारो जी । (५८०-४)
जैसे तउ उटाय दरपन कीजै लोस सेती (५८०-५)
ताते कर गहि मुख देखत संसारो जी । (५८०-६)
तैसे दूख भूख सुध साधना कै साध भइे (५८०-७)
ताही ते जगत को करत निसतारो जी ॥५८०॥ (५८०-८)

जैसे अन्नादि आदि अंत परयंत ह्यत (५८१-१)
सगल संसार को आधार भयो ताँही सैं । (५८१-२)
जैसे तउ कपास त्रास देत न उदास काढै (५८१-३)
जगत की एट भइे अंबर दिवाही सैं । (५८१-४)
जैसे आपा खोइि जल मिलै सभि बरन मैं (५८१-५)
खग मृग मानस तृपत गत याही सैं । (५८१-६)
तैसे मन साधि साधि साधना कै साध भइे (५८१-७)
याही ते सकल कौ उधार, अवगाही सैं ॥५८१॥ (५८१-८)

संग मिलि चलै निरबिघन पहूचै घर (५८२-१)
बिछरै तुरत बटवारो मार डार हैं । (५८२-२)
जैसे बार दीइे खेत छुवत न मृग नर (५८२-३)
छेडी भइे मृग पंखी खेतहि उजार हैं । (५८२-४)
पिंजरा मै सूआ जैसे राम नाम लेत हेतु (५८२-५)
निकसति खिन ताँहि ग्रसत मंजार है । (५८२-६)
साधसंग मिलि मन पहुचै सहज घरि (५८२-७)
बिचरत पंचो दूत प्रान परिहार हैं ॥५८२॥ (५८२-८)

जैसे तात मात गृह जनमत सुत घने (५८३-१)
सकल न होत समसर गुन गथ जी । (५८३-२)
चटीआ अनेक जैसे आवैं चटसाल बिखै (५८३-३)
पड़त न इेकसे सरब हर कथ जी । (५८३-४)
जैसे नदी नाव मिलि बैठत अनेक पंथी (५८३-५)
होत न समान सभै चलत हैं पथ जी । (५८३-६)
तैसे गुरचरन शरन हैं अनेक सिख (५८३-७)
सतिगुर करन कारन समरथ जी ॥५८३॥ (५८३-८)

जैसे जनमत कन्न=छएा दीजीऐ दहेज घनो (५८४-१)

ताके सुत आगै ब=छएाहे बहु पुन लीजीअै । (५८४-२)
जैसे दाम लाईअत प्रथम बनज बिखै (५८४-३)
पाछै लाभ होत मन सकुच न कीजीअै । (५८४-४)
जैसे गऊ सेवा कै सहेत प्रतिपालीअत (५८४-५)
सकल अखाद् वाको दूध दुहि पीजीअै । (५८४-६)
तैसे तन मन धन अरप सरन गुर (५८४-७)
दीख=छएा दान लै अमर सद् सद् जीजीअै ॥५८४॥ (५८४-८)

जैसे लाख कोरि लिखत न कन भार लागै (५८५-१)
जानत सु स्रम होइि जाकै गन राखीअै । (५८५-२)
अंमृत अंमृत कहै पाईअै न अमर पद् (५८५-३)
जौ लौ जिह=छधा कै सुरस अंमृत न चाखीअै । (५८५-४)
बंदीजन की असीस भूपति न होइि कोऊ (५८५-५)
सिंघासन बैठे जैसे चक्रवै न भाखीअै । (५८५-६)
तैसे लिखे सुने कहे पाईअै ना गुरमति (५८५-७)
जौ लौ गुरसबद् की सुजुकत न लाखीअै ॥५८५॥ (५८५-८)

जैसे तउ चंपक बेल बिबध बिथार चारु (५८६-१)
बासना प्रगट होत फुल ही मै जाइिकै । (५८६-२)
जैसे द्रुम दीरघ स=छधरूप देखीअै प्रसिध (५८६-३)
स=छधाद् रस होत फल ही मै पुन आइिकै । (५८६-४)
जैसे गुर ग=छएान राग नाद् हिरदै बसत (५८६-५)
करत प्रकास तास रसना रसाइिकै । (५८६-६)
तैसे घट घट बिखै पूरन ब्रहम रूप (५८६-७)
जानीअै प्रत=छएछ महाँपुरख मनाइिकै ॥५८६॥ (५८६-८)

जैसे बृथावंत जंत पूछै बैद् बैद् प्रति (५८७-१)
जौ लौ न मिटत रोग तौ लौ बिललात है । (५८७-२)
जैसे भीख माँगत भिखारी घरि घरि डोलै (५८७-३)
तौ लौ नहीं आवै चैन जौ लौ न अघात है । (५८७-४)
जैसे बिरहनी सौन सगन लगन सोधै (५८७-५)
जौ लौ न भतार भेटै तौ लौ अकुलात है । (५८७-६)
तैसे खोजी खोजै अल कमल कमल गति (५८७-७)
जौ लौ न परम पद् संपट समात है ॥५८७॥ (५८७-८)

पेखत पेखत जैसे रतन पारुखु होत (५८८-१)
सुनत सुनत जैसे पंडित प्रबीन है । (५८८-२)
सूंघत सूंघत सौधा जैसे तउ सुबासी होत (५८८-३)
गावत गावत जैसे गाइिन गुनीन है । (५८८-४)
लिखत लिखत लेख जैसे तउ लेखक होत (५८८-५)
चाखत चाखत जैसे भोगी रसु भीन है । (५८८-६)

चलत चलत जैसे पहुचै ठिकानै जाइ (५८८-७)
खोजत खोजत गुरसबदु लिवलीन है ॥५८८॥ (५८८-८)

जैसे अल कमल कमल बास लेत फिरै (५८९-१)
काहूं इेक पदम कै संपट समात है । (५८९-२)
जैसे पंछी बिरख बिरख फल खात फिरै (५८९-३)
बरहने बिरख बैठे रजनी बिहात है । (५८९-४)
जैसे तौ ब=छएापारी हाटि हाटि कै देखत फिरै (५८९-५)
बिरलै की हाटि बैठ बनज ले जात है । (५८९-६)
तैसे ही गुरसबद रतन खोजत खोजी (५८९-७)
कोटि मधे काहू संग रंग लपटात है ॥५८९॥ (५८९-८)

जैसे दीप दीपत पतंग लोटपोत होत (५९०-१)
कबहूं कै जारा मै परत जर जाइ है । (५९०-२)
जैसे खग दिन प्रति चोग चगि आवै उडि (५९०-३)
काहू दिन फासी फासै बहुर=छएो न आइ है । (५९०-४)
जैसे अल कमल कमल प्रति खोजै नित (५९०-५)
कबहूं कमल दल संपट समाइ है । (५९०-६)
तैसे गुरबानी अवगाहन करत चित (५९०-७)
कबहूं मगन ह=छधै सबद उरझाइ है ॥५९०॥ (५९०-८)

जैसे पोसती सुनत कहत पोसत बुरो । (५९१-१)
ताँके बसि भयो छाड=छएो चाहै पै न छूटई । (५९१-२)
जैसे जूआ खेल बित हार बिलखै जुआरी । (५९१-३)
तऊ पर जुआरन की संगत न टूटई । (५९१-४)
जैसे चोर चोरी जात हृदै सहकत, पुन (५९१-५)
तजत न चोरी जौ लौ सीस ही न फूटई । (५९१-६)
तैसे सभ कहत सुनत माया दुखदाई । (५९१-७)
काहू पै न जीती परै माया जग लूटई ॥५९१॥ (५९१-८)

तरुवरु गिरे पात बहुरो न जोरे जात (५९२-१)
अैसो तात मात सुत भ्रात मोह माया को । (५९२-२)
जैसे बुद्बुदा एरा पेखत बिलाइ जाइ (५९२-३)
अैसो जान त=छएागहु भरोसे भ्रम काया को । (५९२-४)
तृण की अगनि जरि बूझत नबार लागै । (५९२-५)
अैसा आवा औधि जैसे नेहु द्रुम छाया को । (५९२-६)
जमन जीवन अंतकाल के संगाती राचहु । (५९२-७)
सफल औसर जग तब ही तो आया को ॥५९२॥ (५९२-८)

कोऊ हर जोरै, बोवै, कोऊ लुनै कोऊ (५९३-१)
जानीअै न जाइ ताँहि अंत कौन खाइधो । (५९३-२)

कोऊ गड़ै, चिनै कोऊ, कोऊ लीपै, पोचै कोऊ । (५६३-३)
समझ न परै कौन बसै गृह आइधो (५६३-४)
कोऊ चुनै लोड़ै कोउ कोऊ कातै बुनै कोऊ । (५६३-५)
बूझीअै न एढै कौन अंग सै बनाइधो । (५६३-६)
तैसे आपा काछ काछ कामनी सगल बाछै । (५६३-७)
कवन सुहागनि ह=छधै सिहजा समाइधो ॥५६३॥ (५६३-८)

जोई प्रभु भावै ताहि सोवत जगावै जाइ (५६४-१)
जागत बिहावै जाइ ताहि न बुलावई । (५६४-२)
जोई प्रभु भावै ताहि माननि मनावै धाइ । (५६४-३)
सेवक स=छधरूप सेवा करत न भावई । (५६४-४)
जोई प्रभु भावै ताहि रीझकै रिझावै आपा । (५६४-५)
काछि काछि आवै ताहि पग न लगावई । (५६४-६)
जोई प्रभु भावै ताहि सबै बन आवै, ताकी । (५६४-७)
महिमा अपार न कहत बन आवई ॥५६४॥ (५६४-८)

जैसे तौ समुंद बिखै बोहथै बहाइ दीजै । (५६५-१)
कीजै न भरोसो जौ लौ पहुचै न पार कौ । (५६५-२)
जैसे तौ किसान खेत हेतु करि जोतै बोवै । (५६५-३)
मानत कुसल आन पैठे गृह द=छधार कौ । (५६५-४)
जैसे पिर संगम कै होत गर हार नारि । (५६५-५)
करत है प्रीत पेखि सुत के लिलार कौ । (५६५-६)
तैसे उसतति निंदा करीअै न काहू केरी (५६५-७)
जानीअै धौ कैसो दिन आवै अंतकार कौ ॥५६५॥ (५६५-८)

जैसे चूनो खाँड स=छधेत इकसे दिखाई देत । (५६६-१)
पाईअै तौ स=छधाद रस रसना कै चाखीअै । (५६६-२)
जैसे पीत बरन ही हेम अर पीतर ह=छधै (५६६-३)
जानीअै महत पारखद अग्र राखीअै । (५६६-४)
जैसे कऊआ कोकिला है दोनो खग स=छएाम तन (५६६-५)
बूझीअै असुभ सुभ सबद सु भाखीअै । (५६६-६)
तैसे ही असाध साध चिहन कै समान होत । (५६६-७)
करनी करतूत लग लछन कै लाखीअै ॥५६६॥ (५६६-८)

जैसे करपूर लोन इकसे दिखाई देत । (५६७-१)
केसर कसुंभ समसर अरुनाई कै । (५६७-२)
रूपो काँसी दोनो जैसे ऊजल बरन होत (५६७-३)
काजर औ चोआ है समान स=छएामताई कै । (५६७-४)
इंद्राइन फल अंमृत फल पीत सम (५६७-५)
हीरा औ फटक समरूप है दिखाई कै । (५६७-६)
तैसे खल दिस मै असाध साध सम देह (५६७-७)

बूझत बिबेकी जल जुगति समाई कै ॥५९७॥ (५९७-८)

कालर मैं बोइे बीज उपजै न पान धान (५९८-१)
खेत मै डारे सु ताँते अधिक अनाज है । (५९८-२)
कालर सै करत सबार जम सा ऊसु तौ (५९८-३)
पावक प्रसंग तप तेज उपराज है । (५९८-४)
जसत संयुकत ह=छधै मिलत है सीत जल (५९८-५)
अचवत साँति सुख तृखा भ्रम भाज है । (५९८-६)
तैसे आतमा अचेत संगत सुभाव हेत (५९८-७)
सकित सकित गत सिव सिव साज है ॥५९८॥ (५९८-८)

केहरि अहार मास, सुरही अहार घास (५९९-१)
मधुप कमल बास लेत सुख मान ही । (५९९-२)
मीनहि निवास नीर, बालक अधार खीर (५९९-३)
सरपह सखा समीर जीवन कै जान ही । (५९९-४)
चंदहि चाहै चकोर घनहर घटा मोर (५९९-५)
चातृक बूंदनस=छधाँत धरत धिआन ही । (५९९-६)
पंडित बेद बीचारि, लोकन मै लोकाचार । (५९९-७)
माया मोहो मै संसार, ग=छएान गुर ग=छएान ही ॥५९९॥ (५९९-८)

जैसे पीत स=छधेत स=छएाम अरन वरनि रूप (६००-१)
अग्रभागि राखै आँधरो न कछु देख है । (६००-२)
जैसे राग रागनी औ नाद बाद आन गुन (६००-३)
गावत बजावत न बहरो परेख है । (६००-४)
जैसे रस भोग बहु बिंजन परोसै आगै । (६००-५)
बृथावंत जंत नाहि रुचित बिसेख है । (६००-६)
तैसे गुर दरस, बचन, प्रेम नेम निध (६००-७)
महिमा न जानी मोहि अधम अभेख है ॥६००॥ (६००-८)

कवन भकति करि भकतवछल भइे (६०१-१)
पतित पावन भइे कौन पतिताई । (६०१-२)
दीन दुख भंजन भइे सु कौन दीनता कै (६०१-३)
गरब प्रहारी भइे कवन बडाई कै । (६०१-४)
कवन सेवा कै नाथ सेवक सहाई भइे (६०१-५)
असुर संघारण है कौन असुराई कै । (६०१-६)
भगति जुगति अघ दीनता गरब सेवा (६०१-७)
जानौ न बिरद मिलौ कवन कनाई कै ॥६०१॥ (६०१-८)

कौन गुन गाइकै रीझाईअै गुन निधान (६०२-१)
कवन मोहन जग मोहन बिमोहीअै । (६०२-२)
कौन सुख दैकै सुखसागर सरण गहौं (६०२-३)

भूखन कवन चिंतामणि मन मोहीऔ । (६०२-४)
कोटि ब्रहमाँड के नायक की नायका ह=छधै (६०२-५)
कैसे , अंत्रजामी कौन उकत कै बोहीऔ । (६०२-६)
तनु मनु धनु है सरबसु बिस=छध जाँकै बसु (६०२-७)
कैसे बसु आवै जाँकी सोभा लग सोहीऔ ॥६०२॥ (६०२-८)

जैसे जल मिल द्रुम सफल नाना प्रकार । (६०३-१)
चंदन मिलत सब चंदन सुबास है । (६०३-२)
जैसे मिल पावक ढरत पुन सोई धात (६०३-३)
पारस परस रूप कंचन प्रकास है । (६०३-४)
अवर नखत्र बरखत जल जलमई (६०३-५)
स=छधाँतिबूंद सिंध मिल मुकता बिगास है । (६०३-६)
तैसे परविरत औ निविरत जो स=छधभाव दोऊ (६०३-७)
गुर मिल संसारी निरंकारी अभिआसु है ॥६०३॥ (६०३-८)

जैसे बिबिध प्रकार करत सिंगार नारि (६०४-१)
भेटत भतार उर हार न सुहात है । (६०४-२)
बालक अचेत जैसे करत अनेक लीला (६०४-३)
सुरत समार बाल बुधि बिसरात है । (६०४-४)
जैसे पृया संगम सुजस नायका बखानै (६०४-५)
सुन सुन सजनी सकल बिगसात है । (६०४-६)
तैसे खट करम धरम स्रम गयान काज (६०४-७)
गयान भानु उदै उडि करम उेडात है ॥६०४॥ (६०४-८)

जैसे सिमर सिमर पृआ प्रेमरस बिसम होइि (६०५-१)
सोभा देत मोन गहे, मन मुसकात है । (६०५-२)
पूरन अधान परसूत समै रोदत है । (६०५-३)
गुरजन मुदत ह=छधै, ताही लपटात है । (६०५-४)
जैसे मानवती मान त=छएगि कै अमान होइि (६०५-५)
प्रेमरस पाइि चुप हुलसत गात है । (६०५-६)
तैसे गुरमुख प्रेम भगति प्रकास जास (६०५-७)
बोलत ,बैराग ,मोन गहे , बहु सुहात है ॥६०५॥ (६०५-८)

जैसे अंधकार बिखै दिपत दीपक देख । (६०६-१)
अनिक पतंग एतपोत हुइि गुंजार ही । (६०६-२)
जैसे मिसटाँन पान जान कान भाँजन मै । (६०६-३)
राखत ही चीटी लोभ लुभत अपार ही । (६०६-४)
जैसे मृद सौरभ कमल एर धाइि जाइि । (६०६-५)
मधुप समूह सुभ सबद उचारही । (६०६-६)
तैसे ही निधान गुर ग=छएान परवान जामै । (६०६-७)
सगल संसार ता चरन नमसकार ही ॥६०६॥ (६०६-८)

रूप के जो रीझै रूपवंत ही रिझाइ लेहि । (६०७-१)
बल कै जु मिलै बलवंत गहि राखई । (६०७-२)
दरब कै जो पाईअै दरबेस=छधर लेजाहि ताहि । (६०७-३)
कबिता कै पाईअै कबीस=छधर अभिलाख ही । (६०७-४)
जोग कै जो पाईअै जोगी जटा मै दुराइ राखै (६०७-५)
भोग कै जो पाईअै भोग भोगी रस चाख ही । (६०७-६)
निग्रह जतन पान परत न प्रान मान । (६०७-७)
प्रान पति इेक गुर सबदि सुभाख ही ॥६०७॥ (६०७-८)

जैसे फल ते बिरख बिरख ते होत फल । (६०८-१)
अद्‌भुत गति कछु कहत न आवै जी । (६०८-२)
जैसे बास बावन मै बावन है बास बिखै । (६०८-३)
बिसम चरित्र कोऊ मरम न पावै जी । (६०८-४)
कास मै अगनि अर अगनि मै कास जैसे । (६०८-५)
अति असचरयमय कौतक कहावै जी । (६०८-६)
सतिगुर महि सबद सबद महि सतिगुर है । (६०८-७)
निगुन सगुन ग=छएान ध=छएान समझावै जी ॥६०८॥ (६०८-८)

जैसे तिल बास बास लीजीअत कुसम ते । (६०९-१)
ताँते होत है फुलेल जतन कै जानीअै । (६०९-२)
जैसे तौ अउटाइ दूध जामन जमाइ मथ । (६०९-३)
संजम सहत घ्रित प्रगटाइ मानीअै । (६०९-४)
जैसे कूआ खोद करि बसुधा धसाइ कोठी । (६०९-५)
लाज कोउ बहाइ डोल काढि जल आनीअै । (६०९-६)
गुर उपदेस तैसे भावनी भकत भाइ । (६०९-७)
घट घट पूरन ब्रहम पहिचानीअै ॥६०९॥ (६०९-८)

जैसे धर धनुख चलाईअत बान तान । (६१०-१)
चल=छएे जाइ तितही कउ जितही चलाईअै । (६१०-२)
जैसे अस=छध चाबुक लगाइ तन तेज करि । (६१०-३)
दोर=छएे जाइ आतुर हुइ हित ही दउराईअै । (६१०-४)
जैसी दासी नाइका कै अग्रभाग ठाँढी रहै । (६१०-५)
धावै तितही ताहि जितही पठाईअै । (६१०-६)
तैसे प्रानी किरत संजोग लग भ्रमै भूम । (६१०-७)
जत जत खान पान तही जाइ खाईअै ॥६१०॥ (६१०-८)

जैसे खर बोल सुन सगुनीआ मान लेत (६११-१)
गुन अवगुन ताँको कछू न बिचारई । (६११-२)
जैसे मृग नाद सुनि सहै सनमुख बान (६११-३)
प्रान देत बधिक बिरदु न समारही । (६११-४)

सुनत जूझाऊ जैसे जूझै जोधा जुध समै (६११-५)
ढाडी को न बरन चिहन उर धारही । (६११-६)
तैसे गुरसबद सुनाइ गाइ दिख ठगो (६११-७)
भेखधारी जानि मोहि मारि न बिडारही ॥६११॥ (६११-८)

रिध,सिध ,निध, सुधा, पारस, कलपतरु (६१२-१)
कामधेनु,चिंतामनि, लछमी स=छधमेव की । (६१२-२)
चतुर पदारथ, सुभाव, सील रूप, गुन (६१२-३)
भुकत, जुकत, मत अलख अभेव की । (६१२-४)
ज=छधाला जोति, जैजैकार, कीरति, प्रताप, छबि (६१२-५)
तेज, तप, काँति, बिभै सभिा साध सेव की । (६१२-६)
अनंद, सहज सुख सकल, प्रकास कोटि (६१२-७)
किंचत कटाछ क्रिपा जाँहि गुरदेव की ॥६१२॥ (६१२-८)

गुर उपदेसि प्रात समै इसनान करि (६१३-१)
जिहवा जपत गुरमंत्र जैसे जानही । (६१३-२)
तिलक लिलार, पाइि परत परसपर (६१३-३)
सबद सुनाइि गाइि सुन उनमान ही । (६१३-४)
गुरमतिभजन तजन दुरमत कहै (६१३-५)
ग=छएान धि=छएान गुरसिख पंच परवान ही । (६१३-६)
देखत सुनत औ कहत सब कोऊ भलो (६१३-७)
रहत अंतरिगत सतिगुर मानही ॥६१३॥ (६१३-८)

जैसे धोभी साबन लगाइि पीटै पाथर सै (६१४-१)
निरमल करत है बसन मलीन कउ । (६१४-२)
जैसे तउ सुनार बारंबार गार गार ढार । (६१४-३)
करत असुध सुध कंचन कुलीन कउ । (६१४-४)
जैसे तउ पवन झकझोरत बिरख मिल (६१४-५)
मलय गंध करत है चंदन प्रबीन कउ । (६१४-६)
तैसे गुर सिखन दिखाइिकै बृथा बिबेक (६१४-७)
माया मल काटिकरै निज पद चीन कउ ॥६१४॥ (६१४-८)

पातर मै जैसे बहु बिंजन परोसीअत (६१५-१)
भोजन कै डारीअत पावै नाहि ठाम को । (६१५-२)
जैसे ही तमोल रस रसना रसाइि खाइि (६१५-३)
डारीअै उगार नाहि रहै आढ दाम को । (६१५-४)
फूलन को हार उर धार बास लीजै जैसे । (६१५-५)
पाछै डार दीजै कहै है न काहू काम को । (६१५-६)
जैसे केस नख थान भ्रिसट न सुहात काहू (६१५-७)
पृय बिछुरत सोई सूत भयो बाम को ॥६१५॥ (६१५-८)

जैसे अस=छधनी सुतह छाडि अंधकारि मध । (६१६-१)
जाति, पुन आवत है सुनत सनेह कै । (६१६-२)
जैसे निंद्रावंत सुपनंतर दिसंतर मै । (६१६-३)
बोलत घटंतर चैतन्न गति गेह कै । (६१६-४)
जैसे तउ परेवा तृया त=छएाग हुइ अकासचारी । (६१६-५)
देखि परकर तन बूमद मेह कै । (६१६-६)
तैसे मन बच क्रम भगत जगत बिखै । (६१६-७)
देख कै सनेही होत बिसन बिदेह कै ॥६१६॥ (६१६-८)

जैसे जोधा जुध समै ससत्र सनाहि साजि (६१७-१)
लोभ मोह तयागि बीर खेत बिखै जात है । (६१७-२)
सुनत जुझाऊ घोर मोर गति बिगसात । (६१७-३)
पेखत सुभट घट अंग न समात है । (६१७-४)
करत संग्राम स=छधाम काम लागि जूझ मरै । (६१७-५)
कै तउ रनजीत बीती कहत जु गात है । (६१७-६)
तैसे ही भगत मत भेटत जगत पति (६१७-७)
मोनि औ सबद गद गद मुसकात है ॥६१७॥ (६१७-८)

जैसे तउ नरिंद चढ्रि बैठत प्रयंक पर (६१८-१)
चारो खूट सै दरब देत आनि आनि कै । (६१८-२)
काहू कउ रिसाइ आगया करत जउ मारबे की (६१८-३)
तातकाल मारि डारीअत प्रान हान कै । (६१८-४)
काहू कउ प्रसन्न ह=छधै दिखावत है लाख कोटि (६१८-५)
तुरत भंडारी गन देति आन मानिकै । (६१८-६)
तैसे देत लेत हेत नेत कै ब्रहमगयानी (६१८-७)
लेप नलिपत है ब्रहमगयान सयान कै ॥६१८॥ (६१८-८)

अनभै भवन प्रेम भगति मुकति द=छधार (६१९-१)
चारो बसु, चारो कुंट ,राजत राजान है । (६१९-२)
जाग्रत स=छधपन, दिन रैन, उठ बैठ चलि (६१९-३)
सिमरन , स्रवन , सुक्रित परवान है । (६१९-४)
जोई जोई आवै सोई भावै पावै नामु निध (६१९-५)
भगतिवछल मानो बाजत नीसान है । (६१९-६)
जीवनमुकति साम राज सुख भोगवत (६१९-७)
अदभुत छबि अति ही बिराजमान है ॥६१९॥ (६१९-८)

लोचन बिलोक रूप रंग अंग अंग छबि (६२०-१)
सहज बिनोद मोद कउतक दिखावही । (६२०-२)
स्रवन सुजस रस रसिक रसाल गुन (६२०-३)
सुन सुन सुरति संदेस पहुचावही । (६२०-४)
रसना सबदु राग नाद स=छधादु बिनती कै (६२०-५)

नासका सुगंधि सनबंध समझावही । (६२०-६)
सरिता अनेक मानो संगम समुंद्र गति (६२०-७)
रिदै पृय प्रेम , नेमु तृपति न पावही ॥६२०॥ (६२०-८)

लोचन क्रिपन अवलोकत अनूप रूप (६२१-१)
परम निधान जान तृपति न आई है । (६२१-२)
स्रवन दारिद्री मुन अंमृत बचन पृय (६२१-३)
अचवति सुरत पिआस न मिटाई है । (६२१-४)
रसना रटत गुन गुरू अनग्रीव गूड़ (६२१-५)
चातृक जुगति गति मति न अघाई है । (६२१-६)
पेखत सुनति सिमरति बिसमाद रसि (६२१-७)
रसिक प्रगासु प्रेम तृसना बढाई है ॥६२१॥ (६२१-८)

दृगन मै देखत हौ दृग हू जो देखयो चाहै (६२२-१)
परम अनूप रूप सुंदर दिखाईऔ । (६२२-२)
स्रवन मै सुनत जु स्रवन हूं सुनयो चाहै (६२२-३)
अनहदसबद प्रसन्न हुइ सुनाईऔ । (६२२-४)
रसना मै रटत जु रसना हूं रसे चाहै (६२२-५)
प्रेमरस अंमृत चुआइकै चखाईऔ । (६२२-६)
मन महि बसहु मलि मया कीजै महाराज (६२२-७)
धावत बरज उनमन लिव लाईऔ ॥६२२॥ (६२२-८)

निंद्रा मै कहाधउ जाइ खुधया मै कहाधउ खाइ (६२३-१)
तृखा मै कहा जराइ कहा जल पान है । (६२३-२)
हसन रोवन कहा , कहा पुन चिंता चाउ (६२३-३)
कहाँ भय , भाउ, भीर , कहाधउ भयान है । (६२३-४)
हिचकी , डकार औ खंघार, जंमहाई, छीक (६२३-५)
अपसर गात, खुजलात कहा आन है । (६२३-६)
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहौमेव टेव कहाँ (६२३-७)
सत औ संतोख दया धरम न जान है ॥६२३॥ (६२३-८)

पंचतत मेल पिंड लोक बेद कहैं ,पाँचो (६२४-१)
तत कहो काहे भाँति रचत भे आदि ही । (६२४-२)
काहे से धरनधारी धीरज कैसे बिथारी (६२४-३)
काहे सयो गड़यो अकाश ठाढो बिन पाद ही । (६२४-४)
काहे सौं सलल साजे, सीतल पवन बाजे (६२४-५)
अगन तपत काहे अति बिसमाद ही । (६२४-६)
कारन करन देव अलख अभेव नाथ (६२४-७)
उन की भी एही जानै बकनो है बाद जी ॥६२४॥ (६२४-८)

जैसे जल सिंच सिंच कासट समथ कीने (६२५-१)

जल सनबंध पुन बोहिथा बिस=छधास है । (६२५-२)
पवन प्रसंग सोई कासट स्रीखंड होत (६२५-३)
मलयागिर बासना सु मंड परगास है । (६२५-४)
पावक परस भसमी करत देह गेह । (६२५-५)
मित्र सत्र सगल संसार ही बिनास है । (६२५-६)
तैसे आतमा तृगुन तृबिध सकल सिव (६२५-७)
साधसंग भेटत ही साध को अभयास है ॥६२५॥ (६२५-८)

कवन अंजन करि लोचन बिलोकीअत । (६२६-१)
कवन कुंडल करि स्रवन सुनीजीअै । (६२६-२)
कवन तंमोल करि रसना सुजसु रसै । (६२६-३)
कोन करि कंकन नमसकार कीजीअै । (६२६-४)
कवन कुसमहार करि उर धारीअत । (६२६-५)
कौन अंगीआ सु करि अंकमाल दीजीअै । (६२६-६)
कउन हीर चीर लपटाइकै लपेट लीजै । (६२६-७)
कवन संजोग पृया प्रेमरसु पीजीअै ॥६२६॥ (६२६-८)

गवरि महेस औ गनेस सै सहसरसु । (६२७-१)
पूजा कर बेनती बखान=छणे हित चीत ह=छधै । (६२७-२)
पंडित जोतिक सोधि सगुन लगन ग्रह । (६२७-३)
सुभा दिन साहा लिख देहु बेद नीत ह=छधै । (६२७-४)
सगल कुटंब सखी मंगल गावहु मिल (६२७-५)
चाड़हु तिलक तेल माथे रस रीति ह=छधै । (६२७-६)
बेदी रचि गाँठ जोर दीजीअै असीस मोहि (६२७-७)
सिहजा संजोग मै प्रतीत प्रीत रीत ह=छधै ॥६२७॥ (६२७-८)

सीस गुर , चरन करन उपदेस दीख=छएा (६२८-१)
लोचन दरस अवलोक सुख पाईअै । (६२८-२)
रसना सबद गुर हसत सेवा डंडौत । (६२८-३)
रिदै गुर ग=छएान उनमन लिव लाईअै । (६२८-४)
चरन गवन साधसंगति परक्रमा लउ । (६२८-५)
दासन दासान मति निंम्रता समाईअै । (६२८-६)
संत रेन मजन, भगति भाउ भोजन दै (६२८-७)
स्रीगुर क्रिपा कै प्रेम पैज प्रगटाईअै ॥६२८॥ (६२८-८)

गिआन मेघ बरखा स्रबत्र बरखै समान । (६२९-१)
ऊचो तज नीचै बल गवन कै जात है । (६२९-२)
तीरथ परब जैसे जात है जगत चल (६२९-३)
जात्रा हेत देत दान अति बिगसात है । (६२९-४)
जैसे नृप सोभत है बैठिए सिंघासन पै । (६२९-५)
चहूं एर ते दरब आव दिन रात है । (६२९-६)

तैसे निहकाम धाम साध है संसार बिखै (६२९-७)
असन बसन चल आवत जुगात है ॥६२९॥ (६२९-८)

जैसे बान धनुख सहित ह=छधै निज बस (६३०-१)
छूटति न आवै फुन जतन सै हाथ जी । (६३०-२)
जैसे बाघ बंधसाला बिखै बाध=छएे रहै, पुन (६३०-३)
खुलै तो न आवै बस , बसहि न साथ जी । (६३०-४)
जैसे दीप दिपत न जानीऐ भवन बिखै (६३०-५)
दावानल भइे न दुराइे दुरै नाथ जी । (६३०-६)
तैसे मुख मध बाणी बसत न कोऊ लखै (६३०-७)
बोलीऐ बिचार, गुरमति, गुन गाथ जी ॥६३०॥ (६३०-८)

जैसे माला मेर पोईअत सभ ऊपर कै । (६३१-१)
सिमरन संख=छएा मै न आवत बडाई कै । (६३१-२)
जैसे बिरखन बिखै पेखीऐ सेबल ऊचो (६३१-३)
निहफल सोऊ अति अधिकारी कै । (६३१-४)
जैसे चील पंछीन मै उडत अकाशचारी । (६३१-५)
हेरे मृत पिंजरन ऊचै मतु पाई कै । (६३१-६)
जैसे गाइिबो बजाइिबो सुनाइिबो न कछू तैसे । (६३१-७)
गुर उपदेस बिना ध्रिग चतुराई कै ॥६३१॥ (६३१-८)

जैसे पाँचो तत बिखै बसुधा नवन मन । (६३२-१)
ता मै न उतपत हुइि समात सभ ताही मै । (६३२-२)
जैसे पाँचो आँगुरी मै सूखम कनुंग्रीआ है (६३२-३)
कंचन खचत नग सोभत है वाही मै । (६३२-४)
जैसे नीच जोन गनीअत अति माखी क्रिम (६३२-५)
हीर चीर मधु उपजत सुख जाही मै । (६३२-६)
तैसे रविदास नामा बिदर कबीर भइे (६३२-७)
हीन जात ऊच पद पाइे सभ काही मै ॥६३२॥ (६३२-८)

जैसे रोग रोगी को दिखाईऐ न बैद प्रति (६३३-१)
बिन उपचार छिन छिन हुइि असाध जी । (६३३-२)
जैसे रिन दिन दिन उदम अदिआउ बिन (६३३-३)
मूल औ बिआज बढै, उपजै बिआध जी । (६३३-४)
जैसे सत्र सासना संग्रामु करि साधे बिन (६३३-५)
पल पल प्रबल हुइि करत उपाध जी । (६३३-६)
ज=छएौं ज=छएौं भीजै कामरी त=छएौं त=छएौं भारी होत जात । (६३३-७)
बिन सतिगुर उर बसै अपराध जी ॥६३३॥ (६३३-८)

जैसे केला बसत बबूर कै निकट, ताँहि (६३४-१)
सालत हैं सूरैं , आपा सकै न बचाइि जी । (६३४-२)

जैसे पिंजरी मै सूआ पड़त गाथा अनेक (६३४-३)
दिन प्रति हेरति बिलाई अंति खाइि जी । (६३४-४)
जैसे जल अंतर मुदत मन होत मीन (६३४-५)
मास लपटाइि लेत बनछी लगाइि जी । (६३४-६)
बिन सतिगुर साध मिलत असाध संगि (६३४-७)
अंग अंग दुरमति गति प्रगटाइि जी ॥६३४॥ (६३४-८)

कोटि परकार नार साजै जउ सिंगार चारु (६३५-१)
बिनु करतार भेटै सुत न खिलाइि है । (६३५-२)
सिंचीऔ सलिल निस बासुर बिरख मूल (६३५-३)
फल न बसंत बिन तासु प्रगटाइि है । (६३५-४)
सावन समै किसान खेत जोत बीज बोवै (६३५-५)
बरखा बिहून कत नाज निपजाइि है । (६३५-६)
अनिक प्रकार भेख धारि प्रानी भ्रमे भूम (६३५-७)
बिन गुर उरि ग=छएान दीप न जगाइि है ॥६३५॥ (६३५-८)

जैसे नीर खीर अन्न भोजन खुवाइि अंति (६३६-१)
गरो काटि मारत है अजा स=छधन कउ । (६३६-२)
जैसे बहु भार डारीअत लघु नौका माहि (६३६-३)
बूडत है माझधार पार न गवन कउ । (६३६-४)
जैसे बुर नारि धारि भरन सिंगार तनि (६३६-५)
आपि आमै अरपत चिंता कै भवन कउ । (६३६-६)
तैसे ही अधरम करम कै अधरम नर (६३६-७)
मरत अकाल जमलोकहि रवन कउ ॥६३६॥ (६३६-८)

जैसे पाकसाला बाला बिंजन अनेक रचै (६३७-१)
छुअत अपावन छिनक छोत लाग है । (६३७-२)
जैसे तन साजत सिंगार नारि आनंद कै (६३७-३)
पुहपवंती है=छध पृया सिहजा तिआग है । (६३७-४)
जैसे ग्रभधार नारि जतन करत नित (६३७-५)
मल मै गरभछेद खेद निहभाग है । (६३७-६)
तैसे सील संजम जनम परजंत कीजै (६३७-७)
तनक ही पाप कीड़े तूल मै बजाग है ॥६३७॥ (६३७-८)

चीकने कलस पर जैसे ना टिकत बूंद (६३८-१)
कालर मैं परे नाज निपजै न खेत जी । (६३८-२)
जैसे धरि पर तरु सेबल अफल अरु (६३८-३)
बिखिआ बिरख फले जगु दुख देत जी । (६३८-४)
चंदन सुबास बाँस बास बास बासीऔ ना (६३८-५)
पवन गवन मल मूतता समेत जी । (६३८-६)
गुर उपदेस परवेस न मो रिदै भिदे (६३८-७)

जैसे मानो स=छधाँतिबूंद अहि मुख लेत जी ॥६३८॥ (६३८-८)

चंदन समीप बसि बाँस महिमाँ न जानी (६३६-१)
आन द्रुम दूर भइे बासना कै बोहे है । (६३६-२)
दादर सरोवर मैं जानै न कमल गति (६३६-३)
मकरंद करि मधकर ही बिमोहे है । (६३६-४)
सुरसरी बिखै बग जान=छएे न मरम कछू (६३६-५)
आवत है जात्री जंत्र जात्रा हेत सोहे है । (६३६-६)
निकट बसत मम गुर उपदेस हीन (६३६-७)
दूर ही दिसंतर उर अंतर लै पोहे है ॥६३६॥ (६३६-८)

नाहिन अनूप रूप चितवै किउ चिंतामणि (६४०-१)
लोने है न लोइिन जो लालन बिलोकीअै । (६४०-२)
रसना रसीली नाहि बेनती बखानउ कैसे । (६४०-३)
सुरति न स्रवनन बचन मधोकीअै । (६४०-४)
अंग अंगहीन दीन कैसे बर माल करउ (६४०-५)
मसतक नाहि भाग पृय पग धोकीअै । (६४०-६)
सेवक स=छधभाव नाहि , पहुच न सकउ सेव (६४०-७)
नाहिन प्रतीत प्रभ प्रभता समोकीअै ॥६४०॥ (६४०-८)

बेस=छधा के सिंगार बिभचार को न पारावार । (६४१-१)
बिन भरतार नारि काकी कै बुलाईअै । (६४१-२)
बग सेत गात जीव घात करि खात केते । (६४१-३)
मोन गहे, प=छएाना धरे, जुगत न पाईअै । (६४१-४)
डाँड की डंडाई बुरवाई न कहित आवै । (६४१-५)
अति ही ढिठाई, सुकुचत न लजाईअै । (६४१-६)
तैसे पर तन धन दूखना तृदेख मम । (६४१-७)
पतित अनेक इेक रोम न पुजाईअै ॥६४१॥ (६४१-८)

जाकै नाइिका अनेक इेक से अधिक इेक । (६४२-१)
पूरन सुहाग भाग सउतै सम धाम है । (६४२-२)
मानन हुइि मान भंग बिछुर बिदेस रही । (६४२-३)
बिरह बियोग लग बिरहनी भाम है । (६४२-४)
सिथल समान त्रीया सके न रिझाइि पृय (६४२-५)
दयो है दुहाग वै दुहागन सकाम है । (६४२-६)
लोचन, स्रवन, जीह कर अंग अंगहीन । (६४२-७)
परिसयो न पेख=छएो सुन=छएो मेरो कहा नाम है ॥६४२॥ (६४२-८)

जैसे जार चोर एर हेरति न आहि कोऊ (६४३-१)
चोर जार जानत सकलभूत हेरही । (६४३-२)
जैसे दिन समै आवागवन भवन बिखै (६४३-३)

ताही गृह पैसत संकात है अंधेर ही । (६४३-४)
जैसे धरमातमा कउ देखीऐ धरमराइ । (६४३-५)
पापी कउ भइआन जम त्राह त्राह टेरही । (६४३-६)
तैसे निरवैर सतिगुर दरपन रूप । (६४३-७)
तैसे ही दिखावै मुख जैसे जैसे फेरही ॥६४३॥ (६४३-८)

जैसे दरपन सूधो सुध मुख देखीअत । (६४४-१)
उलट कै देखै मुख देखीऐ भइआन सो । (६४४-२)
मधुर बचन ताही रसना सै प=छएारो लागै । (६४४-३)
कौरक सबद सुन लागै उर बान सो । (६४४-४)
जैसे दानो खात गात पुश मिश स=छधाद मुख । (६४४-५)
पोसत कै पीड़े दुख ब=छएापत , मसान सो । (६४४-६)
तैसे भ्रित निंदक स=छधभाव चकई चकोर । (६४४-७)
सतिगुर समत सहनसील भानु सो ॥६४४॥ (६४४-८)

जैसे तउ पपीहा पृय पृय टेर हेरे बूंद (६४५-१)
वैसे पतिब्रता पतिब्रत प्रतिपाल है । (६४५-२)
जैसे दीप दिपत पतंग पेखि ज=छधारा जरै=छध (६४५-३)
तैसे पृआ प्रेम नेम प्रेमनी समार है । (६४५-४)
जल सै निकस जैसे मीन मर जात तात (६४५-५)
बिरह बियोग बिरहनी बपुहार है । (६४५-६)
बिरहनी प्रेम नेम पतिब्रता कै कहावै (६४५-७)
करनी कै ऐसी कोटि मधे कोऊ नार है ॥६४५॥ (६४५-८)

अनिक अनूप रूप रूप समसर नाँहि (६४६-१)
अंमृत कोटानि कोटि मधुर बचन सर । (६४६-२)
धरम अरथ कपटि कामना कटाछ पर (६४६-३)
वार डारउ बिबिध मुकत मंदहासु पर । (६४६-४)
स=छधरग अनंत कोट किंचत समागम कै (६४६-५)
संगम समूह सुख सागर न तुल धर । (६४६-६)
प्रेमरस को प्रताप सर कछू पूजै नाहि (६४६-७)
तन मन धन सरबस बलिहार कर ॥६४६॥ (६४६-८)

अछल अछेद प्रभु जाकै बस बिस=छध बल (६४७-१)
तै जु रस बस कीड़े कवन प्रकार कै । (६४७-२)
सिव सनकादि ब्रहमादिक न ध=छएान पावै (६४७-३)
तेरो ध=छएान धारै आली कवन सिंगार कै । (६४७-४)
निगम असंख सेख जंपत है जाको जसु (६४७-५)
तेरो जस गावत कवन उपकार कै । (६४७-६)
सुर नर नाथ जाहि खोजत न खोज पावै (६४७-७)
खोजत फिरह तोहि कवन पिआर कै ॥६४७॥ (६४७-८)

कैसे कै अगह गहिए, कैसे कै अछल छलिए । (६४८-१)
कैसे कै अभेद बेद्यो अलख लखायो है । (६४८-२)
कैसे कै अपेख पेखयो , कैसे कै अगड़ गड़ियो (६४८-३)
कैसे कै अपयो पीए अजर जरा=छएो है । (६४८-४)
कैसे कै अजाप जप=छएो , कैसे कै अथाप थपयो (६४८-५)
परसिए अपरस, अगम सुगमायो है । (६४८-६)
अद्भुत गत असचरज बिसम अति । (६४८-७)
कैसे कै अपार निराधार ठहिराइिए है ॥६४८॥ (६४८-८)

कहिधो कहाकू रमा रंम पूरब जनम बिखै । (६४९-१)
अैसी कौन तपसिआ कठन तोहि कीनी है । (६४९-२)
जाते गुन रूप औ करम कै सकल कला । (६४९-३)
स्रेसट ह=छधै सरब नाइका की छबि छीनी है । (६४९-४)
जगत की जीवन जगत पत चिंतामन । (६४९-५)
मुख मुसकाइि चितवत हिर लीनी है । (६४९-६)
कोट ब्रहमंड के नायक की नायका भई । (६४९-७)
सकल भवन की सृया तुमहि दीनी है ॥६४९॥ (६४९-८)

रूप कोटि रूप पर , सोभा पर कोटि सोभा (६५०-१)
चतुराई कोटि चतुराई पर वारीअै । (६५०-२)
ग=छएान गुन कोट गुन ग=छएान पर वार डारै (६५०-३)
कोटि भाग भाग पर धरि बलिहारीअै । (६५०-४)
सील सुभ लछन कोटान सील लछन कै (६५०-५)
लजा कोट लजा कै लजाइिमान मारीअै । (६५०-६)
प्रेमन पतिब्रता हूं प्रेम अउ पतिब्रत कै (६५०-७)
जाकउ नाथ किंचत कटाछ कै निहारीअै ॥६५०॥ (६५०-८)

कोटन कोटानि सुख पुजै न समानि सुख । (६५१-१)
आनंद कोटानि तुल आनंद न आवही । (६५१-२)
सहजि कोटानि कोटि पुजै न सहज सर । (६५१-३)
मंगल कोटानि सम मंगल न पावही । (६५१-४)
कोटन कोटान परताप न प्रताप सर । (६५१-५)
कोटन कोटान छबि छबि न पुजावही । (६५१-६)
अरथ धरम काम मोख कोटनि ही सम नाहि (६५१-७)
अउसर अभीच नाह सिहज बुलावही ॥६५१॥ (६५१-८)

सफल जनम, धन्न आज को दिवस रैनि । (६५२-१)
पहर, महूरत, घरी अउ पल पाइे हैं । (६५२-२)
सफल सिंगार चार सिहजा संजोग भोग । (६५२-३)
आँगन मंदर अति सुंदर सुहाइे हैं । (६५२-४)

जगमग जोति सोभा कीरति प्रताप छबि (६५२-५)
आनद सहजि सुख सागर बढाइे हैं । (६५२-६)
अरथ धरम काम मोख निहकाम नामु (६५२-७)
प्रेम रस रसिक ह=छ्धै लाल मेरे आइे हैं ॥६५२॥ (६५२-८)

निस न घटै, न लटै ससिआर दीपजोति (६५३-१)
कुसम बास हूं न मिटे औ सु टेव सेव की । (६५३-२)
सहज कथा न घटै, स्रवन सुरत मत । (६५३-३)
रसना परस रस रसिक समेव की । (६५३-४)
निंदा न परै अर करै न आरस प्रवेस । (६५३-५)
रिदै, बरीआ संजोग अलख अभेव की । (६५३-६)
चाउ चितु चउगुनो बढै, प्रबल प्रेम नेम । (६५३-७)
दया दस गुनी उपजै दयाल देव की ॥६५३॥ (६५३-८)

निमख निमख निस निस परमान होइि (६५४-१)
पल पल मास परयंत ह=छ्धै बिथारी है । (६५४-२)
बरख बरख परयंत घटिका बिहाइि । (६५४-३)
जुग जुग सम जाम जामनी पिआरी है । (६५४-४)
कला कला कोटि गुन जगमग जोति ससि (६५४-५)
प्रेमरस प्रबल प्रताप अधिकारी है । (६५४-६)
मन बच क्रम पृया सेवा सनमुख रहों । (६५४-७)
आरसु न आवै निंद्रा आज मेरी बारी है ॥६५४॥ (६५४-८)

जैसीअै सरद निस, तैसे ई पूरन ससि । (६५५-१)
वैसे ई कुसम दल सिहजा सुवारी है । (६५५-२)
जैसी इे जोबन बैस, तैसे ई अनूप रूप । (६५५-३)
वैसे ई सिंगार चारु गुन अधिकारी है । (६५५-४)
जैसे ई छबीलै नैन तैसे ई रसीले बैन । (६५५-५)
सोभत परसपर महिमा अपारी है । (६५५-६)
जैसे ई प्रबीन पृय प=छ्णारो प्रेम रसिक हैं (६५५-७)
वैसे ई बचित्र अति प्रेमनी पिआरी है ॥६५५॥ (६५५-८)

जा दिन जगत मन टहिल कही रिसाइि (६५६-१)
ग=छ्णान ध=छ्णान कोट जोग जग न समान है । (६५६-२)
जा दिन भई पनिहारी जगन नाथ जी की (६५६-३)
ता सम न छत्रधारी कोटन कोटान है । (६५६-४)
जा दिन पिसनहारी भई जगजीवन की (६५६-५)
अरथ धरम काम मोख दासन दासान है । (६५६-६)
छिरकारी पनिहारी पीसनकारी को जो सुख (६५६-७)
प्रेमनी पिआरी को अकथ उनमान है ॥६५६॥ (६५६-८)

घरी घरी टेरि घरीआर सुनाडि संदेसो (६५७-१)
पहिर पहिर पुन पुन समझाइि है । (६५७-२)
जैसे जैसे जल भरि भरि बेली बूड़त है । (६५७-३)
पूरन हुइ पापन की नावहि हराइि है । (६५७-४)
चहूं एर सोर कै पाहरूआ पुकार हारे (६५७-५)
चारो जाम सोवते अचेत न लजाइि है । (६५७-६)
तमचुर सबद सुनत ही उघार आँखै (६५७-७)
बिन पृय प्रेमरस पाछै पछुताइि है ॥६५७॥ (६५७-८)

मजन कै चीर चार, अंजन, तमेल रस (६५८-१)
अभरन सिंगार साज सिहजा बिछाई है । (६५८-२)
कुसम सुगंधि अर मंदर सुंदर माँझ (६५८-३)
दीपक दिपत जगमग जोत छाई है । (६५८-४)
सोधत सोधत सउन लगन मनाइि मन (६५८-५)
बाँछत बिधान चिरकार बारी आई है । (६५८-६)
अउसर अभीच नीच निंद्रा मै सोवत खोइे (६५८-७)
नैन उघरत अंत पाछै पछुताई है ॥६५८॥ (६५८-८)

कर अंजुल जल जोबन प्रवेसु आली (६५९-१)
मान तजि प्रानपति पति रति मानीअै । (६५९-२)
गंधरब नगर गत रजनी बिहात जात (६५९-३)
औसुर अभीच अति दुलभ कै जानीअै । (६५९-४)
सिहजा कुसम कुमलात मुरझात पुन (६५९-५)
पुन पछुतात समो आवत न आनीअै । (६५९-६)
सोई बर नारि पृय प=छएार अधिकारी प=छएारी (६५९-७)
समझ सिआनी तोसो बेनती बखानीअै ॥६५९॥ (६५९-८)

मानन न कीजै मान , बदो न तेरो सिआन (६६०-१)
मेरो कह=छएो मान जान औसुर अभीच को । (६६०-२)
पृया की अनेक प=छएारी चिरंकाल आई बारी (६६०-३)
लेहु न सुहाग, संग छाडि हठ नीच को । (६६०-४)
रजनी बिहात जात , जोबन सिंगार गात (६६०-५)
खेलहु न प्रेमरस मोह सुख बीच को । (६६०-६)
अबकै न भेटे नाथ, बहुरियो न आवै हाथ (६६०-७)
बिरहा बिहावै बलि बडो भाई मीच को ॥६६०॥ (६६०-८)

जउ लउ दीप जोत होत नाहित मलीन आली (६६१-१)
जउ लउ नाँहि सिहजा कुसम कुमलात है । (६६१-२)
जउ लउ न कमलन प्रफुलत उडत अल (६६१-३)
बिरख बिह्गगम न जउ लउ चुहचुहात है । (६६१-४)
जउ लउ भासकर को प्रकास न अकास बिखै । (६६१-५)

तमचुर संख नाद् सबद् न प्रात है । (६६१-६)
तउ लउ काम केल कामना सकूल पूरन कै । (६६१-७)
होइि निहकाम पृय प्रेम नेम घात है ॥६६१॥ (६६१-८)

जोई मिलै आपा खोइि सोई तउ नायका होइि (६६२-१)
मान कीड़े मानमती पाईऐ न मान जी । (६६२-२)
जैसे घनहर बरसै सरबतर सम (६६२-३)
उचै न चड़त जल बसत नीचान जी । (६६२-४)
चंद्न समीप जैसे बूड=छएो है बढाई बाँस । (६६२-५)
आस पास बिरख सुबास परवान जी । (६६२-६)
क्रिपा सिंध पृय तीय होइि मरजीवा गति । (६६२-७)
पावत परमगति सरब निधान जी ॥६६२॥ (६६२-८)

सिहजा समै अग=छएान मान कै रसाड़े नाहि । (६६३-१)
तनक ही मै रिसाइि उत को सिधार हैं । (६६३-२)
पाछै पछताइि हाइि हाइि कर कर मीज (६६३-३)
मूंड धुन धुन कोटि जनम धिकारे हैं । (६६३-४)
औसर न पावों, बिललाउ दीन दुखत ह=छधै (६६३-५)
बिरह बियोग सोग आतम संघारे हैं । (६६३-६)
परउपकार कीजै, लालन मनाइि दीजै । (६६३-७)
तो पर अनंत सरबंस बलिहारै हैं ॥६६३॥ (६६३-८)

प्रेमरसु अउसुर अग=छएान मै न आग=छएा मानी । (६६४-१)
मान कै मानन अपनोई मान खोयो है । (६६४-२)
ताँते रिस मान प्राननाथ हूं जु मानी भड़े (६६४-३)
मानत न मेरे मान आनि दुख रोइिए है । (६६४-४)
लोक बेद् ग=छएान द्त भगत प्रधान ताते । (६६४-५)
लुनत सहस गुनो जैसे बीज बोयो है । (६६४-६)
दासन दासान गति बेनती कै पाइि लागउ । (६६४-७)
है कोऊ मनाइि दै सगल जग जोयो है ॥६६४॥ (६६४-८)

फरकत लोचन अधर पुजा, तापै तन । (६६५-१)
मन मै अउसेर कब लाल गृह आवई । (६६५-२)
नैनन सै नैन अर बैनन से बैन मिलै । (६६५-३)
रैन समै चैन को सिहजासन बुलावही । (६६५-४)
कर गहि कर उर उर सै लगाइि पुन (६६५-५)
अंक अंकमाल करि सहिज समावही । (६६५-६)
प्रेमरस अंमृत पीआइि तृपताइि आली । (६६५-७)
दया कै दयाल देव कामना पुजावही ॥६६५॥ (६६५-८)

लोचन अनूप रूप देखि मुरछात भड़े (६६६-१)

सेई मुख बहिरिए बिलोक ध=छएान धारि है । (६६६-२)
अंमृत बचन सुनि स्रवन बिमोहे आली (६६६-३)
ताही मुख बैन सुन सुरत समारि है । (६६६-४)
जापै बेनती बखानि जिहबा थकत भई (६६६-५)
ताही के बुलाइे पुन बेनती उचारि है । (६६६-६)
जैसे मद् पीइे ग=छएान ध=छएान बिसरन होइि (६६६-७)
ताही मद् अचवत चेतन प्रकार है ॥६६६॥ (६६६-८)

सुनि पृय गवन स्रवन बहरे न भइे (६६७-१)
काहे की पतिब्रता पति ब्रत पायो है । (६६७-२)
दृशट पृय अगोचर हुइि अंधरे न भइे नैन (६६७-३)
काहे की प्रेमनी प्रेम हूं लजायो है । (६६७-४)
अवधि बिहाइे, धाइि धाइि बिरहा बिआपै (६६७-५)
काहे की बिरहनी , बिरह बिलखायो है । (६६७-६)
सुनत बिदेस के संदेस नाहि फूटयो रिदा (६६७-७)
कउन कउन गनउ चूक उॅतर न आयो है ॥६६७॥ (६६७-८)

बिरह दावानल प्रगटी न तन बन बिखै (६६८-१)
असन बसन तामै घ्रित परजारि है । (६६८-२)
प्रथम प्रकासे धूम अतिही दुसहा दुख (६६८-३)
ताही ते गगन घन घटा अंधकार है । (६६८-४)
भभक भभूको ह=छधै प्रकाशयो है अकास ससि (६६८-५)
तारका मंडल चिनगारी चमकार है । (६६८-६)
कासिए कहउ कैसे अंतकाल बृथावंत गति (६६८-७)
मोहि दुख सोई सुखदाई संसार है ॥६६८॥ (६६८-८)

इेई अखीआँ जु पेखि प्रथम अनूप रूप (६६९-१)
कामना पूरन करि सहज समानी है । (६६९-२)
इेई अखीआँ जु लीला लालन की इिक टक (६६९-३)
अति असचरज ह=छधै हेरत हिरानी है । (६६९-४)
इेई अखीआँ जु बिछुरत पृय प्रानपति (६६९-५)
बिरह बियोग रोग पीरा कै पिरानी है । (६६९-६)
नासका स्रवन रसना मै अग्रभाग हुर्ता (६६९-७)
इेई अखीआँ सगल अंग मैं बिरानी है ॥६६९॥ (६६९-८)

इिक टक ध=छएान हुते चंद्रमे चकोर गति (६७०-१)
पल न लगत स=छधपनै हूं न दिखाईअै । (६७०-२)
अंमृत बचन धुनि सुनति ही बिद्=छएमान (६७०-३)
ता मुख संदेसो पथकन पै न पाईअै । (६७०-४)
सिहजा समै न उर अंतर समाते हार (६७०-५)
अनिक पहार एट भइे, कैसे जाईअै । (६७०-६)

सहज संजोग भोग रस परताप हुते (६७०-७)
बिरह बियोग सोग रोग बिललाईऐ ॥६७०॥ (६७०-८)

जाकै इेक फन पै धरन है सो धरनीधर (६७१-१)
ताँहि गिरधर कहै कउन बडिआई है । (६७१-२)
जाको इेक बावरो कहावत है बिस=छधनाथ (६७१-३)
ताहि बृजनाथ कहे कौन अधिकाई है । (६७१-४)
सगल अकार एंकार के बिथारे जिन (६७१-५)
ताहि नंद नंद कहै कउन ठकुराई है । (६७१-६)
उसतति जानि, निंदा करत अग=छिआन अंध (६७१-७)
अैसे ही अराधन ते मोन सुखदाई है ॥६७१॥ (६७१-८)

नख सिख लउ सगल अंग रोम रोम करि (६७२-१)
काटि काटि सिखन के चरन पर वारीऐ । (६७२-२)
अगनि जलाइि, फुनि पीसन पीसाइि ताँहि (६७२-३)
लै उडे पवन हुइि अनिक प्रकारीऐ । (६७२-४)
जत कत सिख पग धरै गुर पंथ प्रात (६७२-५)
ताहू ताहू मारग मै भसम कै डारीऐ । (६७२-६)
तिह पद पादक चरन लिव लागी रहै (६७२-७)
दया कै दयाल मोहि पतित उधारीऐ ॥६७२॥ (६७२-८)

पंच बार गंग जाइि बार पंच प्राग नाइि (६७३-१)
तैसा पुन्न इेक गुरसिख कउ नवाइे का । (६७३-२)
सिख कउ पिलाइि पानी भाउ कर कुरखेत (६७३-३)
अस=छधमेध जग फल सिख कउ जिवाइे का । (६७३-४)
जैसे सत मंदर कंचन के उसार दीने (६७३-५)
तैसा पुन्न सिख कउ इिक शबद सिखाइे का । (६७३-६)
जैसे बीस बार दरसन साध कीआ काहू (६७३-७)
तैसा फल सिख कउ चाप पग सुआइे का ॥६७३॥ (६७३-८)

जैसे तउ अनेक रोगी आवत हैं बैद गृहि (६७४-१)
जैसो जैसो रोग तैसो अउखधु खुवावई । (६७४-२)
जैसे राज द=छधार लोग आवत सेवा नमित (६७४-३)
जोई जाहीं जोग तैसी टहिल बतावई । (६७४-४)
जैसे दाता पास जन अरथी अनेक आवैं (६७४-५)
जोई जोई जाचै दे दे दुखन मिटावई । (६७४-६)
तैसे गुर शरन आवत हैं अनेक सिख (६७४-७)
जैसो जैसो भाउ तैसी कामना पुजावई ॥६७४॥ (६७४-८)

राग जात रागी जानै, बैरागै बैरागी जानै (६७५-१)
तिआगहि तिआगी जानै, दीन दइिआ दान है । (६७५-२)

जोग जुगत जोगी जानै, भोगरस भोगी जानै (६७५-३)
रोग दोख रोगी जानै प्रगट बखान है । (६७५-४)
फूल राख माली जानै, पानहि तंबोली जानै (६७५-५)
सकल सुगंधिगति गाँधी जानउ जान है । (६७५-६)
रतनै जउहारी जानै, बिहारै बिउहारी जानै (६७५-७)
आतम प्रीखिआ कोऊ बिबेकी पहिचान है ॥६७५॥ (६७५-८)